दो शब्द

तीन बरस हुए मैंने ये खत अपनी पुत्री इन्दिरा को लिखे थे। वह उस समय मसूरी में हिमालय पर थी और मैं इलाहाबाद में था। वह दस वर्ष की थी और ये खत उसीके लिए लिखे गये थे और किसी और का खयाल नहीं था। लेकिन फिर बाद में बहुत मित्रों ने मुझे राय दी कि मैं इनको छपवाऊँ ताकि और लड़के और लड़कियाँ भी इनको पढ़ें।

पत्र अंग्रेजी भाषा में लिखे गये थे और करीब दो वर्ष हुए अंग्रेजी में छपे भी थे। मुझे आशा थी कि हिन्दी में भी जल्दी निकलें लेकिन और कामों में मैं फँसा रहा और कई कठिनाइयाँ पेश आ गईं इसलिए देर हो गई।

ये खत एकाएक खतम हो जाते हैं। गर्मी का मौसम खतम हुआ और इन्दिरा पहाड़ से उतर आई। फिर ऐसे खत लिखने का मौका मुझे नहीं मिला। उसके बाद के साल वह पहाड़ नहीं गई और दो बरस बाद १९३० में मुझे नैनी की—जो पहाड़ नहीं है—यात्रा करनी पड़ी। नैनी जेल में कुछ और पत्र मैंने इंदिरा को लिखे लेकिन वे भी अधूरे रह गए और मैं छोड़ दिया गया। ये नए खत इस किताब में शामिल नहीं हैं। अगर मुझे बाद में कुछ और लिखने का मौका मिला तब शायद वे भी छापे जावें।

मुझे मालूम नहीं कि लड़के और लड़कियाँ इन खतों को पसन्द करेंगे या नहीं। पर मुझे आशा है कि जो इनको पढ़ेंगे वे इस हमारी दुनिया और उसके रहने वालों को एक बड़ा कुटुम्ब समझेंगे। और जो भिन्न-भिन्न देशों के रहने वालों में वैमनस्य और दुश्मनी है वह उनमें नहीं होगी।

इन अंग्रेजी पत्रों का हिंदी में अनुवाद श्री प्रेमचंद जी ने किया है और मशकूर हूँ।

जवाहरलाल नेहरू

दो शब्द

तीन बरस हुए मैंने ये ख़त अपनी पुत्री इन्दिरा को लिखे थे। वह उस समय मसूरी में हिमालय पर थी और मैं इलाहाबाद में था। वह दस वर्ष की थी और ये ख़त उसीके लिए लिखे गये थे और किसी और का ख़याल नहीं था। लेकिन फिर बाद में बहुत मित्रों ने मुझे राय दी कि मैं इनको छपवाऊँ ताकि और लड़के और लड़कियाँ भी इनको पढ़ें।

पत्र अंग्रेज़ी भाषा में लिखे गये थे और करीब दो वर्ष हुए अंग्रेज़ी में छपे भी थे। मुझे आशा थी कि हिन्दी में भी जल्दी निकलें लेकिन और कामों में मैं फँसा रहा और कई कठिनाइयाँ पेश आ गईं इसलिए देर हो गई।

ये ख़त एकाएक ख़तम हो जाते हैं। गर्मी का मौसम ख़तम हुआ और इन्दिरा पहाड़ से उतर आई। फिर ऐसे ख़त लिखने का मौक़ा मुझे नहीं मिला। उसके बाद के साल वह पहाड़ नहीं गई और दो बरस बाद १९३० में मुझे नैनी की—जो पहाड़ नहीं है—यात्रा करनी पड़ी। नैनी जेल में कुछ और पत्र मैंने इंदिरा को लिखे लेकिन वे भी अधूरे रह गए और मैं छोड़ दिया गया। ये नए ख़त इस किताब में शामिल नहीं हैं। अगर मुझे बाद में कुछ और लिखने का मौक़ा मिला तब शायद वे भी छापे जावें।

मुझे मालूम नहीं कि लड़के और लड़कियाँ इन ख़तों को पसन्द करेंगे या नहीं। पर मुझे आशा है कि जो इनको पढ़ेंगे वे इस हमारी दुनिया और उसके रहने वालों को एक बड़ा कुटुम्ब समझेंगे। और जो भिन्न-भिन्न देशों के रहने वालों में वैमनस्य और दुश्मनी है वह उनमें नहीं होगी।

इन अंग्रेज़ी पत्रों का हिंदी में अनुवाद श्री प्रेमचन्द जी ने किया है और उनका मैं बहुत मशकूर हूँ।

आनन्दभवन,
९ जुलाई, १९३१

जवाहरलाल नेहरू

चित्र-सूची

१—खान से निकला हुआ पौधा जो पत्थर सा हो गया है
२—खान से निकली हुई मछली जो पत्थर सी हो गई है
३—दूसरी खान से निकली हुई मछली
४—सीटियो सॉरस, एक पुराना रेंगनेवाला जानवर
५—इगुआनोडान
६—सीराटो सॉरस
७—मैमथ
८—अन्तिम पत्थर काल के औज़ार
९—अन्तिम पत्थर काल के औज़ार
१०—झील में बने हुए मकान
११—चित्र-लिपि
१२—चीन की बड़ी दीवार
१३—कार्नक के मन्दिर के खण्डहर

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—संसार पुस्तक है	१३
२—शुरू का इतिहास कैसे लिखा गया	१७
३—ज़मीन कैसे बनी	२२
४—जानदार चीज़ें कैसे पैदा हुईं	२५
५—जानवर कब पैदा हुए	३०
६—आदमी कब पैदा हुआ	३४
७—शुरू के आदमी	३९
८—तरह-तरह की कौमें क्यों कर बनीं	४५
९—आदमियों की कौमें और ज़बानें	४९
१०—ज़बानों का आपस में रिश्ता	५४
११—सभ्यता क्या है ?	५८
१२—जातियों का बनना	६१
१३—मज़हब की शुरुआत और काम का बँटवारा	६४
१४—खेती से पैदा हुई तब्दीलियाँ	६८
१५—ख़ानदान का सरग़ना कैसे बना	७१
१६—सरग़ना का इख़्तियार कैसे बढ़ा	७५
१७—सरग़ना राजा हो गया	७८
१८—शुरू का रहन-सहन	८२
१९—पुरानी दुनिया के बड़े-बड़े शहर	८६
२०—मिस्र और क्रीट	८९

: १ :

संसार पुस्तक है

जब तुम मेरे साथ रहती हो तो अक्सर मुझ से बहुत सी बातें पूछा करती हो और मैं उनका जवाब देने की कोशिश करता हूँ। लेकिन अब, जब तुम मसूरी में हो और मैं इलाहाबाद में, हम दोनो उस तरह बातचीत नहीं कर सकते। इसलिए मैंने इरादा किया है कि कभी-कभी तुम्हें इस दुनिया की और उन छोटे बडे देशों की जो इस दुनिया में है छोटी-छोटी कथायें लिखा करूँ। तुमने हिन्दुस्तान और इंग्लैण्ड का कुछ हाल इतिहास में पढ़ा है। लेकिन इंग्लैण्ड केवल एक छोटा सा टापू है और हिन्दुस्तान, जो एक बहुत बड़ा देश है, फिर भी दुनिया का एक छोटा सा हिस्सा है। अगर तुम्हें इस दुनिया का कुछ हाल जानने का शौक है, तो तुम्हें सब देशो का, और उन सब जातियों का जो इसमें बसी हुई है ध्यान रखना पड़ेगा, केवल उस एक छोटे से देश का नहीं जिसमें तुम पैदा हुई हो।

मुझे मालूम है कि इन छोटे-छोटे खतो में मैं बहुत थोड़ी सी बातें ही बतला सकता हूँ। लेकिन मुझे आशा है कि इन थोड़ी सी बातो को भी तुम शौक से पढ़ोगी और समझोगी कि दुनिया एक है और दूसरे लोग जो इसमें आबाद है हमारे भाई-बहन है। जब तुम बडी हो जाओगी तो तुम दुनिया और उसके आदमियो का हाल मोटी-मोटी किताबों में पढ़ोगी। उसमें तुम्हें जितना आनन्द मिलेगा उतना किसी कहानी या उपन्यास में भी न मिला होगा।

में उनके हाल जानना सीख जाओगी। सोचो, कितनी मजे की बात है! एक छोटा सा रोड़ा जिसे तुम सड़क पर या पहाड़ के नीचे पड़ा हुआ देखती हो, शायद संसार की पुस्तक का छोटा सा पृष्ठ हो, शायद उससे तुम्हें कोई नई बात मालूम हो जाय। शर्त यही है कि तुम्हें उसे पढ़ना आता हो। कोई जबान, उर्दू, हिन्दी या अंग्रेजी, सीखने के लिए तुम्हें उसके अक्षर सीखने होते हैं। इसी तरह पहिले तुम्हें प्रकृति के अक्षर पढ़ने पड़ेंगे, तभी तुम उसकी कहानी उसकी पत्थरों और चट्टानों की किताब से पढ़ सकोगी। शायद अब भी तुम उसे थोड़ा-थोड़ा पढ़ना जानती हो। जब तुम कोई छोटा सा गोल चमकीला रोड़ा देखती हो, तो क्या वह तुम्हें कुछ नहीं बतलाता? यह कैसे गोल, चिकना और चमकीला हो गया और उसके खुरदरे किनारे या कोने क्या हुए? अगर तुम किसी बड़ी चट्टान को तोड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर डालो तो हर एक टुकड़ा खुरदरा और नोकीला होगा। यह गोल चिकने रोड़े की तरह बिल्कुल नहीं होता। फिर यह रोड़ा कैसे इतना चमकीला, चिकना और गोल हो गया? अगर तुम्हारी आँखें देखें और कान सुनें तो तुम उसी के मुंह से उसकी कहानी सुन सकती हो। वह तुमसे कहेगा कि एक समय, जिसे शायद बहुत दिन गुजरे हों, वह भी एक चट्टान का टुकड़ा था। ठीक उसी टुकड़े की तरह, उसमें किनारे और कोने थे, जिसे तुम बड़ी चट्टान से तोड़ती हो। शायद वह किसी पहाड़ के दामन में पड़ा रहा। तब पानी आया और उसे बहाकर छोटी घाटी तक ले गया। वहांसे एक पहाड़ी नाले ने ढकेल कर उसे एक छोटे से दरिया में पहुँचा दिया। इस छोटे दरिया से वह बड़े दरिया में पहुँचा। इस बीच में वह दरिया के पेंदे में लुढ़कता रहा, उसके किनारे घिस गए और वह चिकना और चमकदार हो गया। इस तरह वह कंकड़ बना जो तुम्हारे सामने है। किसी वजह से दरिया उसे छोड़ गया और तुम उसे पा गईं। अगर दरिया उसे और आगे ले जाता तो वह छोटा होते-होते अंत में बालू का एक जर्रा हो जाता और समुद्र के

यह तो तुम जानती ही हो कि यह धरती लाखो करोडो बरस की पुरानी है, और बहुत दिनो तक इसमें कोई आदमी न था। आदमियो के पहले सिर्फ जानवर थे, और जानवरो के पहले एक ऐसा समय था जब इस धरती पर कोई जानदार चीज न थी। आज जब यह दुनिया हर तरह के जानवरों और आदमियो से भरी हुई है, उस जमाने का खयाल करना भी मुश्किल है जब यहां कुछ न था। लेकिन विज्ञान जानने वालो और विद्वानो ने, जिन्होंने इस विषय को खूब सोचा और पढा है, लिखा है कि एक समय ऐसा था जब यह धरती बेहद गर्म थी और इस पर कोई जानदार चीज नहीं रह सकती थी। और अगर हम उनकी किताबें पढें और पहाडो और जानवरो की पुरानी हड्डियो को गौर से देखें तो हमें खुद मालूम होगा कि ऐसा समय जरूर रहा होगा।

तुम इतिहास किताबो में ही पढ सकती हो। लेकिन पुराने जमाने में तो आदमी पैदा ही न हुआ था, किताबें कौन लिखता? तब हमें उस जमाने की बातें कैसे मालूम हो? यह तो नहीं हो सकता कि हम बैठे-बैठे हर एक बात सोच निकालें। यह बडे मजे की बात होती, क्योंकि हम जो चीज चाहते सोच लेते, और सुन्दर परियो की कहानियां गढ लेते। लेकिन जो कहानी किसी बात को देखे बिना ही गढ ली जाय वह कैसे ठीक हो सकती है? लेकिन खुशी की बात है कि उस पुराने जमाने की लिखी हुई किताबें न होने पर भी कुछ ऐसी चीजें हैं जिनसे हमें उतनी ही बातें मालूम होती है जितनी किसी किताब से होतीं। ये पहाड, समुद्र, सितारे, नदियां, जंगल, जानवरो की पुरानी हड्डियां और इसी तरह की और भी कितनी ही चीजें वे किताबें है जिनसे हमें दुनिया का पुराना हाल मालूम हो सकता है। मगर हाल जानने का असली तरीका यह नही है कि हम केवल दूसरो की लिखी हुई किताबें पढ लें, बल्कि खुद संसार-रूपी पुस्तक को पढ़ें। मुझे आशा है कि पत्थरो और पहाडो को पढकर तुम थोड़े ही दिनो

में उसके हाल जानना सीख जाओगी। सोचो, कितनी मजे की बात है! एक छोटा सा रोड़ा जिसे तुम सड़क पर या पहाड़ के नीचे पड़ा हुआ देखती हो, शायद संसार की पुस्तक का छोटा सा पृष्ठ हो, शायद उससे तुम्हें कोई नई बात मालूम हो जाय। शर्त यही है कि तुम्हें उसे पढ़ना आता हो। कोई जबान उर्दू, हिन्दी या अंग्रेजी, सीखने के लिए तुम्हें उसके अक्षर सीखने होते हैं। इसी तरह पहिले तुम्हें प्रकृति के अक्षर पढ़ने पड़ेंगे तभी तुम उसकी कहानी उसकी पत्थरों और चट्टानों की किताब से पढ़ सकोगी। शायद अब भी तुम उसे थोड़ा-थोड़ा पढ़ना जानती हो। जब तुम कोई छोटा सा गोल चमकीला रोड़ा देखती हो तो क्या वह तुम्हें कुछ नहीं बतलाता? यह कैसे गोल चिकना और चमकीला हो गया और उसके खुरदरे किनारे या कोने क्या हुए? अगर तुम किसी बड़ी चट्टान को तोड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर डालो तो हर एक टुकड़ा खुरदरा और नोकीला होगा। यह गोल चिकने रोड़े की तरह बिल्कुल नहीं होता। फिर यह रोड़ा कैसे इतना चमकीला, चिकना और गोल हो गया? अगर तुम्हारी आँखें देखें और कान सुनें तो तुम उसी के मुँह से उसकी कहानी सुन सकती हो। वह तुमसे कहेगा कि एक समय, जिसे शायद बहुत दिन गुजरे हों, वह भी एक चट्टान का टुकड़ा था। ठीक उसी टुकड़े की तरह, उसमें किनारे और कोने थे, जिसे तुम बड़ी चट्टान से तोड़ती हो। शायद वह किसी पहाड़ के दामन में पड़ा रहा। तब पानी आया और उसे बहाकर छोटी घाटी तक ले गया। वहाँ से एक पहाड़ी नाले ने ढकेल कर उसे एक छोटे से दरिया में पहुँचा दिया। इस छोटे दरिया से वह बड़े दरिया में पहुँचा। इस बीच में वह दरिया के पेंदे में लुढ़कता रहा, उसके किनारे घिस गए और वह चिकना और चमकदार हो गया। इस तरह वह कंकड़ बना जो तुम्हारे सामने है। किसी वजह से दरिया उसे छोड़ गया और तुम उसे पा गईं। अगर दरिया उसे और आगे ले जाता तो वह छोटा होते-होते अंत में बालू का एक जर्रा हो जाता और समुद्र के

अब तो तुम जानती ही हो कि यह धरती लाखों करोड़ों बरस की पुरानी है और बहुत दिनों तक इसमें कोई आदमी न था। आदमियों के पहले सिर्फ जानवर थे और जानवरों के पहले एक ऐसा समय था जब इस धरती पर कोई जानदार चीज न थी। आज जब यह दुनिया हर तरह के जानवरों और आदमियों से भरी हुई है उस जमाने का खयाल करना भी मुश्किल है जब यहां कुछ न था। लेकिन विज्ञान जानने वालों और विद्वानों ने, जिन्होंने इस विषय को खूब सोचा और पढ़ा है, लिखा है कि एक समय ऐसा था जब यह धरती बेहद गर्म थी और इस पर कोई जानदार चीज नहीं रह सकती थी। और अगर हम उनकी किताबें पढ़ें और पहाड़ों और जानवरों की पुरानी हड्डियों को गौर से देखें तो हमें खुद मालूम होगा कि ऐसा समय जरूर रहा होगा।

तुम इतिहास किताबों में ही पढ़ सकती हो। लेकिन पुराने जमाने में तो आदमी पैदा ही न हुआ था, किताबें कौन लिखता? तब हमें उस जमाने की बातें कैसे मालूम हों? यह तो नहीं हो सकता कि हम बैठे-बैठे हर एक बात सोच निकालें। यह बड़े मजे की बात होती, क्योंकि हम जो चीज चाहते सोच लेते, और सुन्दर परियों की कहानियां गढ़ लेते। लेकिन जो कहानी किसी बात को देखे बिना ही गढ़ ली जाय वह कैसे ठीक हो सकती है? लेकिन खुशी की बात है कि उस पुराने जमाने की लिखी हुई किताबें न होने पर भी कुछ ऐसी चीजें हैं जिनसे हमें उतनी ही बातें मालूम होती हैं जितनी किसी किताब से होतीं। ये पहाड़, समुद्र, सितारे, नदियां, जंगल, जानवरों की पुरानी हड्डियां और इसी तरह की और भी कितनी ही चीजें वे किताबें हैं जिनसे हमें दुनिया का पुराना हाल मालूम हो सकता है। मगर हाल जानने का असली तरीका यह नहीं है कि हम केवल दूसरों की लिखी हुई किताबें पढ़ लें, बल्कि खुद संसार-रूपी पुस्तक को पढ़ें। मुझे आशा है कि पत्थरों और पहाड़ों को पढ़कर तुम थोड़े ही दिनों

: २ :

शुरू का इतिहास कैसे लिखा गया

अपने पहले पत्र में मैंने तुम्हें बताया था कि हमें संसार की किताब से ही दुनिया के शुरू का हाल मालूम हो सकता है। इस किताब में चट्टान, पहाड़, घाटियाँ, नदियाँ समुद्र, ज्वालामुखी और हर एक चीज़, जो हम अपने चारो तरफ देखते हैं, शामिल है। यह किताब हमेशा हमारे सामने खुली रहती है। लेकिन बहुत ही थोड़े आदमी इस पर ध्यान देते: या इसे पढ़ने की कोशिश करते हैं। अगर हम इसे पढ़ना और समझना सीख लें, तो हमें इसमें कितनी ही मनोहर कहानियाँ मिल सकती हैं। इसके पत्थर के पृष्ठों में हम जो कहानियाँ पढ़ेंगे वे परियों की कहानियों से कहीं सुन्दर होंगी।

इस तरह संसार की इस पुस्तक से हमें उन पुराने जमाने का हाल मालूम हो जायगा जब कि हमारी दुनिया में कोई आदमी या जानवर न था। ज्यों-ज्यों हम पढ़ते जायँगे हमें मालूम होगा कि पहिले जानवर कैसे आए और उनकी तादाद कैसे बढ़ती गई। उसके बाद आदमी आए, लेकिन वे उन आदमियों की तरह न थे, जिन्हें हम आज देखते हैं। वे जंगली थे और जान-वरों में और उनमें बहुत कम फर्क था। धीरे-धीरे उन्हें तजरुबा हुआ और उनमें सोचने की ताकत आई। इसी ताकत ने उन्हें जानवरों से अलग कर दिया। यह असली ताकत थी जिसने उन्हें बड़े से बड़े और भयानक से भयानक जानवरों से ज्यादा बलवान बना दिया। तुम देखती हो कि एक

किनारे अपने भाइयो से जा मिलता, जहां एक सुन्दर बालू का किनारा बन जाता जिस पर छोटे-छोटे बच्चे खेलते और बालू के घरोंदे बनाते।

अगर एक छोटा सा रोडा तुम्हें इतनी बातें बता सकता है, तो पहाड़ों और दूसरी चीजो से, जो हमारे चारो तरफ है, हमें और कितनी बातें मालूम हो सकती है!

: २ :

शुरू का इतिहास कैसे लिखा गया

अपने पहले पत्र में मैंने तुम्हें बताया था कि हमें संसार की किताब से ही दुनिया के शुरू का हाल मालूम हो सकता है। इस किताब में चट्टान, पहाड़, घाटियाँ, नदियाँ, समुद्र, ज्वालामुखी और हर एक चीज, जो हम अपने चारों तरफ देखते हैं, शामिल है। यह किताब हमेशा हमारे सामने खुली रहती है। लेकिन बहुत ही थोड़े आदमी इस पर ध्यान देते; या इसे पढ़ने की कोशिश करते हैं। अगर हम इसे पढ़ना और समझना सीख लें, तो हमें इसमें कितनी ही मनोहर कहानियाँ मिल सकती हैं। इसके पत्थर के पृष्ठों में हम जो कहानियाँ पढ़ेंगे वे परियों की कहानियों से कहीं सुन्दर होंगी।

इस तरह संसार की इस पुस्तक से हमें उन पुराने जमाने का हाल मालूम हो जायगा जब कि हमारी दुनिया में कोई आदमी या जानवर न था। ज्यों-ज्यों हम पढ़ते जायँगे हमें मालूम होगा कि पहिले जानवर धीमे आए और उनकी तादाद धीमे बढ़ती गई। उनके बाद आदमी आए, लेकिन वे उन आदमियों की तरह न थे, जिन्हें हम आज देखते हैं। वे जंगली थे और जानवरों में और उनमें बहुत कम फर्क था। धीरे-धीरे उन्हें तजरबा हुआ और उनमें सोचने की ताकत आई। इसी ताकत ने उन्हें जानवरों से अलग कर दिया। यह असली ताकत थी जिसने उन्हें बड़े से बड़े और भयानक से भयानक जानवरों से ज्यादा बलवान बना दिया। तुम देखती हो कि एक

खान से निकला हुआ पौधा जो पत्थर सा हो गया है

छोटा सा आदमी एक बड़े हाथी के सिर पर बैठकर उससे जो चाहता है करा लेता है। हाथी बड़े डील डौल का जानवर है, और उस महावत से कहीं ज्यादा बलवान है, जो उसकी गर्दन पर सवार है। लेकिन महावत में सोचने की ताकत है और इसीकी बदौलत वह मालिक है और हाथी उसका नौकर। ज्यों-ज्यों आदमी में सोचने की ताकत बढ़ती गई, उसकी सूझ भी बढ़ती गई। उसने बहुत सी बातें सोच निकालीं। आग जलाना, जमीन जोत कर खाने की चीजें पैदा करना, कपड़ा बनाना और पहिनना, और रहने के लिए घर बनाना, ये सभी बातें उसे मालूम हो गईं। बहुत से आदमी मिलकर एक साथ रहते थे और इस तरह पहिले शहर बने। शहर बनने के पहिले लोग जगह-जगह घूमते फिरते थे और शायद किसी तरह के खेमों में रहते होंगे। तबतक उन्हें जमीन से खाने की चीजें पैदा करने का तरीका नहीं मालूम था। न उनके पास चावल थे, न गेहूँ जिससे रोटियां बनती हैं। न तो तरकारियाँ थीं और न दूसरी चीजें जो हम आज खाते हैं। शायद कुछ फल और बीज उन्हें खाने को मिल जाते हों मगर ज्यादातर वे जानवरों को मारकर उनका मांस खाते थे।

ज्यों-ज्यों शहर बनते गए लोग तरह-तरह की सुन्दर कलायें सीखते गए। उन्होंने लिखना भी सीखा। लेकिन बहुत दिनों तक लिखने को कागज न था, और लोग भोजपत्र या ताड़ के पत्तों पर लिखते थे। आज भी बाज पुस्तकालयों में तुम्हें समूची किताबें मिलेंगी जो उसी पुराने जमाने में भोज-पत्र पर लिखी गई थीं। तब कागज बना और लिखने में आसानी हो गई। लेकिन छापेखाने न थे और आजकल की भाँति किताबें हजारों की तादाद में न छप सकती थीं। कोई किताब जब लिख ली जाती थी तो बड़ी मिहनत के साथ हाथ से उसकी नकल की जाती थी। ऐसी दशा में किताबें बहुत न थीं। तुम किसी किताब बेचनेवाले की दूकान पर जा कर चटपट किताब न खरीद सकतीं। तुम्हें किसीसे उसकी नकल करानी पड़ती और उसमें

बहुत समय लगता। लेकिन उन दिनो लोगो के अक्षर बहुत सुन्दर होते थे और आज भी पुस्तकालयो में ऐसी किताबें मौजूद हैं जो हाथ से बहुत सुन्दर अक्षरो में लिखी गई थीं। हिन्दुस्तान में खास कर संस्कृत, फारसी और उर्दू की किताबें मिलती हैं। अक्सर नकल करने वाले पन्नो के किनारो पर सुन्दर बेलबूटे बना दिया करते थे।

शहरो के बाद धीरे-धीरे देशो और जातियो की बुनियाद पड़ी। जो लोग एक मुल्क में पास पास रहते थे उनका एक दूसरे से मेल-जोल हो जाना स्वाभाविक था। वे समझने लगे कि हम दूसरे मुल्क वालो से बढ-चढ कर हैं और बेवकूफी से उनसे लडने लगे। उनको समझ में यह बात न आई, और आज भी लोगो की समझ में नही आरही है कि लडने और एक दूसरे की जान लेने से बढकर बेवकूफी की बात और कोई नही हो सकती। इससे किसी को फायदा नहीं होता।

जिस जमाने में शहर और मुल्क बने उसकी कहानी जानने के लिए पुरानी किताबें कभी-कभी मिल जाती हैं। लेकिन ऐसी किताबें बहुत नही हैं। हाँ, दूसरी चीजो से हमें मदद मिलती है। पुराने जमाने के राजे-महाराजे अपने समय का हाल पत्थर के टुकडो और खंभो पर लिखवा दिया करते थे। किताबें बहुत दिन नही चल सकतीं। उनका कागज बिगड जाता है और उसे कीड़े खा जाते हैं। लेकिन पत्थर बहुत दिन चलता है। शायद तुम्हें याद होगा कि तुमने इलाहाबाद के किले में अशोक की बडी लाट देखी है। कई सौ साल हुए अशोक हिन्दुस्तान का एक बड़ा राजा था। उसने उस खंभे पर अपना एक आदेश खुदवा दिया है। अगर तुम लखनऊ के अजायबघर में जाओ, तो तुम्हें बहुत से पत्थर के टुकडे मिलेंगे जिन पर
、खुदे हैं।

ससार के देशो का इतिहास पढने लगोगी तो तुम्हें उन बडे-बडे कामो हाल मालूम होगा जो चीन और मिसवालो ने किये थे। उस समय

यूरप के देशों में जंगली जातियाँ बसती थीं। तुम्हें हिन्दुस्तान के उस शान-दार ज़माने का हाल भी मालूम होगा जब रामायण और महाभारत लिखे गए और हिन्दुस्तान बलवान और धनवान देश था। आज हमारा मुल्क बहुत ग़रीब है और एक विदेशी जाति हमारे ऊपर राज कर रही है। हम अपने ही मुल्क में आज़ाद नहीं है और जो कुछ करना चाहें नहीं कर सकते। लेकिन यह हाल हमेशा नहीं था और अगर हम पूरी कोशिश करें तो शायद हमारा देश फिर आज़ाद हो जाय, जिससे हम ग़रीबों की दशा सुधार सकें और हिन्दुस्तान में रहना उतना ही आरामदेह हो जाय, जितना कि आज यूरप के कुछ देशों में है।

मैं अपने अगले ख़त में संसार की मनोहर कहानी शुरू से लिखना आरम्भ करूँगा।

: ३ :

जमीन कैसे बनी

तुम जानती हो कि जमीन सूरज के चारो तरफ घूमती है और चांद जमीन के चारो तरफ घूमता है। शायद तुम्हें यह भी याद है कि ऐसे और भी कई गोले है जो जमीन की तरह सूरज का चक्कर लगाते हैं। ये सब, हमारी जमीन को मिला कर, सूरज के ग्रह कहलाते है। चांद जमीन का उपग्रह कहलाता है, इसलिए कि वह जमीन के ही आसपास रहता है। दूसरे ग्रहो के भी अपने-अपने उपग्रह हैं। सूरज, उसके ग्रह और ग्रहो के उपग्रह मिलकर मानो एक सुखी परिवार बन जाता है। इस परिवार को सौर जगत कहते हैं। सौर का अर्थ है सूरज का। सूरज इन सब ग्रहो और उपग्रहो का बाबा है। इसीलिए इस परिवार को सौर जगत कहते है।

रात को तुम आसमान में हजारो सितारे देखती हो। इनमें से थोडे से ही ग्रह है और बाकी सितारे है। क्या तुम बता सकती हो कि ग्रह और तारे में क्या फर्क है? ग्रह हमारी जमीन की तरह सितारो से बहुत छोटे होते है लेकिन आसमान में ये बडे नजर आते हैं, क्योंकि जमीन से उनका फासला कम है। ठीक ऐसा ही समझो जैसे चांद, जो बिलकुल बच्चे की तरह हैं, हमारे नजदीक होने की वजह से इतना बडा मालूम होता है। लेकिन सितारो और ग्रहो के पहिचानने का असली तरीका यह है कि वे जगमगाते है या नहीं। सितारे जगमगाते है, ग्रह नही जगमगाते। इसका सबब यह है कि ग्रह सूर्य की रोशनी से चमकते हैं। चांद और ग्रहो में जो चमक हम

देखते हैं वह धूप की है। असली सितारे बिलकुल सूरज की तरह हैं; वे बहुत गर्म जलते हुए गोले हैं जो आप ही आप चमकते हैं। दरअसल सूरज खुद एक सितारा है। हमें वह बड़ा आग का गोला सा मालूम होता है, इसलिए कि ज़मीन से उसकी दूरी और सितारों से कम है।

इससे अब तुम्हें मालूम हो गया कि हमारी ज़मीन भी सूरज के परि-वार में—और जगत में—है। हम समझते हैं कि ज़मीन बहुत बड़ी है और हमारे जैसी छोटी सी चीज़ को देखते हुए वह है भी बहुत बड़ी। अगर किसी तेज़ गाड़ी या जहाज़ पर बैठो तो इसके एक हिस्से से दूसरे हिस्से तक जाने में हफ़्तों और महीनों लग जाते हैं। लेकिन हमें चाहे वह कितनी ही बड़ी दिखाई दे असल में वह धूल के एक कण की तरह हवा में लटकी हुई है। सूरज ज़मीन से करोड़ों मील दूर है और दूसरे सितारे इससे भी ज़्यादा दूर हैं।

ज्योतिषी या वे लोग जो कि सितारों के बारे में बहुत सी बातें जानते हैं हमें बतलाते हैं कि बहुत दिन पहिले हमारी ज़मीन और सारे ग्रह सूर्य ही में मिले हुए थे। आजकल की तरह उस समय भी सूरज जलती हुई धातु का निहायत गर्म गोला था। किसी वजह से सूरज के छोटे-छोटे टुकड़े उससे टूट कर हवा में निकल पड़े। लेकिन वे अपने पिता सूर्य से बिलकुल अलग न हो सके। वे इस तरह सूर्य के गिर्द चक्कर लगाने लगे जैसे उनको किसीने रस्सी से बांध रक्खा हो। यह विचित्र शक्ति जिसकी मैंने रस्सी से मिसाल दी है एक ऐसी ताक़त है जो छोटी चीज़ों को बड़ी चीज़ों की तरफ़ खींचती है। यह वही ताक़त है जो वज़नदार चीज़ों को ज़मीन पर गिरा देती है। हमारे पास ज़मीन ही सबसे भारी चीज़ है इसीसे वह हर एक चीज़ को अपनी तरफ़ खींच लेती है।

इस तरह हमारी ज़मीन भी सूरज से निकल भागी थी। उस ज़माने में यह बहुत गर्म रही होगी. इसके चारों तरफ़ की हवा भी बहुत ही गर्म रही

: ३ :

जमीन कैसे बनी

तुम जानती हो कि जमीन सूरज के चारो तरफ घूमती है और चाँद जमीन के चारो तरफ घूमता है। शायद तुम्हें यह भी याद है कि ऐसे और भी कई गोले है जो जमीन की तरह सूरज का चक्कर लगाते है। ये सब, हमारी जमीन को मिला कर, सूरज के ग्रह कहलाते है। चाँद जमीन का उपग्रह कहलाता है; इसलिए कि वह जमीन के ही आसपास रहता है। दूसरे ग्रहो के भी अपने-अपने उपग्रह है। सूरज, उसके ग्रह और ग्रहो के उपग्रह मिलकर मानो एक सुखी परिवार बन जाता है। इस परिवार को सौर जगत कहते है। सौर का अर्थ है सूरज का। सूरज इन सब ग्रहो और उपग्रहो का बाबा है। इसीलिए इस परिवार को सौर जगत कहते है।

रात को तुम आसमान में हजारो सितारे देखती हो। इनमें से थोडे से ही ग्रह है और बाकी सितारे है। क्या तुम बता सकती हो कि ग्रह और तारे में क्या फर्क है? ग्रह हमारी जमीन की तरह सितारो से बहुत छोटे होते है लेकिन आसमान में वे बड़े नजर आते है, क्योकि जमीन से उनका फासला कम है। ठीक ऐसा ही समझो जैसे चांद, जो बिलकुल बच्चे की तरह है, हमारे नजदीक होने की वजह से इतना बड़ा मालूम होता है। लेकिन सितारों और ग्रहो के पहिचानने का असली तरीका यह है कि वे जगमगाते है या नहीं। सितारे जगमगाते है, ग्रह नहीं जगमगाते। इसका सबब यह है कि ग्रह सूर्य की रोशनी से चमकते है। चांद और ग्रहो में जो चमक हम

देखते हैं वह धूप की है। असली सितारे बिल्कुल सूरज की तरह हैं; वे बहुत गर्म जलते हुए गोले हैं जो आप ही आप चमकते हैं। दरअसल सूरज खुद एक सितारा है। हमें यह बड़ा आग का गोला सा मालूम होता है, इसलिए कि जमीन से उसकी दूरी और सितारों से कम है।

इससे अब तुम्हें मालूम हो गया कि हमारी जमीन भी सूरज के परिवार में—और जगत में—है। हम समझते हैं कि जमीन बहुत बड़ी है और हमारे जैसी छोटी सी चीज को देखते हुए वह है भी बहुत बड़ी। अगर किसी तेज गाड़ी या जहाज पर बैठो तो इसके एक हिस्से से दूसरे हिस्से तक जाने में हफ्तों और महीनों लग जाते हैं। लेकिन हमें चाहे यह कितनी ही बड़ी दिखाई दे असल में यह धूल के एक कण की तरह हवा में लटकी हुई है। सूरज जमीन से करोड़ों मील दूर है और दूसरे सितारे इससे भी ज्यादा दूर हैं।

ज्योतिषी या वे लोग जो कि सितारों के बारे में बहुत सी बातें जानते हैं हमें बतलाते हैं कि बहुत दिन पहिले हमारी जमीन और सारे ग्रह सूर्य ही में मिले हुए थे। आजकल की तरह उस समय भी सूरज जलती हुई धातु का निहायत गर्म गोला था। किसी वजह से सूरज के छोटे-छोटे टुकड़े उससे टूट कर हवा में निकल पड़े। लेकिन वे अपने पिता सूर्य से बिल्कुल अलग न हो सके। वे इस तरह सूर्य के गिर्द चक्कर लगाने लगे, जैसे उनको किसीने रस्सी से बांध रक्खा हो। यह विचित्र शक्ति जिसकी मैंने रस्सी से मिसाल दी है एक ऐसी ताकत है जो छोटी चीजों को बड़ी चीजों की तरफ खींचती है। यह वही ताकत है, जो वजनदार चीजों को जमीन पर गिरा देती है। हमारे पास जमीन ही सबसे भारी चीज है, इसीसे वह हर एक चीज को अपनी तरफ खींच लेती है।

इस तरह हमारी जमीन भी सूरज से निकल भागी थी। उस जमाने में यह बहुत गर्म रही होगी; इसके चारों तरफ की हवा भी बहुत ही गर्म रही

होगी लेकिन सूरज से बहुत ही छोटी होने के कारण वह जल्द ठंडी होने लगी। सूरज की गर्मी भी दिन-दिन कम होती जा रही है लेकिन उसे बिलकुल ठंडे हो जाने में लाखों बरस लगेंगे। जमीन के ठंडे होने में बहुत थोड़े दिन लगे। जब यह गर्म थी तब इस पर कोई जानदार चीज जैसे आदमी, जानवर, पौधा या पेड़ न रह सकते थे। सब चीजें जल जाती थीं।

जैसे सूरज का एक टुकड़ा टूटकर जमीन हो गया इसी तरह जमीन का एक टुकड़ा टूटकर निकल भागा और चांद हो गया। बहुत से लोगों का ख़याल है कि चांद के निकलने से जो गड्ढा हो गया वह अमरीका और जापान के बीच का प्रशांत-सागर है। मगर जमीन को ठंडे होने में भी बहुत दिन लग गए। धीरे-धीरे जमीन की ऊपरी तह तो ज्यादा ठंडी हो गई लेकिन उसका भीतरी हिस्सा गर्म बना रहा। अब भी अगर तुम किसी कोयले की खान में घुसो, तो ज्यों-ज्यों तुम नीचे उतरोगी गर्मी बढ़ती जायगी। शायद अगर तुम बहुत दूर नीचे चली जाओ तो तुम्हें जमीन अंगारे की तरह मिलेगी। चांद भी ठंडा होने लगा। वह जमीन से भी ज्यादा छोटा था इसलिए उसे ठंडे होने में जमीन से भी कम दिन लगे। तुम्हें उसकी ठंडक कितनी प्यारी मालूम होती है। उसे ठंडा चांद ही कहते हैं। शायद वह बर्फ के पहाड़ों और बर्फ से ढके हुए मैदानों से भरा हुआ है।

जब जमीन ठंडी हो गई तो हवा में जितनी भाफ थी वह जमकर पानी बन गई और शायद मेंह बनकर बरस पड़ी। उस जमाने में बहुत ही ज्यादा पानी बरसा होगा। यह सब पानी जमीन के बड़े-बड़े गड्ढों में भर गया और इस तरह बड़े-बड़े समुद्र और सागर बन गए।

ज्यों-ज्यों जमीन ठंडी होती गई और समुद्र भी ठंडे होते गए त्यों-त्यों दोनों जानदार चीजों के रहने लायक होते गए।

दूसरे ख़त में मैं तुम्हें जानदार चीजों के पैदा होने का हाल लिखूंगा।

: ४ :

जानदार चीजें कैसे पैदा हुईं

पिछले खत में मैं तुम्हें बतला चुका हूं कि बहुत दिनों तक जमीन इतनी गर्म थी कि कोई जानदार चीज उस पर रह ही न सकती थी। तुम पूछोगी कि जमीन पर जानदार चीजों का आना कब शुरू हुआ और पहिले कौन-कौन सी चीजें आईं। यह बड़े मजे का सवाल है, पर इसका जवाब देना भी आसान नहीं है। पहिले यह देखो कि जान है क्या चीज। शायद तुम कहोगी कि आदमी और जानवर जानदार हैं। लेकिन दरख्तों और झाड़ियों, फूलों और तरकारियों को क्या कहोगी? यह मानना पड़ेगा कि वे सब भी जानदार हैं। वे पैदा होते हैं, पानी पीते हैं, हवा में सांस लेते हैं और मर जाते हैं। दरख्त और जानवर में खास फ़र्क यह है कि जानवर चलता-फिरता है, और दरख्त हिल नहीं सकते। तुमको याद होगा कि मैंने लंदन के क्यू गार्डन में तुम्हें कुछ पौधे दिखाए थे। ये पौधे, जिन्हें आर्चिड और पिचर[1] कहते हैं, सचमुच मक्खियां खा जाते हैं। इसी तरह कुछ जानवर भी ऐसे हैं, जो समुद्र के नीचे रहते हैं और चल फिर नहीं सकते। स्पंज ऐसा ही जानवर है। कभी-कभी तो किसी चीज को देखकर यह बतलाना मुश्किल हो जाता है कि वह पौधा है या जानवर। जब तुम वनस्पति-

---

[1] आर्चिड और पिचर एक प्रकार के पौधे हैं जो मक्खियों और कीड़ों को खा जाते हैं।

शास्त्र (जडी-बूटी की विद्या) या जीव-शास्त्र (जिसमें जीव-जतुओ का हाल लिखा होता है) पढ़ोगी तो तुम इन अजीब चीजो को देखोगी जो न जानवर है न पौधे। कुछ लोगो का ख़याल है कि पत्थरो और चट्टानो में भी एक किस्म की जान है और उन्हें भी एक तरह का दर्द होता है; मगर हमको इसका पता नहीं चलता। शायद तुम्हें उन महाशय की याद होगी जो हमसे जिनेवा में मिलने आए थे। उनका नाम है सर जगदीश बोस। उन्होने परीक्षा करके साबित किया है कि पौधो में बहुत-कुछ जान होती है। इनका ख़याल है कि पत्थरो में भी कुछ जान होती है।

इससे तुम्हें मालूम होगया होगा कि किसी चीज़ को जानदार या बेजान कहना कितना मुश्किल है। लेकिन इस वक़्त हम पत्थरो को छोड देते है, सिर्फ जानवरो और पौधो पर ही विचार करते हैं। आज संसार में हजारो जानदार चीजें है। वे सभी किस्म की है। मर्द है और औरते है। और इनमें से कुछ लोग होशियार हैं और कुछ लोग बेवकूफ है। जानवर भी बहुत तरह के है और उनमें भी हाथी, बन्दर या चींटी की तरह समझदार जानवर है और बहुत से जानवर बिलकुल बेसमझ भी है। मछलियां और समुद्र की और बहुत सी चीजें जानदारो में और भी नीचे दरजे की है। उनसे भी नीचा दरजा स्पंजो और मुरब्बे की शक्ल की मछलियो का है जो आधा पौधा और आधा जानवर है।

अब हमको इस बात का पता लगाना है कि ये भिन्न-भिन्न प्रकार के जानवर एक साथ और एक वक़्त पैदा हुए या एक-एक करके धीरे-धीरे। हमें यह कैसे मालूम हो? उस पुराने ज़माने की लिखी हुई तो कोई किताब है नहीं। लेकिन क्या ससार की पुस्तक से हमारा काम चल सकता है? हाँ, चल सकता है। पुरानी चट्टानो में जानवरो की हड्डियां मिलती है, इन्हें अंग्रेज़ी में फौसिल या पथराई हुई हड्डी कहते है। इन हड्डियो से इस बात पना चलता है कि उस चट्टान के बनने के बहुत पहिले वह जानवर जरूर

रहा होगा जिसकी हड्डियां मिली हैं। तुमने इस तरह की बहुत सी छोटी और बड़ी हड्डियां लंदन के साउथ कैंसिंगटन के अजायबघर में देखी थीं।

जब कोई जानवर मर जाता है तो उसका नर्म और मांस वाला भाग तो फौरन ही सड़ जाता है, लेकिन उसकी हड्डियां बहुत दिनों तक बनी रहती हैं। यही हड्डियां उन पुराने ज़माने के जानवरों का कुछ हाल हमें बताती हैं। लेकिन अगर कोई जानवर बिना हड्डी का ही हो, जैसे मुरब्बे की शक्ल वाली मछलियां होती हैं, तो उसके मर जाने पर कुछ भी बाकी न रहेगा।

जब हम चट्टानों को ग़ौर से देखते हैं और बहुत सी पुरानी हड्डियों को जमा कर लेते हैं तो हमें मालूम हो जाता है कि भिन्न-भिन्न समय में भिन्न-भिन्न प्रकार के जानवर रहते थे। सब के सब एक बारगी कहीं से कूदकर नहीं आ गए। सबसे पहिले छिल्केदार जानवर पैदा हुए जैसे घोंघे। समुद्र के किनारे तुम जो सुन्दर घोंघे बटोरती हो वे उन जानवरों के कड़े छिल्के हैं जो मर चुके हैं। उसके बाद ज़्यादा ऊंचे दरजे के जानवर पैदा हुए, जिनमें सांप और हाथी जैसे बड़े जानवर थे, और वह चिड़ियां और जानवर भी, जो आज तक मौजूद हैं। सबके पीछे आदमियों की हड्डियां मिलती हैं। इससे यह पता चलता है कि जानवरों के पैदा होने में भी एक क्रम था। पहिले नीचे दरजे के जानवर आए, तब ज़्यादा ऊंचे दरजे के जानवर पैदा हुए और ज्यों ज्यों दिन गुज़रते गए वे और भी बारीक होते गए और आख़िर में सबसे ऊंचे दरजे का जानवर यानी आदमी पैदा हुआ। सीधे सादे स्पंज और घोंघे में कैसे इतनी तब्दीलियां हुईं और कैसे वे इतने ऊंचे दरजे पर पहुंच गए, यह बड़ी मज़ेदार कहानी है और किसी दिन मैं उसका हाल बताऊंगा। इस वक्त तो हम सिर्फ़ उन जानदारों का ज़िक्र कर रहे हैं जो पहिले पैदा हुए।

ज़मीन के ठंडे हो जाने के बाद शायद पहिली जानदार चीज़ कुछ नर्म मुरब्बे की सी चीज़ थी जिस पर न कोई खोल था न कोई हड्डी थी। वह

समुद्र में रहती थी। हमारे पास उनकी हड्डियाँ नहीं हैं क्योंकि उनके हड्डियाँ थी ही नहीं, इसलिए हमें कुछ न कुछ अटकल से काम लेना पड़ता है। आज भी समुद्र में बहुत सी मुरब्बे की सी चीजें हैं। ये गोल होती हैं लेकिन उनकी सूरत बराबर बदलती रहती है क्योंकि न उनमें कोई हड्डी है न खोल। उनकी सूरत कुछ इस तरह की होती है

तुम देखती हो कि बीच में एक दाग है। इसे बीज कहते हैं और यह एक तरह से उसका दिल है। यह जानवर, या इन्हें जो चाहे कहो, एक अजीब तरीके से कटकर एक के दो हो जाते हैं। पहिले वे एक जगह पतले होने लगते हैं और इसी तरह पतले होते चले जाते हैं, यहाँ तक कि टूटकर दो मुरब्बे की सी चीजें बन जाते हैं और दोनो ही की शक्ल असली लोथडे की सी होती है।

बीज या दिल के भी दो टुकडे हो जाते हैं और दोनो लोथडो के हिस्से में इसका एक-एक टुकडा आजाता है। इस तरह ये जानवर टूटते और बढते चले जाते हैं।

इसी तरह की कोई चीज सबसे पहिले हमारे ससार में आई होगी। जानदार चीजो का कितना सीधा सादा और तुच्छ रूप था! सारी दुनिया में इससे अच्छी या ऊँचे दरजे की चीज उस वक्त न थी। असली जानवर पैदा न हुए थे और आदमी के पैदा होने में लाखो बरस की देर थी।

इन लोथड़ों के बाद समुद्र की घास और घोंघे, केकड़े और कीड़े पैदा हुए। तब मछलियाँ आईं। इनके बारे में हमें बहुत सी बातें मालूम होती हैं क्योंकि उन पर कड़े खोल या हड्डियाँ थीं और इन्हें वे हमारे लिए छोड़ गई हैं ताकि उनके मरने के बहुत दिनों के बाद हम उन पर गौर कर सकें। यह घोंघे समुद्र के किनारे जमीन पर पड़े रह गए। इन पर बालू और तरी मिट्टी जमती गई और ये बहुत हिफाजत से पड़े रहे। नीचे की मिट्टी, ऊपर की बालू और मिट्टी के बोझ और दबाव से कड़ी होती गई। यहाँ तक कि वह पत्थर जैसी हो गई। इस तरह समुद्र के नीचे चट्टानें बन गईं। किसी भूचाल के आ जाने से या और किसी सबब से ये चट्टानें समुद्र के नीचे से निकल आईं और सूखी जमीन बन गईं। तब इन सूखी चट्टानों को नदियाँ और मेंह बहा ले गए। और जो हड्डियाँ उनमें लाखों बरसों से छिपी थीं बाहर निकल आईं। इस तरह हमें ये घोंघे या हड्डियाँ मिल गईं जिनसे हमें मालूम हुआ कि हमारी जमीन आदमी के पैदा होने के पहिले कैसी थी।

दूसरी चिट्ठी में हम इस बात पर विचार करेंगे कि ये नीचे दरजे के जानवर कैसे बदलते-बदलते आजकल की सी सूरत के हो गए।

: ५ :

जानवर कब पैदा हुए

हम बतला चुके हैं कि शुरू में छोटे-छोटे समुद्री जानवर और पानी में होने वाले पौधे दुनिया की जानदार चीजों में थे। वे सिर्फ पानी में ही रह सकते थे और अगर किसी वजह से बाहर निकल आते और उन्हें पानी न मिलता तो जरूर मर जाते होंगे। जैसे आज भी मछलियाँ सूखे में आने से मर जाती हैं। लेकिन उस जमाने में आजकल से कहीं ज्यादा समुद्र और दलदल रहे होंगे। वे मछलियाँ और दूसरे पानी के जानवर जिनकी खाल जरा चिमड़ी थी, सूखी जमीन पर दूसरों से कुछ ज्यादा देर तक जी सकते होंगे। क्योंकि उन्हें सूखने में देर लगती थी। इसलिए नर्म मछलियाँ और उन्हींकी तरह के दूसरे जानवर धीरे-धीरे कम होते गए क्योंकि सूखी जमीन पर जिन्दा रहना उनके लिए मुश्किल था और जिनकी खाल ज्यादा सख्त थी वे बढते गए। सोचो कितनी अजीब बात है! इसका यह मतलब है कि जानवर धीरे-धीरे अपने को आसपास की चीजो के अनुकूल बना लेते हैं। तुमने लन्दन के अजायबघर में देखा था कि देशों में जहाँ कसरत से बर्फ गिरती है चिड़ियाँ और . . सुफेद हो जाते हैं। गरम देशो में जहाँ हरियाली और ८९ होती है वे हरे या किसी दूसरे चमकदार रग के हो जाते मतलब हैं कि वे अपने को उसी तरह का बना लेते हैं जैसी की चीजें हो। उनका रग इसलिए बदल जाता है कि

दुश्मनो से बचा सकें, क्योंकि अगर उनका रंग आसपास की चीजो से मिल जाय तो वे आसानी से दिखाई न देंगे। सर्द मुल्को में उनकी खाल पर बाल निकल आते हैं जिससे वे गर्म रह सकें। इसीलिए चीते का रंग पीला और धारीदार होता है, उस धूप की तरह जो दरख्तो से हो कर जंगल में आती है। वह घने जंगल में मुश्किल से दिखाई देता है।

इस अजीब बात का जानना बहुत जरूरी है कि जानवर अपने रंग ढंग को आसपास की चीजो से मिला देते हैं। यह बात नहीं है कि जानवर अपने को बदलने की कोशिश करते हो; लेकिन जो अपने को बदल कर आस-पास की चीजो से मिला देते हैं उनका जिन्दा रहना ज्यादा आसान हो जाता है। उनकी तादाद बढने लगती है, दूसरो की नहीं बढती। इससे बहुत सी बातें समझ में आ जाती हैं। इनसे यह मालूम हो जाता है कि नीचे दरजे के जानवर धीरे-धीरे ऊँचे दरजो में पहुँचते हैं और मुमकिन है कि लाखो बरसो के बाद आदमी हो जाते हैं। हम ये तब्दीलियाँ, जो हमारे चारो तरफ होती रहती हैं, देख नहीं सकते, क्योंकि वे बहुत धीरे-धीरे होती हैं और हमारी जिन्दगी कम होती है। लेकिन प्रकृति अपना काम करती रहती है और चीजो को बदलती और सुधारती रहती है। वह न तो कभी रुकती है और न आराम करती है।

तुम्हें याद है कि दुनिया धीरे-धीरे ठंडी हो रही थी और इसका पानी सूखता जाता था। जब वह ज्यादा ठंडी हो गई तो जलवायु बदल गया और उसके साथ ही और भी बहुत सी बातें बदल गईं। ज्यों-ज्यों दुनिया बदलती गई जानवर भी बदलते गए और नए-नए किस्म के जानवर पैदा होते गए। पहिले नीचे दरजे के दरियाई जानवर पैदा हुए, फिर ज्यादा ऊँचे दरजे के। इसके बाद जब सूखी जमीन ज्यादा हो गई तो ऐसे जानवर पैदा हुए जो पानी और जमीन दोनो ही पर रह सकते हैं जैसे, मगर या मेंढक। इसके बाद वे जानवर पैदा हुए जो सिर्फ जमीन पर रह सकते हैं और तब हवा में

[illegible]।

[illegible] है। [illegible]
[illegible] मालूम होता है। [illegible] है कि [illegible]
[illegible] बड़े-बड़े [illegible]
[illegible] होता है, लेकिन बाद को [illegible] जाता है और
दूसरे [illegible] के जानवरों [illegible]। उस पुराने जमाने
में जब [illegible] पैदा हुए [illegible]। जमीन [illegible]
[illegible] रही होगी, [illegible] होगा। आगे चलकर ये चट्टान और
मिट्टी के बोझ से ऐसे दब गए कि वह धीरे-धीरे कोयला बन गए। तुम्हें
मालूम है कोयला गहरी खानों में निकलता है, ये खाने जंगल में पुराने
जमाने के जंगल हैं।

शुरू-शुरू में जमीन के जानवरों में बड़े-बड़े साँप, छिपकलियाँ और घड़ियाल थे। इनमें से बाज १०० फीट लम्बे थे। १०० फीट लम्बे साँप या छिपकली का जरा ध्यान तो करो! तुम्हें याद होगा कि तुमने इन जानवरों की हड्डियाँ लंदन के अजायबघर में देखी थी।

इसके बाद वे जानवर पैदा हुए जो कुछ-कुछ हाल के जानवरों से मिलते थे। ये अपने बच्चों को दूध पिलाते थे। पहिले ये भी आजकल के जानवरों से बहुत बड़े होते थे। जो जानवर आदमी से बहुत मिलता-जुलता है वह बन्दर या बनमानुस है। इससे लोग खयाल करते हैं कि आदमी बनमानुस की नस्ल है। इसका यह मतलब है कि जैसे और जानवरों ने अपने को आसपास की चीजों के अनुकूल बना लिया और तरक्की करते गए इसी तरह आदमी भी पहिले एक ऊँचे किस्म का बनमानुस था। यह सच है कि यह तरक्की करता गया या यों कहो कि प्रकृति उसे सुधारती रही। पर आज उसके घमंड का ठिकाना नहीं। वह खयाल करता है कि और जानवरों से उसका मुकाबिला ही क्या। लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि हम बन्दरों

और बनमानुसों के भाईबंद हैं और आज भी शायद हममें से बहुतेरों का स्वभाव बन्दरों ही जैसा है।

: ६ :

आदमी कब पैदा हुआ

मैंने तुम्हें पिछले खत में बतलाया था कि पहिले दुनिया में बहुत नीचे दरजे के जानवर पैदा हुए और धीरे-धीरे तरक्की करते हुए लाखों बरस में उस सूरत में आए जो हम आज देखते हैं। हमें एक बड़ी दिलचस्प और जरूरी बात यह भी मालूम हुई कि जानदार हमेशा अपने को आसपास की चीज़ों से मिलाने की कोशिश करते गए। इस कोशिश में उनमें नयी-नयी आदतें पैदा होती गईं और वे ज्यादा ऊँचे दरजे के जानवर होते गए। हमें यह तब्दीली या तरक्की कई तरह दिखाई देती है। इसकी मिसाल यह है कि शुरू-शुरू के जानवरों में हड्डियां न थीं लेकिन हड्डियों के बग़ैर वे बहुत दिनों तक जीते न रह सकते थे इसलिए उनमें हड्डियां पैदा हो गईं। सबसे पहिले रीढ की हड्डी पैदा हुई। इस तरह दो किस्म के जानवर हो गए—हड्डीवाले और बेहड्डीवाले। जिन आदमियों या जानवरों को तुम देखती हो वे सब हड्डीवाले हैं।

एक और मिसाल लो। नीचे दरजे के जानवरों में मछलियाँ अंडे दे कर उन्हें छोड़ देती हैं। वे एक साथ हजारों अडे देती हैं लेकिन उनकी बिलकुल परवाह नहीं करतीं। माँ बच्चों की बिलकुल खबर नहीं लेती। वह अंडों को छोड देती है और उनके पास कभी नहीं आती। इन अडों की हिफाजत तो कोई करता नहीं, इसलिए ज्यादातर मर जाते हैं। बहुत थोड़े से अडों से मछलियाँ निकलती हैं। कितनी जानें बरबाद जाती हैं! लेकिन
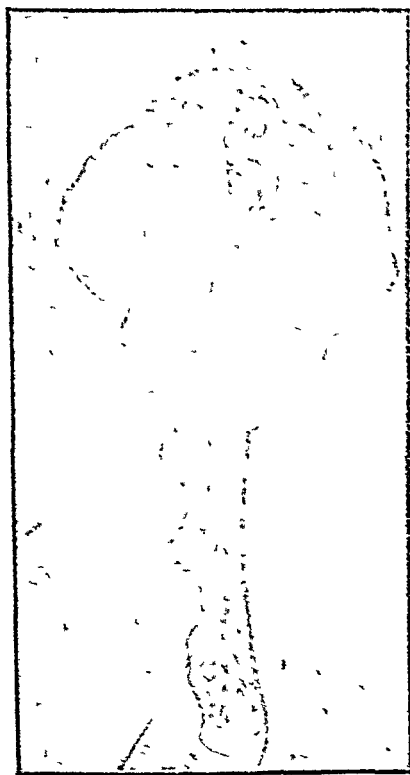
खान से निकली हुई मछली जो पत्थर की हो गई है

ऊँचे दरजे के जानवरो को देखो तो मालूम होगा कि उनके अडे या बच्चे कम होते हैं लेकिन वे उनकी ख़ूब हिफाजत करते हैं। मुर्गी भी अडे देती है लेकिन वह उन पर बैठती है और उन्हें सेती है। जब बच्चे निकल आते है तो वह कई दिन तक उन्हें चुगाती है। जब बच्चे बडे हो जाते हैं तब माँ उनकी फिक्र छोड देती है।

इन जानवरो में और उन जानवरो में जो बच्चे को दूध पिलाते हैं बडा फर्क है। ये जानवर अडे नहीं देते। माँ अडे को अपने अदर लिये रहती है और पूरे तौर पर बने हुए बच्चे जनती है। जैसे कुत्ते, बिल्ली या खरगोश। इसके बाद माँ अपने बच्चे को दूध पिलाती है, लेकिन इन जानवरो में भी बहुत से बच्चे बरबाद हो जाते हैं। खरगोश के कई-कई महीनो के बाद बहुत से बच्चे पैदा होते हैं लेकिन इनमें से ज्यादातर मर जाते हैं। लेकिन ऊँचे दरजे के जानवर एक ही बच्चा देते हैं और बच्चे को अच्छी तरह पालते पोसते हैं, जैसे हाथी।

अब तुमको यह भी मालूम हो गया कि जानवर ज्यो-ज्यो तरक्की करते है वे अडे नहीं देते बल्कि अपनी सूरत के पूरे बने हुए बच्चे जनते हैं, जो सिर्फ कुछ छोटे होते हैं। ऊँचे दरजे के जानवर आमतौर से एक बार एक ही बच्चा देते हैं। तुमको यह भी मालूम होगा कि ऊँचे दरजे के जानवरो को अपने बच्चो से थोडा बहुत प्रेम होता है। आदमी सबसे ऊँचे दरजे का जानवर है इसलिए माँ और बाप अपने बच्चे को बहुत प्यार करते और उसकी हिफाजत करते हैं।

इससे यह मालूम होता है कि आदमी जरूर नीचे दरजे के जानवरो से पैदा हुआ होगा। शायद शुरू के आदमी आजकल के से आदमियो की तरह थे ही नहीं। वे आधे वनमानुस और आधे आदमी रहे होगे और बन्दरो की तरह रहते होगे। तुम्हें याद है कि जर्मनी के हाइडल बर्ग में तुम हम लोगो के साथ एक प्रोफेसर से मिलने गई थीं? उन्होने एक अजायबखाना दिखाया

था जिसमें पुरानी हड्डियाँ भरी हुई थीं खासकर एक पुरानी खोपड़ी जिसे वह संदूक में रखे हुए थे। ख़याल किया जाता है कि यह शुरू-शुरू के आदमी की खोपड़ी होगी। हम अब उसे हाइडल बर्ग का आदमी कहते हैं, सिर्फ इसलिए कि खोपड़ी हाइडल बर्ग के पास गड़ी हुई मिली थी। यह तो तुम जानती ही हो कि उस ज़माने में न हाइडल बर्ग का पता था न किसी दूसरे शहर का।

उस पुराने ज़माने में जब कि आदमी इधर-उधर घूमते फिरते थे, बड़ी सख्त सरदी पड़ती थी इसीलिए उसे बर्फ का ज़माना कहते हैं। बर्फ के बड़े-बड़े पहाड़ जैसे आजकल उत्तरी ध्रुव के पास हैं इंगलैण्ड और जर्मनी तक बहते चले आते थे। आदमियों को रहना बहुत मुश्किल होता होगा, और उन्हें बड़ी तकलीफ़ से दिन काटने पड़ते होंगे। वे वहीं रह सकते होंगे जहाँ बर्फ के पहाड़ न हों। वैज्ञानिक लोगों ने लिखा है कि उस ज़माने में भूमध्य सागर न था बल्कि वहाँ एक या दो झीलें थीं। लाल सागर भी न था। यह सब ज़मीन थी। शायद हिन्दुस्तान का बड़ा हिस्सा टापू था और पंजाब और हमारे सूबे का कुछ हिस्सा समुद्र था। ख़याल करो कि सारा दक्खिनी हिन्दुस्तान और मध्य हिन्दुस्तान एक बहुत बड़ा द्वीप है और हिमालय और उसके बीच में समुद्र लहरें मार रहा है। तब शायद तुम्हें जहाज़ पर बैठ कर मसूरी जाना पड़ता।

शुरू-शुरू में जब आदमी पैदा हुआ तो उसके चारों तरफ बड़े-बड़े जानवर रहे होंगे और उसे उनके डर से सदा चौकन्ना रहना होगा। आज आदमी दुनिया का मालिक है और जानवरों से जो काम चाहता है करा लेता है। बाज़ों को वह पाल लेता है जैसे घोड़ा, गाय, हाथी, कुत्ता, बिल्ली वगैरा। बाज़ों को वह खाता है और बाज़ों का वह दिल बहलाने के लिए शिकार करता है जैसे शेर और चीता। लेकिन उस ज़माने में वह मालिक न था, बल्कि बड़े-बड़े जानवर उसका शिकार करते थे और वह उनसे जान

बचाता फिरता था। मगर धीरे-धीरे उसने तरक्की की और दिन-दिन ज्यादा ताकतवर होता गया यहा तक कि वह सब जानवरो से मजबूत हो गया। यह बात उसमें कैसे पैदा हुई ? बदन की ताकत से नहीं क्योंकि हाथी उससे कहीं ज्यादा मजबूत होता है। बुद्धि और दिमाग की ताकत ने उसमें यह बात पैदा हुई।

आदमी की अक्ल कैसे धीरे-धीरे बढती गई इसका शुरू से आज तक का पता हम लगा सकते है। सच तो यह है कि बुद्धि ही आदमियो को और जानवरो से अलग कर देती है। बिना समझ के आदमी और जानवर में कोई फर्क नहीं है।

पहिली चीज जिसका आदमी ने पता लगाया वह शायद आग थी। आजकल हम दियासलाई से आग जलाते है। लेकिन दियासलाइयां तो अभी हाल में बनी है। पुराने जमाने में आग बनाने का यह तरीका था कि दो चकमक पत्थरो को रगडते थे यहाँ तक कि चिनगारी निकल आती थी और इस चिनगारी से सूखी घास या किसी दूसरी सूखी चीज में आग लग जाती थी। जगलो में कभी-कभी पत्थरो की रगड या किसी दूसरी चीज की रगड से आप ही आप आग लग जाती है। जानवरो में इतनी अक्ल कहाँ थी कि इससे कोई मतलब की बात सोचते। लेकिन आदमी ज्यादा होशियार था उसने आग के फायदे देखे। यह जाडो में उसे गर्म रखती थी और बडे-बडे जानवरो को, जो उसके दुश्मन थे, भगा देती थी। इसलिए जब कभी आग लग जाती थी तो मर्द और औरत उसमें सूखी पत्तियां फेंक-फेंक कर उसे जलाए रखने की कोशिश करते होगे। धीरे-धीरे उन्हें मालूम हो गया होगा कि वे चकमक पत्थरो को रगड कर खुद आग पैदा कर सकते है। उनके लिए यह बड़े मार्के की बात थी, क्योकि इसने उन्हें दूसरे जानवरो से ताकतवर बना दिया। आदमी को दुनिया के मालिक बनने का रास्ता मिल गया।

: ७ :

शुरू के आदमी

मैंने अपने पिछले खत में लिखा था कि आदमी और जानवर में सिर्फ अक्ल का फर्क है। अक्ल ने आदमी को उन बड़े-बड़े जानवरों से ज्यादा चालाक और मज़बूत बना दिया जो मामूली तौर पर उसे नष्ट कर डालते। ज्यों-ज्यों आदमी की अक्ल बढ़ती गई वह ज्यादा बलवान होता गया। शुरू में आदमी के पास जानवरों से मुकाबिला करने के लिए कोई खास हथियार न थे। वह उन पर सिर्फ पत्थर फेंक सकता था। इसके बाद उसने पत्थर की कुल्हाड़ियाँ और भाले और बहुत सी दूसरी चीजें भी बनाईं जिनमें पत्थर की सुई भी थी। हमने इन पत्थर के हथियारों को साउथ कैंसिंगटन और जेनेवा के अजायबघरों में देखा था।

धीरे-धीरे बर्फ का ज़माना खत्म हो गया जिसका मैंने अपने पिछले खत में ज़िक्र किया है। बर्फ के पहाड़ मध्य एशिया और यूरप से गायब हो गए। ज्यों-ज्यों गरमी बढ़ती गई आदमी फैलते गए।

उस ज़माने में न तो मकान थे न और कोई दूसरी इमारत थी। लोग गुफाओं में रहते थे। खेती करना किसी को न आता था। लोग जंगली फल वगैरा खाते थे या जानवरों का शिकार करके मांस खाकर रहते थे। रोटी और भात उन्हें कहाँ मयस्सर होता क्योंकि उन्हें खेती करनी आती ही न थी। वे पकाना भी नहीं जानते थे, हाँ शायद मांस को आग में गर्म कर लेते हों। उनके पास पकाने के बर्तन जैसे कड़ाई और पतीली भी न थे।
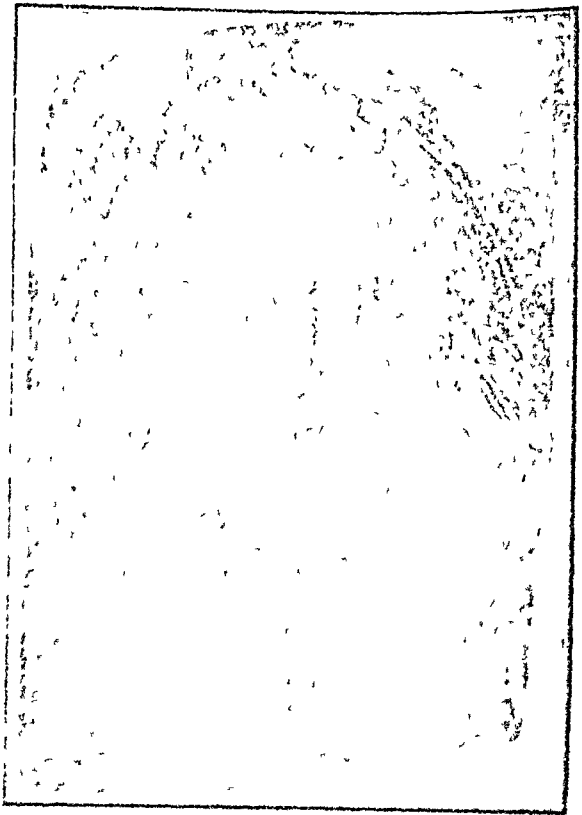
एक बात बडी अजीब है। इन जगली आदमियो को तसवीर खींचना आता था। यह सच है कि उनके पास कागज कलम पेंसिल या ब्रुश न थे। उनके पास सिर्फ पत्थर की सुइयाँ और नोकदार औजार थे। इन्हींसे वे गुफाओ की दीवारों पर जानवरो की तसवीरें बनाया करते थे। उनके बाज़े-बाज़े खाके खासे अच्छे हैं मगर वे सब इकरुखे हैं। तुम्हें मालूम है कि इकरुखी तसवीर खींचना आसान है और बच्चे इसी तरह की तसवीरें खींचा करते हैं। गुफाओ में अँधेरा होता था इसलिए मुमकिन है कि वे चिराग जलाते हो।

जिन आदमियो का हमने ऊपर जिक्र किया है वे पाषाण—पत्थर—युग के आदमी कहलाते हैं। उस जमाने को पत्थर का युग इसलिए कहते हैं कि आदमी अपने सभी औजार पत्थर के बनाते थे। धातुओ को काम में लाना वे न जानते थे। आजकल हमारी अक्सर चीजें धातुओ से बनती हैं खासकर लोहे से। लेकिन उस जमाने में किसीको लोहे या कांसे का पता न था। इसलिए पत्थर काम में लाया जाता था हालाँ कि उससे कोई काम करना बहुत मुश्किल था।

पाषाण-युग के खत्म होने के पहिले ही दुनिया की आबहवा बदल गई और उसमें गर्मी आ गई। बर्फ के पहाड अब उत्तरी सागर तक ही रहते थे और मध्य एशिया और यूरप में बडे-बडे जगल पैदा हो गए। इन्हीं जगलो में आदमियो की एक नई जाति रहने लगी। ये लोग बहुत सी बातो में पत्थर के युग के आदमियो से ज्यादा होशियार थे। लेकिन ये भी पत्थर के ही औजार बनाते थे। ये लोग भी पत्थर ही के युग के थे; मगर यह पिछला पत्थर का युग था, इसलिए वे नए पत्थर के युग के आदमी कहलाते थे।

गौर से देखने से मालूम होता है कि नए पत्थर के युग के आदमियों ने बडी तरक्की कर ली थी। आदमी की अक्ल और जानवरो के मुका-बिले में उसे बडी तेजी से बढाए लिये जा रही है। इन्हीं नए पाषाण-

युग के आदमियो ने एक बहुत बडी चीज निकाली। यह खेती करने का तरीका था। उन्होने खेतो को जोतकर खाने की चीजें पैदा करनी शुरू कीं। उनके लिए यह बहुत बडी बात थी। अब उन्हें आसानी से खाना मिल जाता था, इसकी जरूरत न थी कि वे रात दिन जानवरो का शिकार करते रहें। अब उन्हें सोचने और आराम करने को ज्यादा फुर्सत मिलने लगी। और उन्हें जितनी ही ज्यादा फुर्सत मिलती थी, नई चीजो और तरीको के निकालने में वे उतनी ही ज्यादा तरक्की करते थे। उन्होने मिट्टी के बरतन बनाने शुरू किए और उनकी मदद से अपना खाना पकाने लगे। पत्थर के औजार भी अब ज्यादा अच्छे बनने लगे और उन पर पालिश भी अच्छी होने लगी। उन्होने गाय, कुत्ता, भेड, बकरी वगैरा जानवरो को पालना सीख लिया और वे कपडे भी बुनने लगे।

वे छोटे-छोटे घरो या झोपडो में रहते थे। ये झोपडे अक्सर झीलों के बीच में बनाए जाते थे क्योकि जगली जानवर या दूसरे आदमी वहां उन पर आसानी से हमला न कर सकते थे। इसलिए ये लोग झील के रहने वाले कहलाते थे।

तुम्हें अचभा होता होगा कि इन आदमियो के बारे में हमें इतनी बातें कैसे मालूम हो गईं। उन्होने कोई किताब तो नहीं लिखी। लेकिन मै तुमसे पहिले ही कह चुका हूँ कि इन आदमियो का हाल जिस किताब में हमें मिलता है वह ससार की किताब है। उसे पढ़ना आसान नही है। उसके लिए बडे अभ्यास की जरूरत है। बहुत से आदमियो ने इस किताब के पढने में अपनी सारी उम्र खत्म कर दी है। उन्होने बहुत सी हड्डियां और पुराने जमाने की बहुत सी निशानियां जमा कर दी है। ये चीजें बडे-बडे अजायबघरो में जमा है, और वहां हम उम्दा चमकती हुई कुल्हाडियां और बर्तन, पत्थर के तीर और सुइयां, और बहुत सी दूसरी चीजें देख सकते है, जो पिछले पत्थर के युग के आदमी बनाते थे। तुमने खुद इनमें से बहुत सी चीजें देखी है

लेकिन शायद तुम्हें याद न हो। अगर तुम फिर उन्हें देखो तो ज्यादा अच्छी तरह समझ सकोगी।

मुझे याद आता है कि जेनेवा के अजायबघर में झील के मकान का एक बहुत अच्छा नमूना रक्खा हुआ था। झील में लकड़ी के डंडे गाड़ दिए गए थे और उनके ऊपर लकड़ी के तख्ते बांध कर उन पर झोपड़ियां बनाई गई थीं। इस घर और जमीन के बीच में एक छोटा सा पुल बना दिया गया था। ये पिछले पत्थर के युग वाले आदमी जानवरों की खालें पहनते थे और कभी-कभी सन के मोटे कपड़े भी पहनते थे। सन एक पौधा है जिसके रेशों से कपड़ा बनता है। आजकल महीन कपड़े सन से बनाये जाते हैं। लेकिन उस जमाने के सन के कपड़े बहुत ही भद्दे रहे होंगे।

ये लोग इसी तरह तरक्की करते चले गए; यहां तक कि उन्होंने तांबे और कांसे के औजार बनाने शुरू किए। तुम्हें मालूम है कि कांसा, तांबे और रांगे के मेल से बनता है और इन दोनों से ज्यादा सख्त होता है। वे सोने का इस्तेमाल करना भी जानते थे और इसके जेवर बनाकर इतराते थे।

हमें यह ठीक तो मालूम नहीं कि इन लोगों को हुए कितने दिन गुजरे लेकिन अंदाज से मालूम होता है कि दस हजार साल से कम न हुए होंगे। अभी तक तो हम लाखों बरसों की बात कर रहे थे, लेकिन धीरे-धीरे हम आज कल के जमाने के करीब आते जाते हैं। नए पाषाण के युग के आदमियों में और आजकल के आदमियों में यकायक कोई तब्दीली नहीं आ गई। फिर भी हम उनके से नहीं हैं। जो कुछ तब्दीलियां हुईं बहुत धीरे-धीरे हुईं और यही प्रकृति का नियम है। तरह तरह की कौमें पैदा हुईं और हर एक कौम के रहन-सहन का ढंग अलग था। दुनिया के अलग-अलग हिस्सों की आबहवा में बहुत फर्क था और आदमियों को अपना रहन-सहन उन्हीं के मुताबिक बनाना पड़ता था। इस तरह लोगों में तब्दीलियां होती जाती थीं। लेकिन इस बात का जिक्र हम आगे चल कर करेंगे।

आज मैं तुमसे सिर्फ एक बात का जिक्र और करूँगा। जब नया पत्थर का युग खत्म हो रहा था तो आदमी पर एक बडी आफत आई। मैं तुमसे पहिले ही कह चुका हूँ कि उस जमाने में भूमध्य सागर था ही नहीं। वहाँ चन्द झीलें थीं और इन्हींमें लोग आबाद थे। यकायक यूरप और अफरीका के बीच में जिब्राल्टर के पास जमीन बह गई और अटलांटिक समुद्र का पानी उस नीचे खड्ड में भर आया। इस बाढ में बहुत से मर्द और औरतें जो वहाँ रहते थे डूब गए होंगे। भाग कर जाते कहाँ? सैकडो मील तक पानी के सिवा कुछ नजर ही न आता था। अटलांटिक सागर का पानी बराबर भरता गया और इतना भरा कि भूमध्य सागर बन गया।

तुमने शायद पढा होगा, कम से कम सुना तो है ही, कि किसी जमाने में बडी भारी बाढ आई थी। बाइबिल में इसका जिक्र है और बाज संस्कृत की किताबो में भी उसकी चर्चा आई है। हम तो समझते है कि भूमध्य सागर का भरना ही वह बाढ होगी। यह इतनी बडी आफत थी कि इससे बहुत थोडे आदमी बचे होंगे। और उन्होंने अपने बच्चो से यह हाल कहा होगा। उन बच्चो को यह बात याद रही होगी और उन्होने अपने बच्चो से कही होगी। इसी तरह यह कहानी हम तक पहुँची।

: ८ :

तरह-तरह की क़ौमें क्योंकर बनीं

अपने पिछले ख़त में मैंने नये पत्थर के युग के आदमियों का ज़िक्र किया था जो जानकर झीलों के बीच में मकानों में रहते थे। उन लोगों ने बहुत सी बातों में बड़ी तरक्की कर ली थी। उन्होंने खेती करने का तरीका निकाला। वे खाना पकाना जानते थे और यह भी जानते थे कि जानवरों को पाल कर कैसे काम लिया जा सकता है। ये बातें कई हज़ार वर्षों की पुरानी हैं और हमें उनका हाल बहुत कम मालूम है लेकिन शायद आज दुनिया में आदमियों की जितनी क़ौमें हैं उनमें से अक्सर उन्हीं नये पत्थर के युग के आदमियों की संतान हैं। यह तो तुम जानती ही हो कि आजकल दुनिया में गोरे, काले, पीले भूरे सभी रंगों के आदमी हैं। लेकिन सच्ची बात तो यह है कि आदमियों की क़ौमों को इन्हीं चार हिस्सों में बांट देना आसान नहीं है। क़ौमों में ऐसा मेलजोल हो गया है कि उनमें से बहुतों के बारे में यह बतलाना कि वह किस क़ौम में से है बहुत मुश्किल है। वैज्ञानिक लोग आदमियों के सिरों को नाप कर कभी-कभी उनकी क़ौम का पता लगा लेते हैं। और भी ऐसे कई तरीके हैं जिनसे इस बात का पता चल सकता है।

अब सवाल यह होता है कि ये तरह-तरह की क़ौमें कैसे पैदा हुईं? अगर सबकी सब एक ही क़ौम की हैं तो उनमें आज इतना फ़र्क क्यों है? जर्मन और हबशी में कितना फ़र्क है! एक गोरा है और दूसरा बिलकुल

रहते उनकी कई पीढ़ियाँ गुज़र जायें उनके काले हो जाने में क्या ताज्जुब है। तुमने हिन्दुस्तानी किसानों को दोपहरी की धूप में खेतों में काम करते देखा है। वे ग़रीबी की वजह से न ज़्यादा कपड़े पहन सकते हैं न पहिनते ही हैं। उनकी सारी देह धूप में खुली रहती है और इसी तरह उनकी पूरी उम्र गुज़र जाती है। फिर वे क्यों न काले हो जायें।

इससे तुम्हें यह मालूम हुआ कि आदमी का रंग उस आबहवा की वजह से बदल जाता है जिसमें वह रहता है। रंग से आदमी की लियाकत, भलमनसी या ख़ूबसूरती पर कोई असर नहीं पड़ता। अगर गोरा आदमी किसी गर्म मुल्क में बहुत दिनों तक रहे और धूप से बचने के लिए टट्टियों की आड़ में या पंखों के नीचे न छिपा बैठा रहे, तो वह ज़रूर साँवला हो जायगा। तुम्हें मालूम है कि हम लोग कश्मीरी हैं और दो सौ साल पहिले हमारे पुरखे कश्मीर में रहते थे। कश्मीर में सभी आदमी, यहाँ तक कि किसान और मज़दूर भी, गोरे होते हैं। इसका यही सबब है कि कश्मीर की आबहवा सर्द है। लेकिन वही कश्मीरी जब हिन्दुस्तान के दूसरे हिस्सों में आते हैं, जहाँ ज़्यादा गर्मी पड़ती है, कई पुश्तों के बाद साँवले हो जाते हैं। हमारे बहुत से कश्मीरी भाई ख़ूब गोरे हैं और बहुत से बिल्कुल साँवले भी हैं। कश्मीरी जितने ज़्यादा दिनों तक हिन्दुस्तान के इस हिस्से में रहेगा उसका रंग उतना ही साँवला होगा।

अब तुम समझ गई कि आबहवा ही की वजह से आदमी का रंग बदल जाता है। यह हो सकता है कि कुछ लोग गर्म मुल्क में रहें लेकिन मालदार होने की वजह से उन्हें धूप में काम न करना पड़े, वे बड़े-बड़े मकानों में रहें और अपने रंग को बचा सकें। अमीर ख़ानदान इस तरह कई पीढ़ियों तक अपने रंग को आबहवा के असर से बचाए रख सकता है लेकिन अपने हाथों से काम न करना और दूसरों की कमाई खाना ऐसी बात नहीं जिस पर हम ग़ुरूर कर सकें। तुमने देखा है कि हिन्दुस्तान में कश्मीर और पंजाब के

आदमी आमतौर पर गोरे होते है लेकिन ज्यो-ज्यो हम दक्षिण जावें वे काले होते जाते है। मदरास और लका में ये बिलकुल काले होते है। तुम जरूर ही समझ जाओगी कि इसका सबब आबहवा है। क्योकि दक्षिण की तरफ हम जितना ही बढ़ें हम विषुवत् रेखा के पास पहुँचते जाते है और गर्मी बढ़ती जाती है। यह बिलकुल ठीक है और यही एक खास वजह है कि हिन्दुस्तानियो के रग में इतना फर्क है। हम आगे चल कर देखेंगे कि यह फर्क कुछ इस वजह से भी है कि शुरू में जो कौमें हिन्दुस्तान में आकर बसी थीं उनमें आपस में फर्क था। पुराने जमाने में हिन्दुस्तान में बहुत सी कौमें आईं और हालाँकि बहुत दिनो तक उन्होने अलग रहने की कोशिश की लेकिन वे आखिर में बिना मिले न रह सकी। आज किसी हिन्दुस्तानी के बारे में यह कहना मुश्किल है कि वह पूरी तरह से किसी एक असली कौम का है।

: ९ :

आदमियों की कौमें और जबानें

हम यह नहीं कह सकते कि दुनिया के किस हिस्से में पहिले-पहिल आदमी पैदा हुए। न हमें यही मालूम है कि शुरू में वह कहाँ आबाद हुए। शायद आदमी एक ही वक्त में कुछ आगे पीछे दुनिया के कई हिस्सों में पैदा हुए। हाँ, इसमें ज्यादा संदेह नहीं है कि ज्यों-ज्यों बर्फ के जमाने के बड़े-बड़े बर्फीले पहाड़ पिघलते और उत्तर की ओर हटते जाते थे आदमी ज्यादा गर्म हिस्सों में आते जाते थे। बर्फ के पिघल जाने के बाद बड़े-बड़े मैदान बन गए होंगे कुछ उन्हीं मैदानों की तरह जो आजकल साइबेरिया में हैं। इस जमीन पर घास उग आई होगी और आदमी अपने जानवरों को चराने के लिए इधर-उधर घूमते फिरते होंगे। जो लोग किसी एक जगह टिक कर नहीं रहते बल्कि हमेशा घूमते रहते हैं 'खानाबदोश' कहलाते हैं। आज भी हिन्दुस्तान और बहुत से दूसरे मुल्कों में ये खानाबदोश या बंजारे मौजूद हैं।

आदमी बड़ी-बड़ी नदियों के पास आबाद हुए होंगे क्योंकि नदियों के पास की जमीन बहुत उपजाऊ और खेती के लिए बहुत अच्छी होती है। पानी की तो कोई कमी थी ही नहीं और जमीन में खाने की चीजें आसानी से पैदा हो जाती थीं. इसलिए हमारा खयाल है कि हिन्दुस्तान में लोग सिंध और गंगा जैसी बड़ी-बड़ी नदियों के पास बसे होंगे मेसोपोटेमिया में दजला और फरात के पास, मिस्र में नील के पास और उसी तरह चीन में भी हुआ होगा।
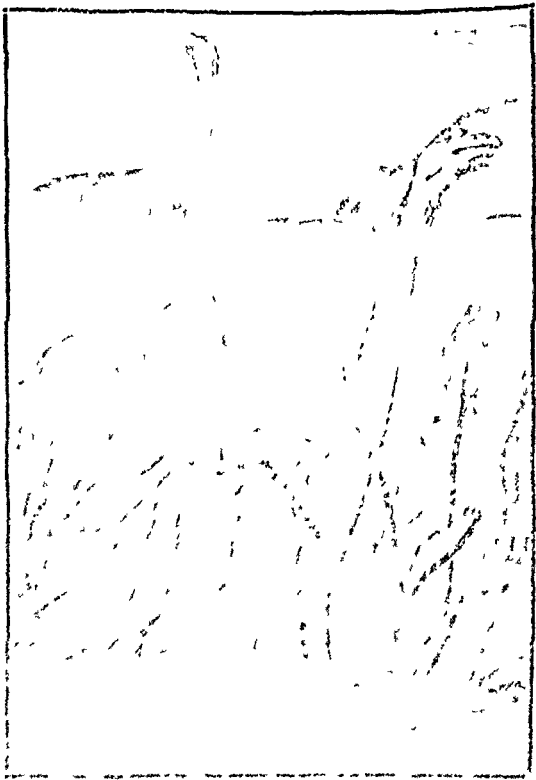
हिन्दुस्तान की सबसे पुरानी कौम जिसका हाल हमें कुछ मालूम है, द्रविड़ है। उसके बाद हम जैसा आगे देखेंगे, आर्य आए और पूरब में मंगोल जाति के लोग आए। आजकल भी दक्षिणी हिन्दुस्तान के आदमियों में बहुत से द्रविड़ों की संतानें हैं। वे उत्तर के आदमियों से ज्यादा काले हैं, इसलिए कि शायद द्रविड़ लोग हिन्दुस्तान में और ज्यादा दिनों से रह रहे हैं। द्रविड़ जाति वालों ने बड़ी उन्नति कर ली थी, उनकी अलग एक जबान थी और वे दूसरी जाति वालों से बड़ा व्यापार भी करते थे। लेकिन हम बहुत तेजी से बढ़े जा रहे हैं।

उस जमाने में पश्चिमी एशिया और पूर्वी यूरप में एक नई जाति पैदा हो रही थी। यह आर्य कहलाती थी। संस्कृत में आर्य शब्द का अर्थ है शरीफ आदमी या ऊँचे कुल का आदमी। संस्कृत आर्यों की एक जबान थी इसलिए इससे मालूम होता है कि वे लोग अपने को बहुत शरीफ और खानदानी समझते थे। ऐसा मालूम होता है कि वे लोग भी आजकल के आदमियों की ही तरह शेखीबाज थे। तुम्हें मालूम है कि अँगरेज अपने को दुनिया में सबसे बढ़कर समझता है, फ्रांसीसी का भी यही खयाल है कि मैं ही सबसे बड़ा हूँ, इसी तरह जर्मन, अमरीकन और दूसरी जातियाँ भी अपने ही बड़प्पन का राग अलापती हैं।

ये आर्य उत्तरी एशिया और यूरप के चरागाहों में घूमते रहते थे। लेकिन जब उनकी आबादी बढ़ गई और पानी और चारे की कमी हो गई तो उन सबके लिए खाना मिलना मुश्किल हो गया। इसलिए वे खाने की तलाश में दुनिया के दूसरे हिस्सों में जाने के लिए मजबूर हुए। एक तरफ तो वे सारे यूरप में फैल गए, दूसरी तरफ हिन्दुस्तान, ईरान और मेसोपोटैमिया में आ पहुँचे। इससे हमें मालूम होता है कि यूरप, उत्तरी हिन्दुस्तान, ईरान और मेसोपोटैमिया की सभी जातियाँ असल में एक ही पुरखों की संतान हैं, यानी आर्यों की; हालाँ कि आजकल उनमें बड़ा फ़र्क है। यह तो

मानी हुई बात है कि इधर बहुत ज़माना गुज़र गया और उसमें बड़ी-बड़ी तब्दीलियाँ हो गईं और कौमें आपस में बहुत कुछ मिल गईं। इस तरह आज की बहुत सी जातियों के पुरखे आर्य ही थे।

दूसरी बड़ी जाति मंगोल है। यह सारे पूर्वी एशिया अर्थात् चीन, जापान, तिब्बत, स्याम और बर्मा में फैल गई। उन्हें कभी-कभी पीली जाति भी कहते हैं। उनके गालों की हड्डियाँ ऊँची और आँखें छोटी होती हैं।

अफरीका और कुछ दूसरी जगहों के आदमी हबशी हैं। ये न आर्य हैं न मंगोल और उनका रंग बहुत काला होता है। अरब और फलिस्तीन की जातियाँ—अरबी और यहूदी—एक दूसरी ही जाति से पैदा हुईं।

ये सभी जातियाँ हजारों साल के ज़माने में बहुत सी छोटी-छोटी जातियों में बँट गई हैं और कुछ मिलजुल गई हैं। मगर हम उनकी तरफ ध्यान न देंगे। भिन्न-भिन्न जातियों के पहिचानने का एक अच्छा और दिल-चस्प तरीका उनकी जबानों का पढना है। शुरू-शुरू में हर एक जाति की एक अलग जबान थी, लेकिन ज्यों-ज्यों दिन गुजरता गया उस एक जबान से बहुत सी जबानें निकलती गईं। लेकिन ये सब जबानें एक ही माँ की बेटियाँ हैं। हमें उन जबानों में बहुत से शब्द एक से ही मिलते हैं और इससे मालूम होता है कि उनमें कोई गहरा नाता है।

जब आर्य एशिया और यूरप में फैल गए तो उनका आपस में मेल जोल न रहा। उस जमाने में न रेल गाडियाँ थीं, न तार व डाक, यहाँ तक कि लिखी हुई किताबें तक न थीं। इसलिए आर्यों का हरएक हिस्सा एक ही जबान को अपने-अपने ढग पर बोलता था, और कुछ दिनों के बाद यह असली जबान से, या आर्य देशों की दूसरी बहनों से, बिलकुल अलग हो गई। यही सबब है कि आज दुनिया में इतनी जबानें मौजूद हैं।

लेकिन अगर हम इन जबानों को गौर से देखें तो मालूम होगा कि

तो वे बहुत सी हैं लेकिन असली ज़बानें बहुत कम हैं। मिसाल के तौर पर देखो कि जहाँ-जहाँ आर्य जाति के लोग गए वहाँ उनकी ज़बान आर्य ख़ानदान की ही रही। संस्कृत, लैटिन, यूनानी, अँगरेज़ी, फ़्रांसीसी, जर्मनी, इटाली और बाज़ दूसरी ज़बानें सब बहिनें हैं और आर्य ख़ानदान की ही हैं। हमारी हिन्दुस्तानी ज़बानों में भी जैसे हिन्दी, उर्दू, बंगला, मराठी और गुजराती, सब संस्कृत की सन्तान हैं और आर्यवंश में हैं।

ज़बान का दूसरा बड़ा ख़ानदान चीनी है। चीनी, बर्मी, तिब्बती और स्यामी ज़बानें इसीसे निकली हैं। तीसरा ख़ानदान सेम ज़बान का है जिससे अरबी और इबरानी ज़बानें निकली हैं।

कुछ ज़बानें जैसे तुर्की और जापानी इनमें से किसी वंश में नहीं हैं। दक्षिणी हिन्दुस्तान की कुछ ज़बानें, जैसे तमिल, तेलगु, मलयालम् और कनड़ भी इन ख़ानदानों में नहीं हैं। ये चारों द्रविड़ ख़ानदान में हैं और बहुत पुरानी हैं।

: १० :

ज़बानों का आपस में रिश्ता

हम बतला चुके है कि आर्य बहुत से मुल्कों में फैल गए और जो कुछ भी उनकी ज़बान थी उसे अपने साथ लेते गए। लेकिन तरह-तरह की आबहवा और तरह-तरह की हालतों ने आर्यों की जुदी-जुदी जातियों में बहुत फर्क पैदा कर दिया। हरएक जाति अपने ही ढंग पर बदलती गई और उसकी आदतें और रस्में भी बदलती गईं। ये दूसरे मुल्कों में दूसरी जातियों से न मिल सकते थे, क्योंकि उस ज़माने में सफ़र करना बहुत मुश्किल था, एक गिरोह दूसरे से अलग होता था। अगर एक मुल्क के आदमियों को कोई नई बात मालूम हो जाती, तो वे उसे दूसरे मुल्क वालों को न बतला सकते। इस तरह तब्दीलियां होती गईं और कई पुश्तों के बाद एक आर्य जाति के बहुत से टुकडे हो गए। शायद वे यह भी भूल गए कि हम एक ही बडे ख़ानदान से हैं। उनकी एक ज़बान से बहुत सी ज़बानें पैदा हो गईं जो आपस में बहुत कम मिलती जुलती थी।

लेकिन गो उनमें इतना फर्क मालूम होता था, उनमें बहुत से शब्द एक ही थे, और कई दूसरी बातें भी मिलती जुलती थी। आज हज़ारों साल के बाद भी हमें तरह तरह की भाषाओं में एक ही शब्द मिलते हैं इससे मालूम होता है कि किसी ज़माने में ये भाषायें एक ही रही होगी। तुम्हें मालूम है कि फ़्रांसीसी और अंगरेज़ी में बहुत से एक ही शब्द है। दो बहुत घरेलू और मामूली शब्द ले लो, "फादर" और "मदर"। हिन्दी और संस्कृत में यह

शब्द "पिता" और "माता" हैं। लैटिन में ये "पेटर" और "मेटर" हैं, यूनान में "पेटर" और "मोटर"; जर्मन में "फाटेर" और "मुत्तर", फ़ासीसी में "पेर" और "मेर" और इसी तरह और ज़बानों में भी। ये शब्द आपस में कितने मिलते जुलते हैं! भाई बहिनों की तरह उनकी सूरतें कितनी समान हैं! यह सच है कि बहुत से शब्द एक भाषा से दूसरी भाषा में आ गए होंगे। हिन्दी ने बहुत से शब्द अँगरेज़ी से लिये हैं और अँगरेज़ी ने भी कुछ शब्द हिन्दी से लिये हैं। लेकिन "फादर" और "मदर" इस तरह कभी न लिये गए होंगे। ये नए शब्द नहीं हो सकते। शुरू-शुरू में जब लोगों ने एक दूसरे से बात करनी सीखी तो उस वक्त माँ-बाप तो थे ही उनके लिए शब्द भी बन गए। इसलिए हम कह सकते हैं कि ये शब्द बाहर से नहीं आए। वे एक ही पुरखे या एक ही ख़ानदान से निकले होंगे। और इससे हमें मालूम हो सकता है कि जो क़ौमें आज दूर-दूर के मुल्कों में रहती हैं और भिन्न-भिन्न भाषायें बोलती हैं वे सब किसी ज़माने में एक ही बड़े ख़ानदान की रही होंगी। तुमने देख लिया न कि ज़बानों का सीखना कितना दिलचस्प है और उससे हमें कितनी बातें मालूम होती हैं। अगर हम तीन चार ज़बानें जान जायें तो और ज़बानों का सीखना आसान हो जाता है।

तुमने यह भी देखा कि बहुत से आदमी जो अब दूर-दूर मुल्कों में एक दूसरे से अलग रहते हैं किसी ज़माने में एक ही कौम के थे। तब से हम में बहुत फ़र्क़ हो गया है और हम अपने पुराने रिश्ते भूल गए हैं। हर एक मुल्क के आदमी ख़याल करते हैं कि हमी सब से अच्छे और अक़्लमन्द हैं और दूसरी जातें हमसे घटिया हैं। अँगरेज़ ख़याल करता है कि वह और उसका मुल्क सबसे अच्छा है; फ़ासीसी को अपने मुल्क और सभी फ़ासीसी चीज़ों पर घमंड है; जर्मन और इटालियन अपने मुल्कों को सबसे ऊँचा समझते हैं। और बहुत से हिन्दुस्तानियों का ख़याल है कि हिन्दुस्तान बहुत सी बातों में सारी दुनिया से बढ़ा हुआ है। यह सब डींग है। हरएक आदमी

अपने को और अपने मुल्क को अच्छा समझता है लेकिन दर असल कोई ऐसा आदमी नहीं है जिसमें कुछ ऐब और कुछ हुनर न हो। इसी तरह कोई ऐसा मुल्क नहीं है जिसमें कुछ बातें अच्छी और कुछ बुरी न हो। हमें जहां कहीं अच्छी बात मिले उसे ले लेना चाहिए और बुराई जहां कहीं हो उसे दूर कर देना चाहिए। हमको तो अपने मुल्क हिन्दुस्तान की ही सब से ज्यादा फिक्र है। हमारे दुर्भाग्य से इसका जमाना आजकल बहुत खराब है और बहुत से आदमी गरीब और दुखी हैं। उन्हे अपनी जिन्दगी में कोई खुशी नहीं है। हमें इसका पता लगाना है कि हम उन्हें कैसे ज्यादा सुखी बना सकते हैं। हमें यह देखना है कि हमारे रस्म रिवाज में क्या खूबियां हैं और उनको बचाने की कोशिश करना है, जो बुराइयां हैं उन्हें दूर करना है। अगर हमें दूसरे मुल्कों में कोई अच्छी बात मिले तो उसे जरूर ले लेना चाहिए।

हम हिन्दुस्तानी हैं और हमें हिन्दुस्तान में रहना और उसीकी भलाई के लिए काम करना है। लेकिन हमें यह न भूलना चाहिए कि दुनिया के और हिस्सों के रहने वाले हमारे रिश्तेदार और कुटुम्बी हैं। क्या ही अच्छी बात होती अगर दुनिया के सभी आदमी खुश और सुखी होते। हमें कोशिश करनी चाहिए कि सारी दुनिया ऐसी हो जाय जहाँ लोग चैन से रह सकें।

११

सभ्यता क्या है ?

मैं आज तुम्हें पुरानी सभ्यता के बारे में कुछ बताना चाहता हूँ। लेकिन इसके पहिले हमें यह समझ लेना चाहिए कि सभ्यता का मतलब क्या है। कोष में तो इसका अर्थ लिखा है अच्छा करना, सुधारना, जंगली आदतों की जगह अच्छी आदतें पैदा करना। और इसका व्यवहार किसी समाज या जाति के लिए ही किया जाता है। आदमी की जंगली दशा को, जब वह बिलकुल जानवरों का सा होता है, बर्बरता कहते हैं। सभ्यता बिलकुल उसकी उल्टी चीज है। हम बर्बरता से जितनी ही दूर जाते हैं उतने ही सभ्य होते जाते हैं।

लेकिन हमें यह कैसे मालूम हो कि कोई आदमी या समाज जंगली है या सभ्य ? यूरप के बहुत से आदमी समझते हैं कि हमीं सभ्य हैं और एशिया वाले जंगली हैं। क्या इसका यह सबब है कि यूरप वाले एशिया और अफरीका वालों से ज्यादा कपड़ा पहिनते हैं ? लेकिन कपड़े तो आबहवा पर मुनहसिर हैं। ठंडे मुल्क में लोग गर्म मुल्क वालों से ज्यादा कपड़े पहिनते हैं। तो क्या इसका यह सबब है कि जिसके पास बन्दूक है वह निहत्थे आदमी से ज्यादा मजबूत और इसलिए ज्यादा सभ्य है ? चाहे वह ज्यादा सभ्य हो या न हो, कमजोर आदमी उससे यह नहीं कह सकता कि आप सभ्य नहीं हैं। कहीं मजबूत आदमी झल्ला कर उसे गोली मार दे, तो वह बेचारा क्या करेगा ?

तुम्हें मालूम है कि कई साल पहिले एक बड़ी लड़ाई हुई थी। दुनिया

के बहुत से मुल्क उसमें शरीक थे और हरएक आदमी दूसरी तरफ के ज्यादा से ज्यादा आदमियों को मार डालने की कोशिश कर रहा था। अँगरेज जर्मनी वालों के खून के प्यासे थे और जर्मन अँगरेजों के खून के। इस लड़ाई में लाखों आदमी मारे गए और हजारों के अंग भंग हो गए—कोई अंधा हो गया, कोई लूला, कोई लँगड़ा। तुमने फ्रांस और दूसरी जगह भी ऐसे बहुत से लड़ाई के जख्मी देखे होंगे। पेरिस की सुरंग वाली रेलगाड़ी में, जिसे मेट्रो कहते हैं, उनके लिए खास जगहें हैं। क्या तुम समझती हो कि इस तरह अपने भाइयों को मारना सभ्यता और समझदारी की बात है? दो आदमी गलियों में लड़ने लगते हैं, तो पुलीस वाले उनमें बीच बिचाव कर देते हैं। और लोग समझते हैं कि ये दोनों कितने बेवकूफ हैं। तो जब दो बड़े-बड़े मुल्क आपस में लड़ने लगें और हजारों और लाखों आदमियों को मार डालें तो वह कितनी बड़ी बेवकूफी या पागलपन है! यह ठीक वैसा ही है जैसे दो वहशी जंगलों में लड़ रहे हों। और अगर वहशी आदमी जंगली कहे जा सकते हैं तो यह मूर्ख कितने जंगली हैं जो इस तरह लड़ते हैं?

अगर इस निगाह से तुम इस मामले को देखो, तो तुम फौरन कहोगी कि इँगलैंड, जर्मनी, फ्रांस, इटली और बहुत से दूसरे मुल्क जिन्होंने इतनी मार काट की जरा भी सभ्य नहीं हैं। और फिर भी तुम जानती हो कि इन मुल्कों में कितनी अच्छी-अच्छी चीजें हैं और वहाँ कितने अच्छे-अच्छे आदमी रहते हैं।

अब तुम कहोगी कि सभ्यता का मतलब समझना आसान नहीं है, और यह ठीक है। यह बहुत ही मुश्किल मामला है। अच्छी-अच्छी इमारतें, अच्छी-अच्छी तसवीरें और किताबें और तरह-तरह की दूसरी और खूबसूरत चीजें जरूर सभ्यता की पहचान हैं। मगर एक भला आदमी जो स्वार्थी नहीं है और सबकी भलाई के लिए दूसरों के साथ मिलकर काम करता है सभ्यता की इससे भी बड़ी पहचान है। मिलकर काम करना अकेले काम

: १२ :

जातियों का बनना

मैंने अपने पिछले खतों में तुम्हें बतलाया है कि शुरू में जब आदमी पैदा हुआ तो वह बहुत कुछ जानवरों से मिलता था। धीरे-धीरे हजारों बरसों में उसने तरक्की की और पहिले से ज्यादा होशियार हो गया। पहिले वह अकेले ही जानवरों का शिकार करता होगा, जैसे जंगली जानवर आज भी करते हैं। कुछ दिनों के बाद उसे मालूम हुआ कि और आदमियों के साथ एक गिरोह में रहना ज्यादा अक्ल की बात है और इसमें जान जाने का डर भी कम है। एक साथ रह कर वे ज्यादा मजबूत हो जाते थे और जानवरों या दूसरे आदमियों के हमलों का ज्यादा अच्छी तरह मुकाबिला कर सकते थे। जानवर भी तो अपनी रक्षा के लिए अक्सर झुंडों में रहा करते हैं। भेड़, बकरियां और हिरन, यहां तक कि हाथी भी झुंडों ही में रहते हैं। जब झुंड सोता है, तो उनमें से एक जागता रहता है और उनका पहरा देता है। तुमने भेड़ियों के झुंड की कहानियां पढ़ी होंगी। रूस में जाड़ों के दिनों में वे झुंड बांध कर चलते हैं और जब उन्हें भूख लगती है, जाड़ों में उन्हें ज्यादा भूख लगती भी है, तो आदमियों पर हमला कर देते हैं। एक भेड़िया कभी आदमी पर हमला नहीं करता लेकिन उनका एक झुंड इतना मजबूत हो जाता है कि कई आदमियों पर भी हमला कर बैठता है। तब आदमियों को अपनी जान लेकर भागना

पड़ता है और अक्सर भेड़ियो और बर्फ वाली गाड़ियो में बैठे हुए आदमियों में दौड होती है।

इस तरह पुराने जमाने के आदमियो ने सभ्यता में जो पहिली तरक्की की वह मिलकर झुडो में रहना था। इस तरह जातियो (फिरको) की बुनियाद पड़ी। वे साथ-साथ काम करने लगे। वे एक दूसरे की मदद करते रहते थे। हरएक आदमी पहिले अपनी जाति का खयाल करता था और तब अपना। अगर जाति पर कोई संकट आता तो हरएक आदमी जाति की तरफ से लडता था। और अगर कोई आदमी जाति के लिए लड़ने से इनकार करता तो निकाल बाहर किया जाता था।

अब अगर बहुत से आदमी एक साथ मिलकर काम करना चाहते हैं तो उन्हें कायदे के साथ काम करना पड़ेगा। अगर हरएक आदमी अपनी मर्जी के मुताबिक काम करे तो वह जाति बहुत दिन न चलेगी। इसलिए किसी एक को उनका सरदार बनना पड़ता है। जानवरो के झुडो में भी तो सरदार होते हैं। जातियो में वही आदमी सरदार चुना जाता था जो सबसे मजबूत होता था इसलिए कि उस जमाने में बहुत लड़ाई करनी पडती थी।

अगर एक जाति के आदमी आपस में लडने लगें तो जाति नष्ट हो जायगी। इसलिए सरदार देखता रहता था कि लोग आपस में न लडने पावें। हाँ, एक जाति दूसरी जाति से लड़ सकती थी और लड़ती थी। यह तरीका उस पुराने तरीके से अच्छा था जब हरएक आदमी अकेला ही लडता था।

शुरू-शुरू की जातियाँ बडे-बड़े परिवारो की तरह रही होगी। उसके सब आदमी एक दूसरे के रिश्तेदार होते होगे। ज्यो-ज्यो यह परिवार बढे जातियाँ भी बढी।

उस पुराने जमाने में आदमी का जीवन बहुत कठिन रहा होगा, खासकर जातियों के बनने के पहिले। न उसके पास कोई घर था, न कपडे थे। हाँ,

[illegible] जाती थीं। और [illegible]
[illegible] होगा। [illegible]
[illegible] इसमें [illegible]। [illegible]
हुआ हो तुम्हें नज़र आते होंगे। [illegible] भी उसे [illegible] ही मालूम होती
होगी, क्योंकि ओले और [illegible] और तूफ़ान [illegible] थी। बेचारे को
क्या [illegible] थी! [illegible] हम एक [illegible] से जानते
हैं इसलिए कि यह कोई [illegible] नहीं [illegible]। अगर ओले गिरते तो
वह समझता कि कोई देवता बादल में बैठा हुआ उनपर निशाना मार रहा
है। वह डर जाता था और उस बादल में बैठे हुए आदमी को खुश करने
के लिए कुछ न कुछ करना चाहता था जो उनपर ओले और पानी और
बर्फ़ गिरा रहा था। लेकिन उसे खुश करे तो कैसे! न वह बहुत समझ-
दार था, न होशियार था। उसने सोचा होगा कि बादलों का देवता हमारी
ही तरह होगा और खाने की चीज़ें पसन्द करता होगा। इसलिए वह कुछ
खाना रख देता था, या किसी जानवर की कुरबानी कर के छोड़ देता था कि
देवता आ कर खाले। वह सोचता था कि इस उपाय से ओला या पानी बन्द
हो जायगा। हमें यह पागलपन मालूम होता है क्योंकि हम मेह या ओले
या बर्फ़ के गिरने का सबब जानते हैं। जानवरों के मारने से उसका कोई
सबब नहीं है। लेकिन आज भी ऐसे आदमी मौजूद हैं जो इतने नासमझ
हैं कि अब तक वही काम किये जाते हैं।

: १३ :

मजहब की शुरुआत और काम का बँटवारा

पिछले खत में मैंने तुम्हें बतलाया था कि पुराने जमाने में आदमी हरएक चीज से डरता था और खयाल करता था कि उस पर मुसीबतें लाने वाले देवता हैं जो क्रोधी हैं और हसद करते हैं। उसे ये फर्जी देवता—जगल, पहाड, नदी, बादल—सभी जगह नजर आते थे। देवता को वह दयालु और नेक नही समझता था, उसके खयाल में वह बहुत ही क्रोधी था और बात बात पर झल्ला उठता था। और चूंकि वे उसके गुस्से से डरते थे इसलिए वे उसे भेंट दे कर, खास कर खाना पहुँचा कर, हर तरह की रिश्वत देने की कोशिश करते रहते थे। जब कोई बडी आफत आ जाती थी, जैसे भूचाल, या बाढ या महामारी जिसमें बहुत से आदमी मर जाते थे, तो वे लोग डर जाते थे और सोचते थे कि देवता नाराज हैं। उन्हें खुश करने के लिए वे मर्दों औरतो का बलिदान करते, यहाँ तक कि अपने ही बच्चो को मार कर देवताओ को चढा देते। यह बडी भयानक बात मालूम होती है लेकिन डरा हुआ आदमी जो कुछ न कर बैठे थोडा है।

इसी तरह मजहब शुरू हुआ होगा। इसलिए मजहब पहिले डर के रूप में आया और जो बात डर से की जावे बुरी है। तुम्हें मालूम है कि मजहब हमें बहुत सी अच्छी अच्छी बातें सिखाता है। जब तुम बडी हो जाओगी, तो तुम दुनिया के मजहबो का हाल पढोगी और तुम्हें मालूम होगा कि मज-

नीराटी मॉर
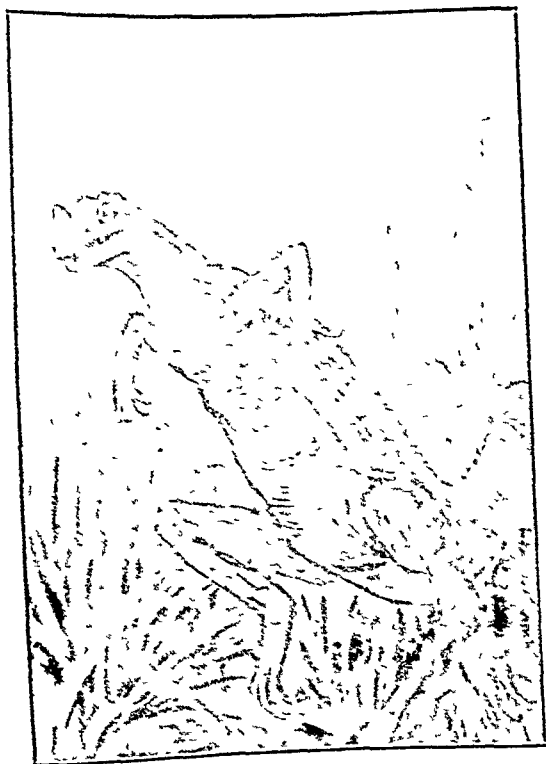
हब के नाम पर क्या-क्या अच्छी और बुरी बातें की गई हैं। यहां हमें सिर्फ यह देखना है कि मजहब का खयाल कैसे पैदा हुआ, और क्योंकर बढा। लेकिन चाहे वह जिस तरह बढा हो, हम आज भी लोगो को मजहब के नाम पर एक दूसरे से लडते और सिर फोडते देखते हैं। बहुत से आदमियो के लिए मजहब आज भी वैसी ही डरावनी चीज है। वह अपना वक्त फर्जी देवताओ को खुश करने के लिए, मदिरो में पूजा चढाने और जानवरो की कुरबानी करने में खर्च करते है।

इससे मालूम होता है कि शुरू में आदमी को कितनी कठिनाइयों का सामना करना पडता था। उसे अपना रोज का खाना तलाश करना पडता था नही तो भूखो मर जाता। उन दिनो कोई आलसी आदमी जिंदा न रह सकता था। कोई ऐसा भी नही कर सकता था कि एक ही दिन बहुत सा खाना जमा करले और बहुत दिनो तक आराम से पडा रहे।

जब जातियां (फिरके) बन गईं, तो आदमी को कुछ सुविधा हो गई। एक जाति के सब आदमी मिल कर उससे ज्यादा खाना जमा कर लेते थे जितना कि वे अलग-अलग कर सकते थे। तुम जानती हो कि मिल कर काम करना या सहयोग हमें ऐसे बहुत से काम करने में मदद देता है जो हम अकेले नहीं कर सकते। एक या दो आदमी कोई भारी बोझ नहीं उठा सकते लेकिन कई आदमी मिल कर आसानी से उठा ले जा सकते हैं। दूसरी बडी तरक्की जो उस जमाने में हुई वह खेती थी। तुम्हें यह सुन कर ताज्जुब होगा कि खेती का काम पहिले कुछ चीटियो ने शुरू किया। मेरा यह मतलब नही है कि चीटियां बीज बोतीं, हल चलातीं या खेत काटती हैं। मगर वे कुछ इसी तरह की बात करती हैं। अगर उन्हें कोई ऐसी झाडी मिलती है, जिसके बीज वे खाती हो, तो वे बडी होशियारी से उसके आसपास की घास निकाल डालती हैं। इससे वह दरख्त ज्यादा फलता फूलता और बढता है। शायद किसी जमाने में आदमियो ने भी यही किया होगा जो चीटियां करती हैं।

मैं तुम्हें बता चुका हूँ कि खेती क्या चीज़ है। इसके जानने से बड़ा एक ज़माना शुरू हुआ होगा और यह भी मालूम हुआ होगा कि बीज कैसे बोया जाता है।

खेती शुरू हो जाने पर खाना मिलना बहुत आसान हो गया। आदमी को खाने के लिए सारे दिन शिकार करना पड़ता था। उनकी ज़िन्दगी पहिले से ज्यादा आराम से कटने लगी। इसी ज़माने में एक और बड़ी तब्दीली पैदा हुई। खेती के पहले हर एक आदमी शिकारी था और शिकार ही उन का एक काम था। औरतें शायद बच्चों की देख रेख करती होंगी और फल बटोरती होंगी। लेकिन जब खेती शुरू हो गई तो तरह-तरह के काम निकल आये। खेतों में भी काम करना पड़ता था, शिकार करना, गाय बैलों की देख-भाल करना भी ज़रूरी था। औरतें शायद गउओं की देख-भाल करती थीं और गायों को दुहती थीं। कुछ आदमी एक तरह का काम करने लगे, कुछ दूसरी तरह का।

आज तुम्हें दुनिया में हरएक आदमी एक खास किस्म का काम करता हुआ दिखाई देता है। कोई डाक्टर है, कोई सड़कों और पुलों का बनाने वाला इंजीनियर, कोई बढ़ई, कोई लुहार, कोई घरों का बनाने वाला, कोई मोची या दरज़ी वगैरा। हरएक आदमी का अपना अलग पेशा है और दूसरे पेशों के बारे में वह कुछ नहीं जानता। इसे काम का बँटना कहते हैं। अगर कोई आदमी एक ही काम करे तो उसे बहुत अच्छी तरह करेगा। बहुत से काम वह इतनी अच्छी तरह पूरा नहीं कर सकता, दुनिया में आज-कल इसी तरह काम बँटा हुआ है।

जब खेती शुरू हुई तो पुरानी जातियों में इसी तरह धीरे-धीरे काम का बँटना शुरू हुआ।

: १४ :

खेती से पैदा हुई तब्दीलियाँ

अपने पिछले ख़त में मैंने कामो के अलग-अलग किये जाने का कुछ हाल वतलाया था। बिलकुल शुरू में जब आदमी सिर्फ शिकार पर बसर करता था, काम बँटे हुए न थे। हरएक आदमी शिकार करता था और मुश्किल से खाने भर को पाता था। पहिले मर्दों और औरतों के वीच में काम बँटना शुरू हुआ होगा, मर्द शिकार करता होगा और औरत घर में रहकर वच्चो और पालतू जानवरो की निगरानी करती होगी।

जब आदमियो ने खेती करना सीखा तो वहुत सी नई-नई बातें निकलीं। पहिली बात यह हुई कि काम कई हिस्सो में बँट गया। कुछ लोग शिकार खेलते और कुछ खेती करते और हल चलाते। ज्यो-ज्यो दिन गुजरते गए आदमी ने नए-नए पेशे सीखे और उनमें पक्के हो गए।

खेती करने का दूसरा अच्छा नतीजा यह हुआ कि लोग गाँव और क़स्बो में आवाद होने लगे। खेती के पहिले लोग इधर-उधर घूमते फिरते थे और शिकार करते थे। उनके लिए एक जगह रहना जरूरी नहीं था। शिकार हरएक जगह मिल जाता था। इसके सिवा उन्हें गायो, बकरियो और अपने दूसरे जानवरो की वजह से इधर-उधर घूमना पड़ता था। इन जानवरो को चरने के लिए चरागाह की जरूरत थी। एक जगह कुछ दिनो तक चरने के बाद जमीन में जानवरो के लिए काफी घास न पैदा होती थी और सारी जाति को दूसरी जगह जाना पड़ता था।

जब लोगों को खेती करना आ गया तो उनका जमीन के पास रहना जरूरी हो गया। जमीन को जोत-बोकर वे छोड़ न सकते थे। उन्हें साल भर तक लगातार खेती का काम लगा ही रहता था और इस तरह गांव और शहर बन गए।

दूसरी बड़ी बात जो खेती से पैदा हुई वह यह थी कि आदमी की जिन्दगी ज्यादा आराम से कटने लगी। खेती से जमीन में खाना पैदा करना सारे दिन शिकार खेलने से कहीं ज्यादा आसान था। इसके सिवा जमीन में खाना भी इतना पैदा होता था जितना वह एकदम खा नहीं सकते थे। इससे वह हिफाजत से रखते थे।

एक और मजे की बात सुनो। जब आदमी निपट शिकारी था तो वह कुछ जमा न कर सकता था या कर भी सकता था तो बहुत कम, किसी तरह पेट भर लेता था। उसके पास बैंक न थे जहां वह अपने रुपये या दूसरी चीजें रख सकता। उसे तो अपना पेट भरने के लिए रोज शिकार खेलना पड़ता था, खेती से उसे एक फसल में जरूरत से ज्यादा मिल जाता था। इस फालतू खाने को वह जमा कर देता था। इस तरह लोगों ने फ़ालतू अनाज जमा करना शुरू किया। लोगों के पास फालतू खाना इसलिए हो जाता था कि वह उससे कुछ ज्यादा मेहनत करते थे जितना सिर्फ पेट भरने के लिए जरूरी था। तुम्हें मालूम है कि आजकल बैंक खुले हुए हैं जहां लोग रुपये जमा करते हैं और चेक लिखकर निकाल सकते हैं। यह रुपया कहां से आता है? अगर तुम गौर करो तो तुम्हें मालूम होगा कि यह फालतू रुपया है यानी ऐसा रुपया जिसे लोगों को एकबारगी खर्च करने की जरूरत नहीं है इसलिए इसे वे बैंक में रखते हैं। वही लोग मालदार हैं जिनके पास बहुत सा फालतू रुपया है, और जिनके पास कुछ नहीं वे ग़रीब हैं। आगे तुम्हें मालूम होगा कि यह फ़ालतू रुपया आता कहां से है। इसका सबब यह नहीं है कि आदमी दूसरे से ज्यादा काम करता है और ज्यादा कमाता है बल्कि

आजकल जो आदमी बिलकुल काम नहीं करता उसके पास तो बहुत होते हैं और जो पसीना बहाता है उसे खाली हाथ रहना पड़ता है। कितना बुरा इंतजाम है ! बहुत से लोग समझते हैं कि इसी बुरे इंतजाम के सबब से दुनिया में आजकल इतने गरीब आदमी हैं। अभी शायद तुम यह बात समझ न सको इसलिए इसमें सिर न खपाओ। थोड़े दिनों में तुम इसे समझने लगोगी।

इस वक़्त तो तुम्हें इतना ही जानना काफी है कि खेती से आदमी को उससे ज्यादा खाना मिलने लगा जितना वह एकदम खा सकता था। यह जमा कर लिया जाता था। उस ज़माने में न रुपये थे न बैंक। जिनके पास बहुत सी गायें, भेड़ें, ऊँट या अनाज होता था वही अमीर कहलाते थे।

: १५ :

खानदान का सरगना कैसे बना

मुझे भय है कि मेरे खत कुछ पेचीदा होते जा रहे हैं। लेकिन अब जिन्दगी भी तो पेचीदा हो गई है। पुराने जमाने में लोगों की जिन्दगी बहुत सादी थी और हम अब उस जमाने पर आ गए हैं जब जिन्दगी का पेचीदा होना शुरू हुआ। अगर हम पुरानी बातों को जरा सावधानी के साथ जाँचें और उन तब्दीलियों को समझने की कोशिश करें जो आदमी की जिन्दगी और समाज में पैदा होती गईं, तो हमारी समझ में बहुत सी बातें आ जायँगी। अगर हम ऐसा न करेंगे तो हम उन बातों को कभी न समझ सकेंगे जो आज दुनिया में हो रही हैं। हमारी हालत उन बच्चों की सी होगी जो किसी जंगल में रास्ता भूल गए हों। यही सबब है कि मैं तुम्हें ठीक जंगल के किनारे पर लिये चलता हूँ ताकि हम इसमें से अपना रास्ता ढूंढ निकालें।

तुम्हें याद होगा कि तुमने मुझसे मसूरी में पूछा था कि बादशाह क्या हैं और वह कैसे बादशाह हो गए। इसलिए हम उस पुराने जमाने पर एक नजर डालेंगे जब राजा बनने शुरू हुए। पहिले पहिल वह राजा न कहलाते थे। अगर उनके बारे में कुछ मालूम करना है तो हमें यह देखना होगा कि वे शुरू कैसे हुए।

मैं जातियों के बनने का हाल तुम्हें बतला चुका हूँ। जब खेती-बारी शुरू हुई और लोगों के काम अलग-अलग हो गए तो यह जरूरी हो गया कि

मैमथ

[illegible]

और [illegible]
[illegible] जातियों में [illegible]
है [illegible] और [illegible] बड़ा आदमी [illegible] होता
था। [illegible] का बुड्ढा [illegible] था। सबसे बड़ा होने की वजह से
यह समझा जाता था कि वह सबसे ज्यादा तजुर्बेकार और होशियार है।
वह दूसरे [illegible] जाति के और आदमियों की ही तरह होता था। वह दूसरों के
साथ काम करता था और शिकार [illegible] की चीजें पैदा होती थीं वे जाति के
सब आदमियों में बांट दी जाती थीं। हरएक चीज जाति की होती थी।
आजकल की तरह ऐसा न होता था कि हरएक आदमी का अपना मकान
और दूसरी चीजें हों। और आदमी जो कुछ कमाता था वह आपस में बांट
लिया जाता था क्योंकि वह सब जाति का समझा जाता था। जाति का
बुड्ढा या सरगना इस बांट-बखरे का इंतजाम करता था।

लेकिन तब्दीलियां बहुत आहिस्ता-आहिस्ता होने लगीं। खेती के आ जाने से नए-नए काम निकल आए और सरगना को अपना बहुत सा वक्त इन्तजाम करने में और यह देखने में कि सब लोग अपना-अपना काम ठीक तौर पर करते हैं या नहीं, खर्च करना पड़ता था। धीरे-धीरे सरगना ने जाति के मामूली आदमियों की तरह काम करना छोड़ दिया। वह जाति के और आदमियों से बिल्कुल अलग हो गया। अब काम की बंटाई बिल्कुल दूसरे ढंग की हो गई। सरगना तो इंतजाम करता था और आदमियों को काम करने का हुक्म देता था और दूसरे लोग खेतों में काम करते थे, शिकार करते थे या लड़ाइयों में जाते थे और अपने सरगना के हुक्मों को मानते थे। अगर दो जातियों में लड़ाई ठन जाती तो सरगना और भी ताकतवर हो जाता क्योंकि लड़ाई के जमाने में बगैर किसी अगुआ के अच्छी तरह लड़ना मुमकिन न था। इस तरह सरगना की ताकत बढ़ती गई।

जब इंतजाम करने का काम बहुत बढ़ गया तो सरगना के लिए अकेले

सब काम मुश्किल हो गया। उसने अपनी मदद के लिए दूसरे आदमियों को लिया। इन्तज़ाम करने वाले बहुत से हो गए। हां, उनका अगुआ सरग़ना ही था। इस तरह जाति दो हिस्सों में बँट गई, इन्तज़ाम करने वाले और मामूली काम करने वाले। अब सब लोग बराबर न रहे। जो लोग इन्त-ज़ाम करते थे उनका मामूली मज़दूरों पर दबाव होता था।

अगले ख़त में मैं दिखाऊँगा कि सरग़ना का इख्तियार क्योंकर बढ़ा।

: १६ :

सरगना का इख्तियार कैसे बढ़ा

मुझे उम्मीद है कि पुरानी जातियों और उनके बुजुर्गों का हाल तुम्हें रूखा न मालूम होता होगा।

मैंने अपने पिछले खत में तुम्हें बतलाया था कि उस जमाने में हरएक चीज सारी जाति की होती थी। किसी की अलग नहीं। सरगना के पास भी अपनी कोई खास चीज न होती थी। जाति के और आदमियों की तरह उसका भी एक ही हिस्सा होता था। लेकिन वह इंतजाम करने वाला था और उसका यह काम समझा जाता था कि वह जाति के माल और जायदाद की देख-रेख करता रहे। जब उसका इख्तियार बढ़ा तो उसे यह सूझी कि यह माल और असबाब जाति का नहीं, मेरा है। या शायद उसने समझा हो कि वह जाति का सरगना है इसलिए उस जाति का मुख्तार भी है। इस तरह किसी चीज को अपना समझने का खयाल पैदा हुआ। आज हरएक चीज को मेरा-तेरा कहना और समझना मामूली बात है। लेकिन जैसा मैं पहिले तुमसे कह चुका हूँ उन पुरानी जातियों के मर्द और औरत इस तरह खयाल न करते थे। तब हरएक चीज सारी जाति की होती थी। आखिर यह हुआ कि सरगना अपने ही को जाति का मुख्तार समझने लगा। इसलिए जाति का माल व असबाब उसीका हो गया।

जब सरगना मर जाता था तो जाति के सब आदमी जमा होकर कोई दूसरा सरगना चुनते थे। लेकिन आमतौर पर सरगना के खानदान के लोग

इन्तजाम के काम को दूसरो से ज्यादा समझते थे। सरदार के साथ हमेशा रहने और उसके काम में मदद देने की वजह से ये इन कामो को खूब समझ जाते थे। इसलिए जब कोई बूढ़ा सरदार मर जाता, तो जाति के लोग उसी खानदान के किसी आदमी को सरदार चुन लेते थे। इस तरह सरदार का खानदान दूसरो से अलग हो गया और जाति के लोग उसी खानदान से अपना सरदार चुनने लगे। यह तो जाहिर है कि सरदार को बड़े इख्तियार होते थे, और वह चाहता था कि उसका बेटा या भाई उसकी जगह सरदार बने। और भरसक इसकी कोशिश करता था। इसलिए वह अपने भाई या बेटे या किसी सगे रिश्तेदार को काम सिखाया करता था जिससे वह उसकी गद्दी पर बैठे। वह जाति के लोगो से कभी-कभी कह भी दिया करता था कि फलां आदमी जिसे मैंने काम सिखा दिया है मेरे बाद सरदार चुना जावे। शुरू में शायद जाति के आदमियो को यह ताकीद अच्छी न लगी हो लेकिन थोड़े ही दिनो में उन्हें इसकी आदत पड़ गई और वे उसका हुक्म मानने लगे। नए सरदार का चुनाव बन्द हो गया। बूढ़ा सरदार तै कर देता था कि कौन उसके बाद सरदार होगा और वही होता था।

इससे हमें मालूम हुआ कि सरदार की जगह मौरूसी हो गई यानी उसी खानदान में बाप के बाद बेटा या कोई और रिश्तेदार, सरदार होने लगा। सरदार को अब पूरा भरोसा हो गया कि जाति का माल असबाब दरअसल मेरा ही है यहाँ तक कि उसके मर जाने के बाद भी वह उसके खानदान में ही रहता था। अब हमें मालूम हुआ कि मेरा-तेरा का खयाल कैसे पैदा हुआ। शुरू में किसीके दिल में यह बात न थी। सब लोग मिलकर जाति के लिए काम करते थे, अपने लिए नही। अगर बहुत सी खाने की चीजें पैदा करते, तो जाति के हरएक आदमी को उसका हिस्सा मिल जाता था। जाति में अमीर-गरीब का फर्क न था। सभी लोग जाति की जायदाद में बराबर के हिस्सेदार थे।

लेकिन ज्योंही सरगना ने जाति की चीजों को हडप करना शुरू किया और उन्हें अपनी कहने लगा तो लोग अमीर और गरीब होने लगे। अगले खत में इसके बारे में मैं कुछ और लिखूंगा।

: १७ :

सरगना राजा हो गया

बूढ़े सरगना ने हमारा बहुत सा वक्त ले लिया। लेकिन हम उससे जल्द ही फुर्सत पा जायँगे या यो कहो उसका नाम कुछ और हो जायगा। मैंने तुम्हें यह बतलाने का वादा किया था कि राजा कैसे हुए और वह कौन थे ? और राजाओ का हाल समझने के लिए पुराने जमाने के सरगनो का जिक्र जरूरी था। तुमने ताड लिया होगा कि यही सरगना बाद को राजा और महाराजा बन बैठे। पहिले वह अपनी जाति का अगुआ होता था। अँगरेजी में उसे "पैट्रियार्क" कहते है। "पैट्रियार्क" लैटिन शब्द "पेटर" से निकला है जिसके माने पिता के है। "पैट्रिया" भी इसी लैटिन शब्द से निकला है जिसके माने है "पितृभूमि"। फ़ासीसी में उसे "पात्री" कहते है। संस्कृत और हिन्दी में हम अपने मुल्क को "मातृभूमि" कहते है। तुम्हें कौन पसंद है ? जब सरगना की जगह मौरूसी हो गई या बाप के बाद बेटे को मिलने लगी तो उसमें और राजा में कोई फर्क न रहा। वही राजा बन बैठा और राजा के दिमाग में यह बात समा गई कि मुल्क की सब चीजें मेरी ही है। उसने अपने को सरा मुल्क समझ लिया। एक मशहूर फ़ासीसी बादशाह ने एक मर्तबा कहा था "मै ही राज हूँ"। राजा भूल गए कि लोगो ने उन्हें सिर्फ इसलिए चुना है कि वे इतजाम करें और मुल्क की खाने की चीजें और दूसरे सामान आदमियो में बाँट दें। वे यह भी भूल गए कि वे सिर्फ इसलिए चुने जाते थे कि वह उस जाति या मुल्क में सब से

होशियार और तजुर्बेकार समझे जाते थे। वे समझने लगे कि हम मालिक हैं और मुल्क के सब आदमी हमारे नौकर हैं। असल में वे ही मुल्क के नौकर थे।
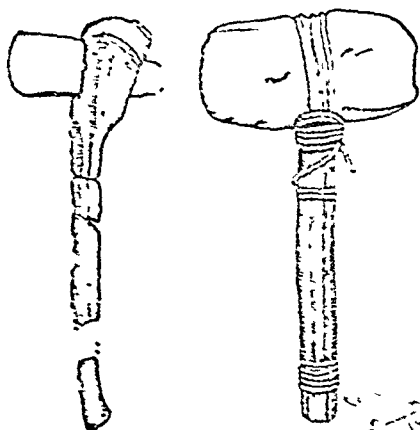
अन्तिम पत्थर काल के औज़ार

आगे चलकर जब तुम इतिहास पढ़ोगी, तो तुम्हें मालूम होगा कि राजा इतने अभिमानी हो गए कि वे समझने लगे कि प्रजा को उनके चुनाव से कोई वास्ता ही न था। वे कहने लगे कि हमें ईश्वर ने राजा बनाया है। इसे वे ईश्वर का दिया हुआ हक कहने लगे। बहुत दिनों तक वे यह बे-इंसाफी करते रहे और खूब ऐश के साथ राज के मजे उड़ाते रहे और उन-की प्रजा भूखों मरती रही। लेकिन आखिरकार प्रजा इसे बरदाश्त न कर सकी और बाज मुल्कों में उन्होंने राजाओं को मार भगाया। तुम आगे

चलकर पढ़ोगी कि इंगलैंड की प्रजा अपने राजा प्रथम चार्ल्स के खिलाफ उठ खड़ी हुई थी, उसे हरा दिया और मार डाला। इसी तरह फ्रांस की प्रजा ने भी एक बड़े हंगामे के बाद तय किया कि अब हम किसी को राजा न बनायेंगे। तुम्हें याद होगा कि हम फ्रांस के कान्सियरजरी मकान को देखने गए थे। क्या तुम हमारे साथ थीं? इसी मकान में फ्रांस का राजा और उनकी रानी मारी आन्तोनेत और और लोग कैद थे। तुम रूस की राज्य-क्रान्ति का हाल भी पढ़ोगी जब रूस की प्रजा ने कई साल हुए अपने राजा को निकाल बाहर किया जिसे ज़ार कहते थे। इससे मालूम होता है कि राजाओं के बुरे दिन आ गए और अब बहुत से मुल्कों में राजा है ही नहीं। फ्रांस,

अन्तिम पत्थर काल के औजार

जर्मनी, रूस, स्विटजरलैंड, अमरीका, चीन और बहुत से दूसरे मुल्को मे कोई राजा नहीं है। वहाँ पंचायती राज है जिसका मतलब यह है कि प्रजा समय-समय पर अपने हाकिम और अगुआ चुन लेती है और उनकी जगह मौरूसी नहीं होती।

तुम्हें मालूम है कि इगलंड में अभी तक राजा है लेकिन उसे कोई

इख्तियार नहीं है। वह कुछ भी नहीं कर सकता। सब इख्तियार पार्लमेंट के हाथ में है जिसमें प्रजा के चुने हुए प्रतिनिधि बैठते हैं। तुम्हें याद होगा कि तुमने लन्दन में पार्लमेंट देखी थी।

हिन्दुस्तान में अभी तक बहुत से राजा महाराजा और नवाब हैं। तुमने उन्हें भड़कीले कपड़े पहिने, कीमती मोटर गाड़ियों में घूमते, अपने ऊपर बहुत सा रुपया खर्च करते देखा होगा। उन्हें यह रुपया कहाँ से मिलता है? यह रिआया पर टैक्स लगा कर वसूल किया जाता है। टैक्स दिये तो इसलिए जाते हैं कि उनसे मुल्क के सभी आदमियों की मदद की जाय, स्कूल और अस्पताल, पुस्तकालय और अजायबघर खोले जावें, अच्छी सड़कें बनाई जावें और प्रजा की भलाई के लिए और बहुत से काम किये जावें। लेकिन हमारे राजा महाराजा उसी फ्रान्सीसी बादशाह की तरह अब भी यही समझते हैं कि हमीं राज हैं और प्रजा का रुपया अपने ऐश में उड़ाते हैं। वे तो इतनी शान से रहते हैं और उनकी प्रजा जो पसीना बहाकर उन्हें रुपए देती है, भूखों मरती है और उनके बच्चों के पढ़ने के लिए मदरसे भी नहीं होते।

चलकर पढ़ोगी कि इगलैंड की प्रजा अपने राजा प्रथम चार्ल्स के ख़िलाफ़ उठ खडी हुई थी, उसे हरा दिया और मार डाला। इसी तरह फ़ास की प्रजा ने भी एक बडे हगामे के बाद यह तै किया कि अब हम किसी को राजा न बनायेंगे। तुम्हें याद होगा कि हम फ़ास के कौंसियरजेरी कैदखाने को देखने गए थे। क्या तुम हमारे साथ थीं ? इसी कैदखाने में फ़ास का राजा और उसकी रानी मारी आंतानेत और और लोग रक्खे गए थे। तुम रूस की राज्य क्रान्ति का हाल भी पढोगी जब रूस की प्रजा ने कई साल हुए अपने राजा को निकाल बाहर किया जिसे 'ज़ार' कहते थे। इससे मालूम होता है कि राजाओं के बुरे दिन आ गए और अब बहुत से मुल्को में राजा है ही नहीं। फ़ास,

अन्तिम पत्थर काल के औज़ार

जर्मनी, रूस, स्विटजरलैंड, अमरीका, चीन और बहुत से दूसरे मुल्को में कोई राजा नहीं है। वहां पचायती राज है जिसका मतलब यह है कि प्रजा समय-समय पर अपने हाकिम और अगुआ चुन लेती है और उनकी जगह मौरूसी नहीं होती।

तुम्हें मालूम है कि इंगलैंड में अभी तक राजा है लेकिन उसे कोई

: १८ :

शुरू का रहन-सहन

सरगना और राजों की चर्चा हम काफी कर चुके। अब हम उस जमाने के रहन-सहन और आदमियों का कुछ हाल लिखेंगे।

हम उस पुराने जमाने के आदमियों का बहुत ज्यादा हाल तो मालूम नहीं, फिर भी पुराने पत्थर के युग और नए पत्थर के युग के आदमियों से कुछ ज्यादा ही मालूम है। आज भी बड़ी-बड़ी इमारतों के खंडहर मौजूद हैं जिन्हें बने हजारों साल हो गए। उन पुरानी इमारतों, मंदिरों और महलों को देख कर हम कुछ अंदाजा कर सकते हैं कि वे पुराने आदमी कैसे थे और उन्होंने क्या-क्या काम किए। उन पुरानी इमारतों की संगतराशी और नक्काशी से खासकर बड़ी मदद मिलती है। इन पत्थर के कामों से हमें कभी-कभी इसका पता चल जाता है कि वे लोग कैसे कपड़े पहनते थे। और भी बहुत सी बातें मालूम हो जाती हैं।

हम यह तो ठीक-ठीक नहीं कह सकते कि पहले-पहल आदमी कहाँ आबाद हुए और रहन-सहन के तरीके निकाले। बाज आदमियों का खयाल है कि जहाँ एटलांटिक सागर है वहाँ एटलांटिस नाम का एक बड़ा मुल्क था। कहते हैं कि इस मुल्क में रहने वालों का रहन-सहन बहुत ऊँचे दरजे का था, लेकिन किसी वजह से सारा मुल्क एटलांटिक सागर में समा गया और अब उसका कोई हिस्सा बाकी नहीं है। लेकिन किस्से कहानियों को छोड़ कर

हमारे पास इसका कोई सबूत नहीं है, इसलिए उसका जिक्र करने की ज़रू-रत नहीं।

कुछ लोग यह भी कहते हैं कि पुराने ज़माने में अमरीका में ऊँचे दरजे की सभ्यता फैली हुई थी। तुम्हें मालूम है कि कोलम्बस को अमरीका का पता लगाने वाला कहा जाता है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि
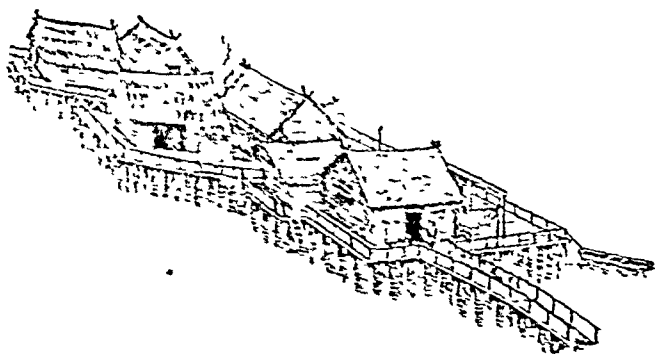
झील में बने हुए मकान

कोलम्बस के जाने के पहले अमरीका था ही नहीं। इसका खाली इतना मतलब है कि योरप वालों को कोलम्बस के पहले उसका पता न था। कोलम्बस के जाने के बहुत पहले से यह मुल्क आबाद और सभ्य था। युकेटन में, जो उत्तरी अमरीका के मेक्सिको राज्य में है, और दक्खिनी अमरीका के पीरू राज्य में, पुरानी इमारतों के खंडहर हमें मिलते हैं। इनसे इसका यकीन हो जाता है कि बहुत पुराने ज़माने में भी पीरू और युकेटन के लोगों में सभ्यता फैली हुई थी। लेकिन उनका और ज़्यादा हाल हमें अब तक नहीं

मालूम हो सका। शायद कुछ दिनों के बाद हमें उनके बारे में कुछ मालूम हो।

यूरप और एशिया को मिलाकर युरेशिया कहते हैं। से पहले मेसोपोटेमिया, मिस्र, क्रीट, हिन्दुस्तान और चीन में मिस्र अब अफ़्रीका में है लेकिन हम इसे यूरेशिया में रख सकते हैं इससे बहुत नजदीक है।

पुरानी जातियां जो इधर-उधर घूमती फिरती थीं, होना चाहती होंगी तो वे कैसी जगह पसन्द करती होंगी? होती होंगी जहां वे आसानी से खाना पा सकें। उनका जमीन में पैदा होता था। और खेती के लिए पानी का पानी न मिले तो खेत सूख जाते हैं और उनमें कुछ नहीं मालूम है कि जब चौमासे में हिन्दुस्तान में काफी ब अनाज बहुत कम होता है और अकाल पड़ जाता है। मरने लगते हैं। पानी के बग़ैर काम ही नहीं चल आदमियों को ऐसी ही जमीन चुननी पड़ी होगी जहां यही हुआ भी।

मेसोपोटेमिया में वे दजला और फेरात इन में आबाद हुए। मिस्र में नील नदी के किनारे। क़रीब सभी शहर सिंध, गंगा, जमुना इत्यादि आबाद हुए। पानी उनके लिए इतना जरूरी था समझने लगे जो उन्हें खाना और आराम की में वे नील को "पिता नील" कहते थे और उसकी में गंगा की पूजा होने लगी और अब तक उसे पवित्र उसे "गंगा माई" कहते हैं और तुमने यात्रियों का शोर मचाते सुना होगा। यह समझना मुश्किल

की पूजा करते थे क्योंकि नदियों से उनके बड़े काम निकलते थे। उनसे सिर्फ पानी ही न मिलता था, बल्कि मिट्टी और बालू भी मिलती थी जिनसे उनके खेत उपजाऊ हो जाते थे। नदी ही के पानी और मिट्टी से तो अनाज के ढेर लग जाते थे, फिर वे नदियों को क्यों न 'माता' और 'पिता' कहते। लेकिन आदमियों की आदत है कि वे पानी के असली मदद को भूल जाते हैं। वे बिना सोचे समझे लकीर पीटते चले जाते हैं। हमें याद रखना चाहिए कि नील और गंगा की बड़ाई सिर्फ इसलिए है कि उनसे आदमियों को अनाज और पानी मिलता है।

: १६ :

पुरानी दुनिया के बड़े-बड़े शहर

मैं लिख चुका हूँ कि आदमियों ने पहिले पहिल बड़ी-बड़ी नदियों के पास और उपजाऊ घाटियों में बस्तियाँ बनाईं जहाँ उन्हें खाने की चीजें और पानी इफरात से मिल सकता था। उनके बड़े-बड़े शहर नदियों के किनारे पर थे। तुमने इनमें से बाज मशहूर पुराने शहरों का नाम सुना होगा। मेसोपोटेमिया में बाबुल, नेनुवा, और असुर नाम के शहर थे। लेकिन इनमें से किसी शहर का अब पता नहीं है। हाँ, अगर बालू या मिट्टी में गहरी खुदाई होती है तो कभी-कभी उनके खंडहर मिल जाते हैं। इन हजारों बरसों में वे पूरी तरह मिट्टी और बालू से ढक गए और उनका कोई निशान भी नहीं मिलता। बाज जगहों में इन ढके हुए शहरों के ठीक ऊपर नए शहर बस गए। जो लोग इन पुराने शहरों की खोज कर रहे हैं उन्हें गहरी खुदाई करनी पड़ी है और कभी-कभी तले ऊपर कई शहर मिले हैं। यह बात नहीं है कि ये शहर एक साथ ही तले ऊपर रहे हों। एक शहर सैकड़ों बर्षों तक आबाद रहा होगा, लोग वहाँ पैदा हुए होंगे और मरे होंगे और कई पुश्तों तक यही सिलसिला जारी रहा होगा। धीरे-धीरे शहर की आबादी घटने लगी होगी और वह वीरान हो गया होगा। आखिर वहाँ कोई न रह गया होगा और शहर मलबे का एक ढेर बन गया होगा। तब उसपर बालू और गर्द जमने लगी होगी और यह शहर उसके नीचे दब गए होंगे क्योंकि कोई आदमी सफाई करने वाला न था। एक मुद्दत के बाद

कि इन शहरों के बनने और बिगड़ने और उनकी जगह नए शहरों के बनने में कितने युग बीत गए होंगे। जब कोई आदमी सत्तर या अस्सी साल का हो जाता है, तो हम उसे बुड्ढा कहते हैं। लेकिन उन हज़ारों बरसों के सामने सत्तर या अस्सी साल क्या हैं? जब ये शहर रहे होंगे तो उनमें कितने छोटे-छोटे बच्चे बड़े होकर मर गए होंगे और कई पीढ़ियाँ गुज़र गई होंगी। ओर अब बाबुल ओर नेनुवा का सिर्फ नाम बाकी रह गया है। एक दूसरा बहुत पुराना शहर दमिश्क था। लेकिन दमिश्क वीरान नहीं हुआ। वह अब तक मौजूद है और बड़ा शहर है। कुछ लोगों का ख्याल है कि दमिश्क दुनिया का सबसे पुराना शहर है। हिन्दुस्तान में भी बड़े-बड़े शहर नदियों के किनारे ही पर हैं। सब से पुराने शहरों में एक का नाम इन्द्रप्रस्थ था जो कहीं देहली के आस पास था, लेकिन इन्द्रप्रस्थ का अब निशान भी नहीं है। बनारस या काशी भी बड़ा पुराना शहर है, शायद दुनिया के सब से पुराने शहरों में हो। इलाहाबाद, कानपुर और पटना और बहुत से दूसरे शहर जो तुम्हें खुद याद होंगे नदियों ही के किनारे हैं। लेकिन ये बहुत पुराने नहीं हैं। हाँ, प्रयाग या इलाहाबाद और पटना जिसका पुराना नाम पाटलिपुत्र था कुछ पुराने हैं।

इसी तरह चीन में भी पुराने शहर हैं।

: २० :

मिस्र और क्रीट

पुराने ज़माने के शहरों और गांवों में किस तरह के लोग रहते थे? उनका कुछ हाल उनके बनाए हुए बड़े-बड़े मकानों और इमारतों से मालूम होता है। कुछ हाल उन पत्थर की तख्तियों की लिखावट से भी मालूम होता है जो वे छोड़ गए हैं। इसके अलावा कुछ बहुत पुरानी किताबें भी हैं जिनसे उस पुराने ज़माने का बहुत कुछ हाल मालूम हो जाता है।

मिस्र में अब भी बड़े-बड़े मीनार और स्फिंक्स मौजूद हैं। लक्सर और दूसरी जगहों में बहुत बड़े मन्दिरों के खंडहर नज़र आते हैं। तुमने इन्हें देखा नहीं है लेकिन जिस वक़्त हम स्वेज़ नहर से गुज़र रहे थे, वे हम से बहुत दूर न थे। लेकिन तुमने उनकी तसवीरें देखी हैं। शायद तुम्हारे पास उनकी तसवीरों के पोस्टकार्ड मौजूद हों। स्फिंक्स औरत के सिर वाले शेर की मूर्ति को कहते हैं। इसका डीलडौल बहुत बड़ा है। किसी को यह नहीं मालूम कि यह मूर्ति क्यों बनाई गई और उसका क्या मतलब है। उस औरत के चेहरे पर एक अजीब मुर्झाई हुई मुसकिराहट है। और किसी की समझ में नहीं आता कि वह क्यों मुसकिरा रही है। किसी आदमी के बारे में यह कहना कि वह स्फिंक्स की तरह है, इसका यह मतलब है कि तुम उसे बिल्कुल नहीं समझते।

मीनार भी बहुत लम्बे चौड़े हैं। दरअसल वे मिस्र के पुराने बाद-

शाहों के मकबरे हैं जिन्हें फिरऊन कहते थे। तुम्हें याद है कि तुमने लन्दन के अजायबघर में मिस्र की ममी देखी थी? ममी किसी आदमी या जानवर की लाश को कहते हैं जिसमें कुछ ऐसे तेल और मसाले लगा दिये गए हों कि वह सड़ न सके। फिरऊनों की लाशों की ममी बना दी जाती थी और तब उन बड़े-बड़े मीनारों में रख दी जाती थीं। लाशों के पास सोने और चांदी के गहने और सजावट की चीजें और खाना रख दिया जाता था। क्योंकि लोग खयाल करते थे कि शायद मरने के बाद उन्हें इन चीजों की जरूरत हो। दो तीन साल हुए कुछ लोगों ने इनमें से एक मीनार के अन्दर एक फिरऊन की लाश पाई जिसका नाम तूतन खामिन था। उसके पास बहुत सी खूबसूरत और कीमती चीजें रखी हुई मिलीं।

उस जमाने में मिस्र में खेती को सींचने के लिए अच्छी अच्छी नहरें और झीलें भी बनाई जाती थीं। मेरीडू नाम की झील खास तौर पर मशहूर थी। इससे मालूम होता है कि पुराने जमाने के मिस्र के रहने वाले कितने होशियार थे और उन्होंने कितनी तरक्क़ी की थी। इन नहरों और झीलों और बड़े-बड़े मीनारों को अच्छे-अच्छे इंजीनियरों ने ही तो बनाया होगा।

कॅंडिया या क्रीट एक छोटा सा टापू है जो भूमध्य सागर में है। सईद बन्दर से वेनिस जाते वक्त हम उस टापू के पास से हो कर निकले थे। उस छोटे से टापू में उस पुराने जमाने में बहुत अच्छी सभ्यता पाई जाती थी। नोसोज में एक बहुत बड़ा महल था और उसके खंडहर अब तक मौजूद हैं। इस महल में ग़ुसुलखाने थे और पानी की नलें भी थीं जिन्हें नादान लोग नए जमाने की निकली हुई चीज समझते हैं। इसके अलावा वहां खूबसूरत मिट्टी के बरतन, पत्थर की नक्क़ाशी, तसवीरें और धातु और हाथी दांत के बारीक काम भी होते थे। इस छोटे से टापू में लोग बड़ी शांति से रहते थे और उन्होंने खूब तरक्क़ी की थी।

तुमने मीनास बादशाह का हाल पढ़ा होगा जिसकी निस्बत मशहूर है कि जिस चीज को वह छू लेता था वह सोना हो जाती थी। वह खाना न खा सकता था क्योंकि खाना सोना हो जाता था और सोना तो खाने की चीज नहीं। उसके लालच की उसे यह सजा दी गई थी। यह है तो एक मजेदार कहानी लेकिन इससे हमें यह मालूम होता है कि सोना इतनी अच्छी और कारआमद चीज नहीं है जितना लोग ख़याल करते हैं। क्रीट के सब राजा मीनास कहलाते थे और यह कहानी उन्हींमें से किसी राजा की होगी।

क्रीट की एक और कथा है जो शायद तुमने सुनी हो। वहां मैनोटार नाम का एक देव था जो आधा आदमी और आधा बैल था। कहा जाता है कि जवान आदमी और लड़कियां, उसे खाने को दी जाती थीं। मैं तुमसे पहिले ही कह चुका हूं कि मजहब का ख़याल शुरू में किसी अनजानी चीज के डर से पैदा हुआ। लोगों को प्रकृति का कुछ ज्ञान न था, न उन बातों को समझते थे जो दुनिया में बराबर होती रहती थीं। इसलिए डर के मारे वे बहुत सी बेवकूफी की बातें किया करते थे। यह बहुत मुमकिन है कि लड़के और लड़कियों का यह बलिदान किसी असली देव को न किया जाता हो बल्कि वह महज ख़याली देव हो क्योंकि मैं समझता हूं ऐसा देव कभी हुआ ही नहीं।

उस पुराने जमाने में सारे संसार में मर्दों और औरतों का फ़र्जी देवताओं के लिए बलिदान किया जाता था। यही उनकी पूजा का ढंग था। मिस्र में लड़कियां नील नदी में डाल दी जाती थीं। लोगों का ख़याल था कि इससे पिता नील खुश होंगे।

बड़ी खुशी की बात है कि अब आदमियों का बलिदान नहीं किया जाता, हां, शायद दुनिया के किसी कोने में कभी-कभी हो जाता हो। लेकिन अब भी ईश्वर को खुश करने के लिए जानवरों का बलिदान किया जाता है। किसीकी पूजा करने का यह कितना अनोखा ढंग है !

: २१ :

चीन और हिन्दुस्तान

हम लिख चुके हैं कि शुरू में मेसोपोटेमिया, मिस्र और भूमध्य सागर के छोटे से टापू क्रीट में सभ्यता शुरू हुई और फैली। उसी जमाने में चीन और हिन्दुस्तान में भी ऊँचे दरजे की सभ्यता शुरू हुई और अपने ढग पर फैली।

दूसरी जगहो की तरह चीन में भी लोग बडी नदियो की घाटियो में आबाद हुए। यह उस जाति के लोग थे जिन्हें मगोल कहते हैं। वे पीतल के खूबसूरत बर्तन बनाते थे और कुछ दिनो बाद लोहे के बर्तन भी बनाने लगे। उन्होने नहरें और अच्छी-अच्छी इमारतें बनाई, और लिखने का एक नया ढग निकाला। यह लिखावट हिन्दी, उर्दू या अँगरेजी से बिलकुल नही मिलती। यह एक किस्म की तसवीरदार लिखावट थी। हरएक शब्द और कभी-कभी छोटे-छोटे जुमलो की भी तसवीर होती थी। पुराने जमाने में मिस्र, क्रीट और बाबुल में भी तसवीरदार लिखावट होती थी। उसे अब चित्रलिपि कहते हैं। तुमने यह लिखावट अजायबघर की बाज किताबो में देखी होगी। मिस्र और पश्चिम के मुल्को में यह लिखावट सिर्फ बहुत पुरानी इमारतो में पाई जाती है। उन मुल्को में इस लिखावट का बहुत दिनो तक रिवाज नहीं रहा। लेकिन चीन में अब भी एक किस्म की तसवीरदार लिखावट मौजूद है और ऊपर से नीचे को लिखी जाती है

अँगरेजी या हिन्दी की तरह बाएँ से दाईं तरफ या उर्दू की तरह दाहिने से बाईं तरफ नहीं।

हिन्दुस्तान में बहुत से पुराने जमाने की इमारतों के खंडहर शायद अभी तक जमीन में नीचे दबे पड़े हैं। जब तक उन्हें कोई खोद न निकाले तब तक हमें उनका पता नहीं चलता। लेकिन उत्तर में बाज बहुत पुराने खंडहरों की खुदाई हो चुकी है। यह तो हमें मालूम ही है कि बहुत पुराने जमाने में जब आर्य लोग हिन्दुस्तान में आए तो यहां द्रविड जाति के लोग रहते थे। और उनकी सभ्यता भी ऊँचे दरजे की थी। वे दूसरे मुल्क वालों के साथ व्यापार करते थे। वे अपनी बनाई हुई बहुत सी चीजें मेसोपोटेमिया और मिस्र में भेजा करते थे। समुद्री रास्ते से वे खास कर चावल और मसाले और साखू की इमारती लकड़ियां भी भेजा करते थे। कहा जाता है कि मेसोपोटेमिया के 'उर' नामी शहर के बहुत से पुराने महल दक्खिनी हिन्दुस्तान से आई हुई साखू की लकड़ी के थे। यह भी कहा जाता है कि सोना, मोती, हाथी दांत, मोर और बन्दर हिन्दुस्तान से पच्छिम के मुल्कों को भेजे जाते थे। इससे मालूम होता है कि उस जमाने में हिन्दुस्तान और दूसरे मुल्कों में बहुत व्यापार होता था। व्यापार तभी बढ़ता है जब लोग सभ्य होते हैं।

उस जमाने में हिन्दुस्तान और चीन में छोटी-छोटी रियासतें या राज थे। इनमें से किसी मुल्क में भी एक राज न था। हरएक छोटा शहर जिसमें कुछ गांव और खेत होते थे एक अलग राज होता था। ये शहरी रियासतें कहलाती हैं। उस पुराने जमाने में भी इनमें से बहुत सी रियासतों में पंचायती राज था। बादशाह न थे राज का इन्तजाम करने के लिए चुने हुए आदमियों की एक पंचायत होती थी। फिर भी बाज रियासतों में राजा का राज था। गोकि इन शहरी रियासतों की सरकारें अलग होती थीं, लेकिन कभी-कभी वे एक दूसरे की मदद किया करती थीं। कभी-कभी
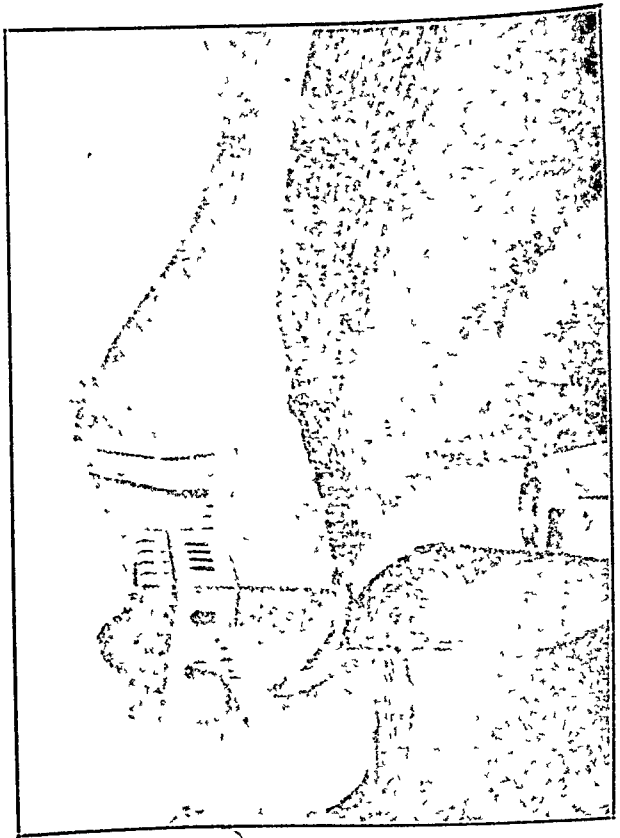
चीन की बड़ी दीवार

एक बडी रियासत कई छोटी रियासतों की अगुआ बन जाती थी।

चीन में कुछ ही दिनों बाद इन छोटी-छोटी रियासतों की जगह एक बहुत बडा राज हो गया। इसी राज के जमाने में चीन की बडी दीवार बनाई गई थी। तुमने इस बडी दीवार का हाल पढा है। वह कितनी अजीबोग़रीब चीज है। वह समुद्र के किनारे से ऊँचे-ऊँचे पहाडों तक बनाई गई थी, ताकि मंगोल जाति के लोग चीन में घुस कर न आ सकें। यह दीवार १४०० मील लम्बी, २० से ३० फीट तक ऊँची और २५ फीट चौडी है। थोडी-थोडी दूर पर किले और बुर्ज हैं। अगर ऐसी दीवार हिन्दुस्तान में बने तो वह उत्तर में लाहौर से लेकर दक्षिण में मदरास तक चली जायगी। वह दीवार अब भी मौजूद है और अगर तुम चीन जाओ तो उसे देख सकती हो।
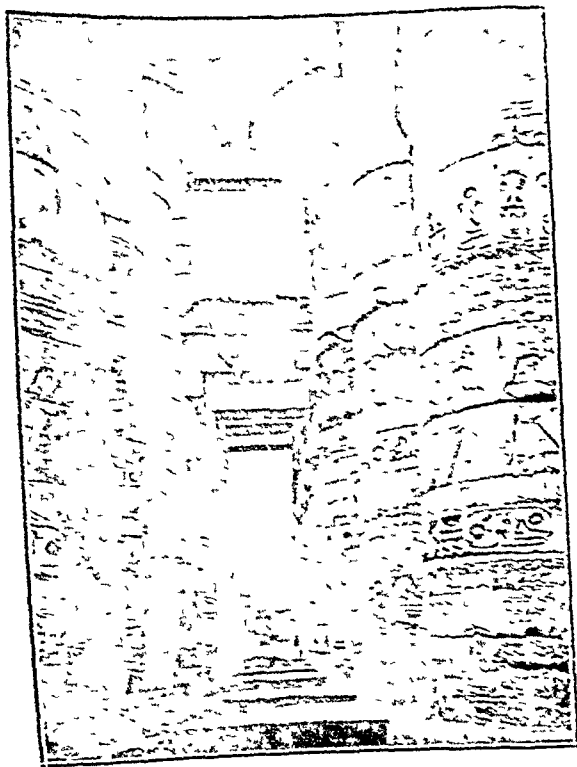
कार्नक के मंदिर के खंडहर

वाले आदमियों को महीनों तक जमीन के दर्शन न होते थे। अगर खाना कम पड जाता था तो उन्हें खारे समुद्र में कोई चीज न मिल सकती थी, जब तक कि वे किसी मछली या चिड़िया का शिकार न करें। समुद्र खतरे और जोखिम से भरा हुआ था। पुराने जमाने के मुसाफिरों को जो खतरे पेश आते थे उसका बहुत कुछ हाल किताबों में मौजूद है।

लेकिन इस जोखिम के होते हुए भी लोग समुद्री सफर करते थे। मुमकिन है कुछ लोग इसलिए सफर करते हों कि उन्हें बहादुरी के काम पसंद थे, लेकिन ज्यादातर लोग सोने और दौलत के लालच से सफर करते थे। वे व्यापार करने जाते थे, माल खरीदते थे और बेचते थे, और धन कमाते थे। व्यापार क्या है ? आज तुम बड़ी-बड़ी दूकानें देखती हो और उनमें जाकर अपनी जरूरत की चीज खरीद लेना कितना सहल है। लेकिन क्या तुमने ध्यान दिया है कि जो चीजें तुम खरीदती हो वे आती कहाँ से हैं ? तुम इलाहाबाद की एक दूकान में एक ऊनी शाल खरीदती हो। वह कश्मीर से यहाँ तक सारा रास्ता तै करता हुआ आया होगा और ऊन कश्मीर और लद्दाख की पहाडियों में भेडों की खाल पर पैदा हुआ होगा। दाँत का मंजन जो तुम खरीदती हो शायद जहाज और रेलगाडियों पर होता हुआ अमरीका से आया हो। इसी तरह चीन, जापान, पैरिस या लंदन की बनी हुई चीजें भी मिल सकती हैं। विलायती कपडे के एक छोटे से टुकडे को ले लो जो यहाँ बाजार में बिकता है। रुई पहिले हिन्दुस्तान में पैदा हुई और इंगलैंड भेजी गई। एक बडे कारखाने ने इसे खरीदा, साफ किया, उस का सूत बनाया और तब कपडा तैयार किया। यह कपडा फिर हिन्दुस्तान आया और बाजार में बिकने लगा। बाजार में बिकने के पहिले इसे लौटा फेरी में कितने हजार मीलों का सफर करना पडा ! यह नादानी की बात मालूम होती है कि हिन्दुस्तान में पैदा होने वाली रुई इतनी दूर इंगलैंड भेजी जाय, वहाँ उसका कपडा बने और फिर हिन्दुस्तान में आवे। इसमें

कितना वक़्त, रुपया और मिहनत बरबाद हो जाती है। अगर रुई का कपड़ा हिन्दुस्तान ही में बने तो वह ज़रूर ज़्यादा सस्ता और अच्छा होगा। तुम जानती हो कि हम विलायती कपड़े नहीं ख़रीदते। हम खद्दर पहिनते हैं क्योंकि जहाँ तक मुमकिन हो अपने मुल्क में पैदा होनेवाली चीज़ों को ख़रीदना अक़्लमंदी की बात है। हम इसलिए भी खद्दर ख़रीदते और पहिनते हैं कि उससे उन ग़रीब आदमियों की मदद होती है जो कातते और बुनते हैं।

अब तुम्हें मालूम हो गया होगा कि आजकल व्यापार कितनी पेचीदा चीज़ है। बड़े-बड़े जहाज़ एक मुल्क का माल दूसरे देश को पहुँचाते रहते हैं। लेकिन पुराने ज़माने में यह बात न थी।

जब हम पहिले पहिल किसी एक जगह आबाद हुए तो हमें व्यापार करना बिलकुल न आता था। आदमी को अपनी ज़रूरत की चीज़ें आप बनानी पड़ती थीं। यह सच है कि उस वक़्त आदमी को बहुत चीज़ों की ज़रूरत न थी। जैसा तुमसे पहिले कह चुका हूँ। उसके बाद जाति में काम बाँटा जाने लगा। लोग तरह-तरह के काम करने लगे और तरह-तरह की चीज़ें बनाने लगे। कभी-कभी ऐसा होता होगा कि एक जाति के पास एक चीज़ ज़्यादा होती होगी और दूसरी जाति के पास दूसरी चीज़। इसलिए अपनी-अपनी चीज़ों को बदल लेना उनके लिए बिलकुल सीधी बात थी। मिसाल के तौर पर एक जाति एक बोरे चने पर एक गाय दे देती होगी। उस ज़माने में रुपया न था। चीज़ों का सिर्फ़ बदला होता था। इस तरह बदला शुरू हुआ। इसमें कभी-कभी दिक़्क़त पैदा होती होगी। एक बोरे चने या इसी तरह की किसी दूसरी चीज़ के लिए एक आदमी को एक गाय या दो भेड़ें ले जानी पड़ती होंगी। लेकिन फिर भी व्यापार तरक़्क़ी करता रहा।

जब सोना और चाँदी निकलने लगा तो लोगों ने उसे व्यापार के लिए

काम में लाना शुरू किया। उन्हें ले जाना ज्यादा आसान था। और धीरे-धीरे माल के बदले में सोने या चांदी देने का रिवाज निकल पड़ा। जिस आदमी को पहिले पहिल यह बात सूझी होगी वह बहुत होशियार होगा। सोने चाँदी के इस तरह काम में लाने से व्यापार करना बहुत आसान हो गया। लेकिन उस वक्त भी आजकल की तरह सिक्के न थे। सोना तराजू पर तोल कर दूसरे आदमी को दे दिया जाता था। उसके बहुत दिनों के बाद सिक्के का रिवाज हुआ और इससे व्यापार और बदले में और भी सुभीता हो गया। तब तोलने की जरूरत न रही क्योंकि सभी आदमी सिक्के की कीमत जानते थे। आजकल सब जगह सिक्के का रिवाज है। लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि निरा रुपया हमारे किसी काम का नहीं है। यह हमें अपनी जरूरत की दूसरी चीजों के लेने में मदद देता है। इससे चीजों का बदलना आसान हो जाता है। तुम्हें राजा मीनास का किस्सा याद होगा जिसके पास सोना तो बहुत था लेकिन खाने को कुछ नहीं। इसलिए रुपया बेकार है जब तक हम उससे जरूरत की चीजें न खरीद लें।

मगर आजकल भी तुम्हें देहातों में ऐसे लोग मिलेंगे जो सचमुच चीजों का बदला करते हैं और दाम नहीं देते। लेकिन आम तौर पर रुपया काम में लाया जाता है क्योंकि इसमें बहुत ज्यादा सुभीता है। बाज नादान लोग समझते हैं कि रुपया खुद ही बहुत अच्छी चीज है और वह उसे खर्च करने के बदले बटोरते और गाड़ते हैं। इससे मालूम हो जाता है कि उन्हें यह नहीं मालूम है कि रुपए का रिवाज कैसे पड़ा और यह दर असल क्या है?

: २३ :

भाषा, लिखावट और गिन्ती

हम तरह-तरह की भाषाओं का पहले ही जिक्र कर चुके हैं और दिखा चुके हैं कि उनका आपस में क्या नाता है। आज हम यह विचार करेंगे कि लोगों ने बोलना क्योंकर सीखा।

हमें मालूम है कि जानवरों की भी कुछ बोलियां होती हैं। लोग कहते हैं कि बंदरों में थोड़ी सी मामूली चीजों के लिए शब्द या बोलियां मौजूद हैं। तुमने बाज जानवरों की अजीब आवाजें भी सुनी होंगी जो वे डर जाने पर और अपने भाई बंदों को किसी खतरे की खबर देने के लिए मुंह से निकालते हैं। शायद इसी तरह आदमियों में भी भाषा की शुरुआत हुई। शुरू में बहुत सीधी सादी आवाजें रही होंगी। जब वे किसी चीज को देख कर डर जाते होंगे और दूसरों को उसकी खबर देना चाहते होंगे तो वे एक खास तरह की आवाज निकालते होंगे। शायद इसके बाद मजदूरों की बोलियां शुरू हुईं। जब बहुत से आदमी एक साथ कोई काम करते हैं तो वे मिलकर एक तरह का शोर मचाते हैं। क्या तुमने आदमियों को कोई चीज खींचते या कोई भारी बोझ उठाते नहीं देखा है? ऐसा मालूम होता है कि एक साथ हांक लगाने से उन्हें कुछ सहारा मिलता है। यही बोलियां पहले पहल आदमी के मुंह से निकली होंगी।

धीरे-धीरे और शब्द बनते गए होंगे—जैसे, पानी, आग, घोड़ा, भालू। पहले शायद सिर्फ नाम ही थे, क्रियाएं न थीं। अगर कोई आदमी यह कहता

: २५ :

आदमियों के अलग

लड़कों, लड़कियों और सयानों को
ढंग से पढ़ाया जाता है। उन्हें
नाम और लड़ाइयों की तारीखें
दरअसल इतिहास लड़ाइयों का,
पतियों का नाम नहीं है। इतिहास क
के आदमियों का हाल बतलाए, कि
और क्या सोचते थे, किस बात से
होता था, उनके सामने क्या-क्या
उनपर काबू पाया। अगर हम
बहुत सी बातें मालूम होंगी।
आफत हमारे सामने आए, तो
पा सकते हैं। पुराने जमाने का हाल
कि लोगों की हालत पहिले से अच्छी
की है या नहीं।

यह सच है कि हमें पुराने
कुछ न कुछ सबक लेना चाहिए।
पुराने जमाने में भिन्न-भिन्न जाति के
मैं तुम्हें बहुत से खत लिख

अब तक हमने बहुत पुराने ज़माने ही की चर्चा की है, जिसके बारे में हमें थोड़ी ही सी बातें मालूम हैं। इसे हम इतिहास नहीं कह सकते। हम इसे इतिहास की शुरुआत, या इतिहास का उदय कह सकते हैं। जल्द ही हम बाद के ज़माने का ज़िक्र करेंगे जिससे हम ज़्यादा वाक़िफ़ हैं और जिसे ऐतिहासिक काल कह सकते हैं। लेकिन उस पुरानी सभ्यता का ज़िक्र छोड़ने के पहले आओ हम उसपर फिर एक निगाह डालें और इसका पता लगावें कि उन ज़माने में आदमियों की कौन-कौन सी क़िस्में थीं।

हम यह पहले देख चुके हैं कि पुरानी जातियों के आदमियों ने तरह-तरह के काम करने शुरू किए। काम या पेशे का बँटवारा हो गया। हमने यह भी देखा है कि जाति के सरपंच या सरगना ने अपने परिवार को दूसरों से अलग कर लिया और काम का इंतज़ाम करने लगा। वह ऊँचे दरजे का आदमी बन बैठा, या यों समझ लो कि उनका परिवार औरों से ऊँचे दरजे में आ गया। इस तरह आदमियों के दो दरजे हो गए—एक इंतज़ाम करता था और हुक्म देता था, और दूसरा असली काम करता था। और यह तो ज़ाहिर ही है कि इंतज़ाम करनेवाले दरजे का इख़्तियार ज़्यादा था और इसके ज़ोर से उन्होंने वह सब चीज़ें ले लीं जिन पर वह हाथ बटा सके। वे ज़्यादा मालदार हो गए और काम करनेवालों की कमाई को दिन-दिन ज़्यादा हड़पने लगे।

इसी तरह ज्यों-ज्यों काम की बाँट होती गई और और दरजे पैदा होते गए। राजा और उसका परिवार तो था ही, उसके दरबारी भी पैदा हो गए। वे मुल्क का इन्तज़ाम करते थे और दुश्मनों से उसकी हिफ़ाज़त करते थे। वे आमतौर पर कोई दूसरा काम न करते थे।

मंदिरों के पुजारियों और नौकरों का एक दूसरा दरजा था। उन ज़माने में इन लोगों का बड़ा रोब-दाब था और हम उनका ज़िक्र फिर करेंगे।

तीसरा दरजा व्यापारियों का था। ये वे रोज़गार करते थे जो एक

मुल्क का माल दूसरे मुल्क में ले जाते थे, माल खरीदते थे और बेचते थे और दूकानें खोलते थे।

चौथा दरजा कारीगरों का था, जो हरएक किस्म की चीजें बनाते थे, सूत कातते और कपड़े बुनते थे, मिट्टी के बरतन बनाते थे, पीतल के बरतन गढ़ते थे, सोने और हाथीदांत की चीजें बनाते थे और बहुत से और काम करते थे। ये लोग अक्सर शहरों में या शहरों के नजदीक रहते थे, लेकिन बहुत से देहातों में भी बसे हुए थे।

सबसे नीचा दरजा उन किसानों और मजदूरों का था जो खेतों में या शहरों में काम करते थे। इस दरजे में सबसे ज्यादा आदमी थे। और सभी दरजों के लोग उन्हीं पर दांत लगाए रहते थे और उनसे कुछ न कुछ ऐंठते रहते थे।

: २५ :

राजा, मन्दिर और पुजारी

हमने पिछले खत में लिखा था कि आदमियों के पांच दरजे बन गए। सबसे बड़ी जमाअत मजदूर और किसानों की थी। किसान जमीन जोतते थे और खाने की चीजें पैदा करते थे। अगर किसान या और लोग जमीन न जोतते और खेती न होती तो या तो अनाज पैदा ही न होता, या होता तो बहुत कम। इसलिए किसानों का दरजा बहुत जरूरी था। वे न होते तो सब लोग भूखों मर जाते। मजदूर भी खेतों या शहरों में बहुत फायदे के काम करते थे। लेकिन इन अभागों को इतना जरूरी काम करने और हरएक आदमी के काम आने पर भी मुश्किल से गुजारे भर को मिलता था। उनकी कमाई का बड़ा हिस्सा दूसरों के हाथ पड़ जाता था खास कर राजा और उसके दरजे के दूसरे आदमियों और अमीरों के हाथ। उसकी टोली के दूसरे लोग जिनमें दरबारी भी शामिल थे उन्हें बिल्कुल चूस लेते थे।

हम पहले लिख चुके हैं कि राजा और उसके दरबारियों का बहुत दबाव था। शुरू में जब जातियां बनीं, तो जमीन किसी एक आदमी की न होती थी, जाति भर की होती थी। लेकिन जब राजा और उसकी टोली के आदमियों की ताकत बढ़ गई तो वे कहने लगे कि जमीन हमारी है। वे जमींदार हो गए और बेचारे किसान जो छाती फाड़ कर खेती-बारी करते थे, एक तरह से महज उनके नौकर हो गए। फल यह हुआ कि किसान

खेती करके जो कुछ पैदा करते थे वह बँट जाता था और बड़ा हिस्सा जमीं-दार के हाथ लगता था।

बाज मन्दिरों के कब्जे में भी जमीन थी, इसलिए पुजारी भी जमीं-दार हो गए। मगर ये मन्दिर और उनके पुजारी थे कौन? मैं एक खत में लिख चुका हूँ कि शुरू में जंगली आदमियों को ईश्वर और मजहब का खयाल इस वजह से पैदा हुआ कि दुनिया की बहुत सी बातें उनकी समझ में न आती थीं और जिस बात को वे समझ न सकते थे, उससे डरते थे। उन्होंने हरएक चीज को देवता या देवी बना लिया, जैसे नदी, पहाड़, सूरज, पेड़, जानवर और बाज ऐसी चीजें जिन्हें वे देख तो न सकते थे पर कयास करते थे, जैसे भूत-प्रेत। वे इन देवताओं से डरते थे, इसलिए उन्हें हमेशा यह खयाल होता था कि ये उन्हें सजा देना चाहते हैं। वे अपने देवताओं को भी अपनी ही तरह क्रोधी और निर्दयी समझते थे और उनका गुस्सा ठंडा करने या उन्हें खुश करने के लिए कुरबानियाँ किया करते थे।

इन्हीं देवताओं के लिए मन्दिर बनने लगे। मन्दिर के भीतर एक मंडप होता था जिसमें देवता की मूर्ति होती थी। वे किसी ऐसी चीज की पूजा कैसे करते जिसे वे देख ही न सकें। यह जरा मुश्किल है। तुम्हें मालूम है कि छोटा बच्चा उन्हीं चीजों का खयाल कर सकता है जिन्हें वह देखता है। शुरू जमाने के लोगों की हालत कुछ बच्चों की सी थी। चूँकि वे मूर्ति के बिना पूजा ही न कर सकते थे, वे अपने मन्दिरों में मूर्तियाँ रखते थे। यह कुछ अजीब बात है कि ये मूर्तियाँ बराबर डरावने, कुरूप जानवरों की होती थीं, या कभी-कभी आदमी और जानवर की मिली हुई। मिस्र में एक जमाने में बिल्ली की पूजा होती थी, और मुझे याद आता है कि एक दूसरे जमाने में बन्दर की। समझ में नहीं आता कि लोग ऐसी भयानक मूर्तियों की पूजा क्यों करते थे। अगर मूर्ति ही पूजना चाहते थे तो उसे खूबसूरत क्यों न बनाते थे? लेकिन शायद उनका खयाल था कि देवता

डरावने होते हैं, इसीलिए वे उनकी ऐसी भयानक मूर्तियां बनाते थे।

उस जमाने में शायद लोगों का यह ख़याल न था कि ईश्वर एक है, या वह कोई बड़ी ताकत है, जैसा लोग आज समझते हैं। वे सोचते होंगे कि बहुत से देवता और देवियां हैं, जिनमें शायद कभी-कभी लड़ाइयां भी होती हों। अलग-अलग शहरों और मुल्कों के देवता भी अलग-अलग होते थे।

मन्दिरों में बहुत से पुजारी और पुजारिनें होती थीं। पुजारी लोग आमतौर पर लिखना पढ़ना जानते थे और दूसरे आदमियों से ज्यादा पढ़े लिखे होते थे। इसलिए राजा लोग उनसे सलाह लिया करते थे। उस जमाने में किताबों को लिखना या नकल करना पुजारियों ही का काम था। उन्हें कुछ विद्यायें आती थीं, इसलिए वे पुराने जमाने के ऋषि समझे जाते थे। वे हकीम भी होते थे और अक्सर, महज यह दिखाने के लिए कि वे लोग कितने पहुँचे हुए हैं, वे लोगों के सामने जादू के करतब किया करते थे। लोग सीधे और मूर्ख तो थे ही; वे पुजारियों को जादूगर समझते थे और उनसे थर-थर कांपते थे।

पुजारी लोग हर तरह से आदमियों की जिन्दगी के कामों में मिले-जुले रहते थे। वही उस जमाने के अक्लमन्द आदमियों में थे और हरएक आदमी मुसीबत या बीमारी में उनके पास जाता था। वे आदमियों के लिए बड़े-बड़े त्योहारों का इंतजाम करते थे। उन जमाने में पत्रे न थे, ख़ास कर ग़रीब आदमियों के लिए। वे त्योहारों ही से दिनों का हिसाब लगाते थे।

पुजारी लोग प्रजा को ठगते और धोखा देते थे। लेकिन इनके साथ कई बातों में उनकी मदद भी करते और उन्हें आगे भी बढ़ाते थे।

मुमकिन है कि जब लोग पहले पहल शहरों में बसने लगे हों तो उन पर राज करनेवाले राजा न रहे हों, पुजारी ही रहे हों। बाद को राजा आए होंगे और चूंकि ये लोग लड़ने में ज्यादा होशियार थे, उन्होंने पुजा-

रियो को निकाल दिया होगा। बाज जगहो में एक ही आदमी राजा और पुजारी दोनो ही होता था, जैसे मिस्र के फिरऊन। फिरऊन लोग अपनी जिन्दगी ही में आधे देवता समझे जाने लगे थे, और मरने के बाद तो वे पूरे देवताओ की तरह पुजने लगे।

: २६ :

पीछे की तरफ एक नजर

तुम मेरी चिट्ठियों से ऊब गई होगी! जरा दम लेना चाहती होगी। खैर, कुछ अरसे तक मैं तुम्हें नई बातें न लिखूंगा। हमने थोड़े से खतों में हजारों लाखों बरसों की दौड़ लगा डाली है। मैं चाहता हूं कि जो कुछ हम देख आए हैं उसपर तुम जरा गौर करो। हम उस जमाने से चले थे जब जमीन सूरज ही का एक हिस्सा थी, तब वह उससे अलग हो कर धीरे-धीरे ठंडी हो गई। उसके बाद चांद ने उछाल मारी और जमीन से निकल भागा—मुद्दतों तक यहां कोई जानदार न था। तब लाखों, करोड़ों बरसों में, धीरे-धीरे जानदारों की पैदाइश हुई। दस लाख बरसों की मुद्दत कितनी होती है इसका तुम्हें कुछ अंदाजा होता है? इतनी बड़ी मुद्दत का अंदाजा करना निहायत मुश्किल है। तुम अभी कुछ दस बरस की हो और कितनी बड़ी हो गई हो! खासी कुमारी हो गई हो। तुम्हारे लिए सौ साल ही बहुत हैं। फिर कहां हजार और कहां लाख जितने भी हजार होते हैं! हमारा छोटा सा सिर इसका ठीक अंदाजा कर ही नहीं सकता। लेकिन हम अपने दिल में कितनी शान की लेते हैं और जरा-जरा सी बातों पर झुंझला उठते हैं और घबरा जाते हैं। लेकिन दुनिया के इन पुराने इतिहास में इन छोटी-छोटी बातों की हकीकत ही क्या? इतिहास के इन लम्बे युगों का हाल पढ़ने और उनपर विचार करने से हमारी आंखें खुल जायेंगी और हम छोटी-छोटी बातों से परेशान न होंगे।

अगर तुम बेशुमार युगो का ख्याल करो जब किसी जानदार का नाम तक न था। फिर उस बड़े जमाने को सोचो जब सिर्फ जानवर ही जानदार थे। दुनिया में कहीं आदमी का पता नहीं है। जानवर पैदा होते है और लाखो साल तक बेखटके इधर उधर कुलेलें किया करते हैं। कोई आदमी नहीं है जो उनका शिकार कर सके। और अन्त में जब आदमी पैदा भी होता है तो बिल्कुल बित्ते भर का, नन्हा सा, सब जानवरो से कमजोर! धीरे-धीरे हजारो बरसो में वह ज्यादा मजबूत और होशियार हो जाता है, यहाँ तक कि वह दुनिया के जानवरो का मालिक हो जाता है। और दूसरे जानवर उसके तावेदार और गुलाम हो जाते हैं और उसके इशारो पर चलने लगते हैं।

तब सभ्यता के फैलने का जमाना आता है। हम इसकी शुरुआत देख चुके हैं। अब हम यह देखने की कोशिश करेंगे कि आगे चलकर उसकी क्या हालत हुई। अब हमें लाखो बरसो का जिक्र करना नहीं है। पिछले खतो में हम तीन-चार हजार साल पहले के जमाने तक पहुँच गए थे। लेकिन इधर के तीन-चार हजार बरसो का हाल हमें उधर के लाखो बरसो से ज्यादा मालूम है। आदमी के इतिहास की तरक्की दरअसल इन्ही तीन हजार बरसो में हुई है। जब तुम बड़ी हो जाओगी तो तुम इस इतिहास के बारे में बहुत कुछ पढ़ोगी। मैं इसके बारे में कुछ थोड़ा सा लिखूँगा जिससे तुम्हें कुछ खयाल हो जाय कि इस छोटी सी दुनिया में आदमी पर क्या-क्या गुजरी।

: २७ :

पत्थर हो जानेवाली मछलियों की तसवीरें

आज मैं तुम्हें कुछ तसवीरों के पोस्टकार्ड भेज रहा हूँ। मुझे उम्मीद है कि तुम इन्हें मेरे लंबे और रूखे सूखे खतों से ज्यादा पसन्द करोगी। ये तसवीरें उन पुरानी मछलियों की हड्डियों की हैं जो लन्दन के साउथ केन्सिंग्टन के अजायबघर में रक्खी हुई हैं। तुमने इन हड्डियों को वहां देखा होगा। बहरहाल इन तसवीरों से तुम्हें कुछ खयाल हो जायगा कि पुरानी मछलियों की हड्डियां कैसी होती हैं।

जैसा मैं तुमसे पहिले कह चुका हूँ ये पुराने जानवर और पौधों के अवशेष हैं और दूसरी जगहों में पाए गए हैं। इन्हें अंग्रेजी में 'फॉसिल' कहते हैं। जानवरों के बदन का नर्म हिस्सा तो सड़ गल गया लेकिन सख्त हिस्से और हड्डियां हजारों साल गुजर जाने पर भी बची हुई हैं। उनमें से ज्यादातर तो समुद्र की तह में नर्म कीचड़ से दबी हुई थीं। नर्म मिट्टी एक जमाना गुजर जाने के बाद कड़ी हो गई होगी और समुद्र की तह बाहर निकल कर जमीन हो गई होगी। इसलिए वे हड्डियां हमें अब सूखी जमीन पर मिलती हैं।

इनमें से चार 'फॉसिल' तस्वीरों में उसी तरह दिखाई गई हैं जैसी वे पत्थरों में मिली थीं। वे बहुत साफ नहीं हैं। उनमें से दो नकली नमूने हैं। यानी वे इस तरह बनाई गई हैं कि असली हड्डियों से मिल जायं।

इन तसवीरो में से एक मछली के सिर्फ दांत की हड्डी की है।

मेरे ख़याल में नम्बर जी० २४ और जी० २७ सबसे ज्यादा दिलचस्प है। इनसे साफ-साफ जाहिर होता है कि चट्टान पर मछलियो का निशान कैसे पड़ गया। इन्हीं निशानो से लाखों साल गुजर जाने पर भी हम कह सकते है कि वे किसी जमाने में मौजूद थीं।

इन तसवीरो के कार्डों को, उस कागज के साथ जिस पर उनका ब्योरा लिखा हुआ है लिफाफे में रख दो जिसमें वह औरो में मिल न जायँ।

: २८ :

'फॉसिल' और पुराने खंडहर

मैंने अरसे से तुम्हें कोई खत नहीं लिखा। पिछले दो खतों में हमने उन पुराने जमाने पर एक नजर डाली थी जिसका हम अपने खतों में चर्चा कर रहे हैं। मैंने तुम्हें पुरानी मछलियों की हड्डियों के फोटोग्राफ भेजे थे जिनसे तुम्हें अंदाज हो जाय कि ये 'फॉसिल' कैसे होते हैं। मसूरी में जब तुमसे मेरी मुलाकात हुई थी तो मैंने तुम्हें दूसरे किस्म के 'फॉसिल' की तसवीरें दिखाई थीं।

पुराने रेंगनेवाले जानवरों की हड्डियों को खास तौर से याद रखना। सांप, छिपकिली, मगर और कछुवे वगैरा जो आज भी मौजूद हैं रेंगने वाले जानवर हैं। पुराने जमाने के रेंगनेवाले जानवर भी इन्हीं जाति के थे पर कद में बहुत बड़े थे और उनकी शक्ल में भी फर्क था। तुम्हें उन देव के से जन्तुओं की याद होगी जिन्हें हमने साउथ केन्सिंग्टन के अजायबघर में देखा था। उनमें से एक [illegible] फीट लम्बा था। एक [illegible] भी था जो आदमी से बड़ा था और [illegible]। उस जमाने में [illegible] [illegible] था।

[illegible]

रेंगनेवाले जानवरो के पैदा होने के बहुत दिन बाद वे जानवर पैदा हुए जो अपने बच्चो को दूध पिलाते है। ज्यादातर जानवर जिन्हें हम देखते है, और हम लोग भी, इसी जाति में है। पुराने जमाने के दूध पिलाने वाले जानवर हमारे आजकल के बाज जानवरो से बहुत मिलते थे। उनका कद अक्सर बहुत बडा होता था लेकिन रेंगनेवाले जानवरो के बराबर नहीं। बडे-बडे दांतो वाले हाथी और बडे डील-डौल के भालू भी होते थे।

तुमने आदमी की हड्डियाँ भी देखी थीं। इन हड्डियो और खोपड़ियों के देखने में भला क्या मजा आता। इससे ज्यादा दिलचस्प वे चकमक के औजार थे जिन्हें शुरू जमाने के लोग काम में लाते थे।

मैंने तुम्हें मिस्र के मकबरो और ममियो की तसवीरें भी दिखाई थीं। तुम्हें याद होगा इनमें से बाज बहुत खूबसूरत थीं। लकडी की ताबूतो पर लोगो की बडी-बडी कहानियाँ लिखी हुई थीं। थीब्स के मिस्री मकबरो की दीवारो की तसवीरें बहुत ही खूबसूरत थीं।

तुमने मिस्र के थीब्स नामी शहर में महलो और मन्दिरो के खंडहरो की तसवीरें देखी थीं। कितनी बडी-बडी इमारतें और कितने भारी-भारी खम्भे थे। थीब्स के पास ही मेमन की बहुत बडी मूर्ति है। ऊपरी मिस्र में कार्नक के पुराने मन्दिरो और इमारतो की तसवीरें भी थीं। इन खंड-हरो से भी तुम्हें कुछ अन्दाजा हो सकता है कि मिस्र के पुराने आदमी मेमारी के काम में कितने होशियार थे। अगर उन्हें इंजीनियरी का अच्छा ज्ञान न होता तो वे ये मन्दिर और महल कभी न बना सकते।

हमने सरसरी तौर पर पीछे लिखी हुई बातो पर एक नजर डाल ली। इसके बाद के खत में हम और आगे चलेंगे।

: २९ :

आर्यों का हिन्दुस्तान में आना

अब तक हमने बहुत ही पुराने जमाने का हाल लिखा है। अब हम यह देखना चाहते हैं कि आदमी ने कैसे तरक्की की और क्या-क्या काम किए। उन पुराने जमाने को इतिहास के पहिले का जमाना कहते हैं। क्योंकि उस जमाने का हमारे पास कोई सच्चा इतिहास नहीं है। हमें बहुत कुछ अंदाज से काम लेना पड़ता है। अब हम इतिहास के शुरू में पहुँच गए हैं।

पहिले हम यह देखेंगे कि हिन्दुस्तान में कौन-कौन सी बातें हुईं। हम पहिले ही देख चुके हैं कि बहुत पुराने जमाने में मिस्र की तरह हिन्दुस्तान में भी सभ्यता फैली हुई थी। रोजगार होता था और यहाँ के जहाज हिन्दुस्तानी चीजों को मिस्र, मेसोपोटेमिया और दूसरे देशों को ले जाते थे। उस जमाने में हिन्दुस्तान के रहनेवाले द्रविड़ कहलाते थे। ये वही लोग हैं जिनकी संतान आजकल दखिनी हिन्दुस्तान में मदरास के आसपास रहती है।

उन द्रविड़ों पर आर्यों ने उत्तर से आकर हमला किया, उस जमाने में मध्य एशिया में बेशुमार आर्य रहते होंगे। मगर वहाँ सब का गुजर न हो सकता था इसलिए वे दूसरे मुल्कों में फैल गए। बहुत से ईरान चले गए और बहुत से यूनान तक और उससे भी बहुत पश्चिम तक निकल गए। हिन्दुस्तान में भी उनके दल के दल कश्मीर के पहाड़ों को पार करके आए।

आर्य एक मजबूत लडने वाली जाति थी और उसने द्रविडो को भगा दिया। आर्यों के रेले पर रेले उत्तर-पश्चिम से हिन्दुस्तान में आए होगे। पहिले द्रविडो ने उन्हें रोका लेकिन जब उनकी तादाद बढती ही गई तो वे द्रविडो के रोके न रुक सके। बहुत दिनो तक आर्य लोग उत्तर में सिर्फ अफगानिस्तान और पजाब में रहे। तब वे और आगे बढे और उस हिस्से में आए जो अब सयुक्त प्रात कहलाता है। जहाँ हम रहते है। वे इसी तरह बढ़ते-बढते मध्य भारत के विन्ध्य पहाड तक चले गए। उस जमाने में इन पहाडो को पार करना मुश्किल था क्योकि वहाँ घने जगल थे। इसलिए एक मुद्दत तक आर्य लोग विध्य पहाड के उत्तर तक ही रहे। बहुतो ने तो इन पहाडियों को पार कर लिया और दक्षिण में चले गए। लेकिन उनके झुंड के झुंड न जा सके इसलिए दक्षिण द्रविडो का ही देश बना रहा।

आर्यों के हिन्दुस्तान में आने का हाल बहुत दिलचस्प है। पुरानी सस्कृत किताबो में तुम्हें उनका बहुत-सा हाल मिलेगा। उनमें से बाज किताबें जैसे वेद उसी जमाने में लिखी गई होगी। ऋग्वेद सबसे पुराना वेद है और उससे तुम्हें कुछ अदाजा हो सकता है कि उस वक्त आर्य लोग हिन्दुस्तान के किस हिस्से में आबाद थे। दूसरे वेदो से और पुराणो और दूसरी सस्कृत की पुरानी किताबो से हमें मालूम होता है कि आर्य फैलते चले जाते थे। शायद इन पुरानी किताबो के बारे में तुम्हारी जानकारी बहुत कम है। जब तुम बडी होगी तो तुम्हें और बातें मालूम होगी। लेकिन अब भी तुम्हें बहुत सी कथायें मालूम है जो पुराणो से ली गई है। इसके बहुत दिनो बाद रामायण लिखी गई और उसके बाद महाभारत।

इन किताबो से हमें मालूम होता है कि जब आर्य लोग सिर्फ पजाब और अफगानिस्तान में रहते थे, तो वे इस हिस्से को ब्रह्मावर्त कहते थे। अफगानिस्तान को उस समय गान्धार कहते थे। तुम्हें महाभारत में गाधारी का नाम याद है। उसका यह नाम इसलिए पडा कि वह गाधार या अफ-

गानिस्तान की रहनेवाली थी। अफगानिस्तान अब हिन्दुस्तान से अलग है लेकिन उन जमाने में दोनों एक थे।

जब आर्य लोग और नीचे गंगा और जमुना के मैदानों में, आए तो उन्होंने उत्तरी हिन्दुस्तान का नाम आर्यावर्त रक्खा।

पुराने जमाने की दूसरी जातियों की तरह वे भी नदियों के किनारे के ही शहरों में आबाद हुए। काशी या बनारस, प्रयाग और बहुत से दूसरे शहर नदियों के ही किनारे हैं।

: ३० :

हिन्दुस्तान के आर्य कैसे थे

आर्यों को हिन्दुस्तान आए पांच-छ हजार वर्ष या इससे भी ज्यादा हुए होंगे। सब के सब तो एक साथ आए नही होंगे, उनकी फौजो पर फौजें, जाति पर जाति और कुटुम्ब पर कुटुम्ब सैकडो बरस तक आते रहे होंगे। सोचो कि वे किस तरह लबे काफिलो में सफर करते हुए, गृहस्थी की सब चीजें गाडियो और जानवरो पर लादे हुए आए होंगे। वह आजकल के यात्रियो की तरह नही आए। वे फिर लौट कर जाने के लिए नहीं आए थे। वे यहां रहने के लिए या लडने और मर जाने के लिए आए थे। उनमें से ज्यादातर तो उत्तर-पश्चिम की पहाडियो को पार करके आए, लेकिन शायद कुछ लोग समुद्र से ईरान की खाडी होते हुए आए और अपने छोटे-छोटे जहाजो में सिंध नदी तक चले गए।

ये आर्य कैसे थे? हमें उनके बारे में उनकी लिखी हुई किताबो से बहुत सी बातें मालूम होती है। उनमें से कुछ किताबें, जैसे वेद, शायद दुनिया की सबसे पुरानी किताबो में है। ऐसा मालूम होता है कि शुरू में वे लिखी नहीं गई थी। उन्हें लोग जबानी याद करके दूसरो को सुनाते थे। वे ऐसी सुन्दर संस्कृत में लिखी हुई हैं कि उनके गाने में मजा आता है। जिस आदमी का गला अच्छा हो और वह सस्कृत भी जानता हो उसके मुंह से वेदो का पाठ सुनने में अब भी आनन्द आता है। हिन्दू वेदो को बहुत

पवित्र समझते हैं? लेकिन "वेद" शब्द का मतलब क्या है? इसका मतलब है "ज्ञान"। और वेदों में वह सब ज्ञान जमा कर दिया गया है जो उस जमाने के ऋषियों और मुनियों ने हासिल किया था। उस जमाने में रेल गाड़ियां और तार और सिनेमा न थे। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उस जमाने के आदमी मूर्ख थे। कुछ लोगों का तो यह खयाल है कि पुराने जमाने में लोग जितने अक्लमंद होते थे, उतने अब नहीं होते। लेकिन चाहे वे ज्यादा अक्लमंद रहे हों या न रहे हों उन्होंने बड़े मार्के की किताबें लिखीं जो आज भी बड़े आदर से देखी जाती हैं। इससे मालूम होता है पुराने जमाने के लोग कितने बड़े थे।

मैं पहिले ही कह चुका हूँ कि वेद पहिले लिखे न गए थे। लोग उन्हें याद कर लिया करते थे और इस तरह वे एक पुश्त से दूसरी पुश्त तक पहुँचते गए। उस जमाने में लोगों की याद रखने की ताकत भी बहुत अच्छी रही होगी। हममें से अब कितने आदमी ऐसे हैं जो पूरी किताबें याद कर सकते हैं?

जिस जमाने में वेद लिखे गए उसे वेद का जमाना कहते हैं। पहिला वेद ऋग्वेद है। इसमें वे भजन और गीत हैं जो पुराने आर्य गाया करते थे। वे लोग बहुत खुश मिजाज रहे होंगे, रूखे और उदास नहीं। बल्कि जोश और हौसले से भरे हुए। अपनी तरंग में वे अच्छे-अच्छे गीत बनाते थे और अपने देवताओं के सामने गाते थे।

उन्हें अपनी जाति और अपने आप पर बड़ा गरूर था। "आर्य" शब्द के माने हैं "शरीफ आदमी" या 'ऊँचे दरजे का आदमी"। और उन्हें आजाद रहना बहुत पसंद था। वे आजकल की हिन्दुस्तानी संतानों की तरह न थे जिनमें हिम्मत का नाम नहीं और न अपनी आजादी के खो जाने का रंज है। पुराने जमाने के आर्य मौत को गुलामी या बेइज्जती से अच्छा समझते थे।

वे लड़ाई के फ़न में बहुत होशियार थे। और कुछ-कुछ विज्ञान भी जानते थे। मगर खेती-बारी का ज्ञान उन्हें बहुत अच्छा था। खेती की क़द्र करना उनके लिए स्वाभाविक बात थी। और इसलिए जिन चीज़ों से खेती को फ़ायदा होता था उनकी भी वे बहुत क़द्र करते थे। बड़ी-बड़ी नदियों से उन्हें पानी मिलता था इसलिए वे उन्हें प्यार करते थे और उन्हें अपना दोस्त और मुरब्बी समझते थे। गाय और बैल से भी उन्हें अपनी खेती में और रोज़-मर्रा के कामों में बड़ी मदद मिलती थी, क्योंकि गाय दूध देती थी जिसे वे बड़े शौक से पीते थे। इसलिए वे इन जानवरों की बहुत हिफ़ाज़त करते थे और उनकी तारीफ़ के गीत गाते थे। उसके बहुत दिनों बाद लोग यह तो भूल गए कि गाय की इतनी हिफ़ाज़त क्यों की जाती थी और उसकी पूजा करने लगे। भला सोचो तो इस पूजा से किसका क्या फायदा था। आर्यों को अपनी जाति का बड़ा घमंड था और इसलिए वे हिन्दुस्तान की दूसरी जातियों में मिलजुल जाने से डरते थे। इसलिए उन्होंने ऐसे क़ायदे और कानून बनाये कि मिलावट न होने पाए। इसी वजह से आर्यों को दूसरी जातियों में विवाह करना मना था। बहुत दिनों के बाद इसीने आजकल की जातियाँ पैदा करदीं। अब तो यह रिवाज बिलकुल ढोंग हो गया है। कुछ लोग दूसरों के साथ खाने या उन्हें छूने से भी डरते हैं। मगर यह बड़ी अच्छी बात है कि यह रिवाज अब कम होता जा रहा है।

: ३१ :

रामायण और महाभारत

वेदों के ज़माने के बाद काव्यों का ज़माना आया। इसका यह नाम इसलिए पड़ा कि इसी ज़माने में दो महाकाव्य रामायण और महाभारत लिखे गए, जिनका हाल तुमने पढ़ा है। महाकाव्य उस पद्य की बड़ी पुस्तक को कहते हैं जिसमें वीरों की कथा बयान की गई हो।

काव्यों के ज़माने में आर्य लोग उत्तरी हिन्दुस्तान से विंध्य पहाड़ तक फैल गए थे। जैसा मैं तुमसे पहिले कह चुका हूँ इस मुल्क को आर्यावर्त कहते थे। जिस सूबे को आज हम संयुक्त प्रदेश कहते हैं वह उस ज़माने में मध्य देश कहलाता था जिसका मतलब है बीच का मुल्क। बंगाल को बंग कहते थे।

यहां एक बड़े मज़े की बात लिखता हूँ जिसे जान कर तुम खुश होगी। अगर तुम हिन्दुस्तान के नक्शे पर निगाह डालो और हिमालय और विंध्य पर्वत के बीच के हिस्से को देखो, जहां आर्यावर्त रहा होगा तो तुम्हें वह दूज के चांद के आकार का मालूम होगा। इसीलिए आर्यावर्त को इन्दु देश कहते थे। इन्दु चांद को कहते हैं।

आर्यों को दूज के चांद से बहुत प्रेम था। वे इस शक्ल की सभी चीज़ों को पवित्र समझते थे। उनके कई शहर इसी शक्ल के थे जैसे बनारस। मालूम नहीं तुमने ख्याल किया है या नहीं कि इलाहाबाद में भी गंगा भी दूज के चांद की सी हो गई है।

यह तो तुम जानती ही हो कि रामायण में राम और सीता की कथा, और लका के राजा रावण के साथ उनकी लड़ाई का हाल बयान किया गया है। पहले इस कथा को वाल्मीकि ने सस्कृत में लिखा था। बाद को वही कथा बहुत सी दूसरी भाषाओ में लिखी गई। इनमें तुलसीदास का हिन्दी में लिखा हुआ रामचरितमानस सबसे मशहूर है।

रामायण पढ़ने से मालूम होता है कि दक्खिनी हिन्दुस्तान में बदरो ने रामचन्द्र की मदद की थी और हनुमान उनका बहादुर सर्दार था। मुमकिन है रामायण की कथा आर्यों और दक्खिन के आदमियो की लडाई की कथा हो, जिनके राजा का नाम रावण रहा हो। रामायण में बहुत सी सुन्दर कथायें है; लेकिन यहाँ मै उनका जिक्र न करूँगा, तुमको खुद उन कथाओ को पढना चाहिए।

महाभारत इसके बहुत दिनो बाद लिखा गया। यह रामायण से बहुत बडा ग्रंथ है। यह आर्यों और दक्खिन के द्रविड़ो की लडाई की कथा नहीं, बल्कि आर्यों के आपस की लडाई की कथा है। लेकिन इस लड़ाई को छोड़ दो, तो भी यह बडे ऊँचे दरजे की किताब है जिसके गहरे विचारो और सुन्दर कथाओ को पढ़कर आदमी दग रह जाता है। सबसे बढ कर हम सब को इसलिए इससे प्रेम है कि इसमें वह अमूल्य ग्रथ रत्न है जिसे भगवद्गीता कहते है।

ये किताबें कई हजार बरस पहले लिखी गई थीं। जिन लोगो ने ऐसी-ऐसी किताबें लिखीं वे जरूर बहुत बड़े आदमी थे। इतने दिन गुजर जाने पर भी ये पुस्तकें अब तक जिंदा है, लड़के उन्हें पढते है और सयाने उनसे उपदेश लेते है।